जलती झाड़ी

निर्मल वर्मा



राजकमल प्रकाशन

दिल्ली ६ पटना ६

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली-६
मुद्रक इण्डिया प्रिंटस, एस्प्लेनेड रोड, दिल्ली ६
प्रथम सस्करण १६६५, द्वितीय सस्करण १६६७,
तृतीय सस्करण १६७१
आवरण रामकुमार

अनुक्रम

ज । ल । ती । झा । डी

लवर्स

एल्फ्म के सामने कारीडार म अंग्रेजी अमरीकी पत्रिकाओं की दूकान है। सीढियों के नीचे जो बित्ते भर की जगह खाली रहती है वही पर आमने-सामने दो बेंचें बिछी है। इन बेंचो पर सेकन्ड हैंड किताबें, पाकट-बुक, उपन्यास और क्रिसमस कार्ड पडे है।

दिसम्बर पुराने साल के चन्द आखिरी दिन।

नीला आकाश कँपकँपाती, करारी हवा। कत्थई रग का सूट पहने एक अधेड किन्तु भारी डील डौल के व्यक्ति आते हैं। दुकान के सामने खडे होकर ऊबी निगाहो से इधर उधर देखते हैं। उन्होने पत्रिकाओं के ढेर के नीचे से एक जर्द, पुरानी फटी मैगजीन उठाई है। मगजीन के कवर पर लेटी एक अर्द्ध नग्न गोरे युवती का चित्र है। वह यह चित्र दूकान पर बैठे लडके को दिखाते है और आँख मारकर हँसते है। लडके को उस नगी स्त्री मे कोई दिलचस्पी नही है, किन्तु ग्राहक ग्राहक है और उसे खुश करने के लिए वह भी मुस्कराता है।

कत्थई सूट वाले सज्जन मेरी ओर देखते हैं। सोचते हैं, शायद मैं भी हँसूगा। किन्तु इस दौरान मे लडका सीटी बजाने लगता है, धीरे-

धीरे। लगता है सीटी की आवाज उसके होंठो स नही, उसकी छाती के भीतर से आ रही ह। म दूसरी ओर दखन लगता हूँ।

मैं पिछली रात नही सोया और सुबह भी जब अक्सर मुझे नीद आ जाती है मुझे नीद नही आई। मुझे यहा आना था और मैं रात भर यही सोचता रहा कि मैं यहा आऊँगा कारीडार म खडा रहूँगा। मैं उस सडक की ओर देख रहा हूँ जहा स उसे आना है जहा से वह हमेशा आती है। उस सडक के दोनो ओर लैम्प पोस्टो पर लाल फैस्टून लगे है बासो पर झण्डे लगाये गए हैं। आये दिन विदेशी नेता इस सडक से गुजरते हैं।

जब हवा चलती है फैस्टून गुब्बारे की तरह फूल जाते हैं आकाश झण्डो के बीच सिमट आता है नीले लिफाफे सा। मुझे बहुत सी चीजें अच्छी लगती है। जब रात को मुझे नीद नही आती तो मैं अक्सर एक एक करके इन चीजो को गिनता हूँ, जो मुझे अच्छी लगती है, जैसे हवा मे रंग बिरंगे झण्डो का फरफराना, जैसे चुपचाप प्रतीक्षा करना

अब ये दोनो बातें हैं। मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ। उसे देर नही हुई है। मैं खुद जानबूझकर समय से पहले आ गया हूँ। उसे ठीक समय पर आना अच्छा लगता है न कुछ पहले न कुछ बाद मे, इसीलिए मैं अक्सर ठीक समय से पहले आ जाता हूँ। मुझे प्रतीक्षा करना, देर तक प्रतीक्षा करते रहना अच्छा लगता है।

धीरे धीरे समय पास सरक रहा है। एक ही जगह पर खडे रहना, एक ही दिशा म ताकते रहना, यह शायद ठीक नही है। लोगो का कौतूहल जाग उठता है। मैं कारीडोर मे टहलता हुआ एक बार फिर किताबो की दूकान के सामने खडा हो जाता हूँ। कत्थई रंग के सूटवाले सज्जन जा चुके है। इस बार दूकान पर कोई गाहक नही है। लडका एक बार मेरी ओर ध्यान से देखता है और फिर मैली झाडन स पत्रिकाओ पर जमी धूल पोछने लगता है।

कवर पर धूल का एक टुकडा सा सिमटा है। बीच मे लेटी युवती

की नगी जाँघो पर धूल के कण उडते हैं। लगता है, वह सो रही है।

फुटपाथ पर पत्तो का शोर है। यह शोर मैंने पिछली रात को भी सुना था। पिछली रात हमारे शहर मे तेज हवा चली थी। आज सुबह जब मैं घर की सीढिया से नीचे उतरा था तो मैंने इन पत्तो को देखा था। कल रात ये पत्ते फुटपाथ से उडकर सीढियो पर आ ठहरे होगे। मुझे यह सोचना अच्छा लगता है कि हम दोना एक ही शहर म रहते हैं, एक ही शहर के पत्ते अलग अलग घरो की सीढिया पर बिखर जाते हैं और जब हवा चलती है, तो उनका शोर उसके और मेरे घर के दरवाजो को एक सग खटखटाता है।

यह दिल्ली है और दिसम्बर के दिन है और साल के आखिरी पत्ते कारीडोर मे उड रहे हैं। मैं कनॉट प्लेस के एक कारीडोर मे खडा हूँ, खडा हू और प्रतीक्षा कर रहा हूँ। वह आती होगी।

मैं जानता था वह दिन आएगा, जब मैं 'एल्प्स' के सामने खडा होकर प्रतीक्षा करूँगा। कल शाम उसका टेलीफोन आया था। कहा था कि वह आज सुबह 'एल्प्स' के सामने मिलेगी। उसने कुछ और नही कहा था उस पत्र का कोई जिक्र नही किया था जिसके लिए वह आज यहा आ रही है। मैं जानता था कि मेरे पत्र का उत्तर वह नही भेजेगी, वह लिख नही सकती। मै लिख नही सकती—एक दिन उसने कहा था।

उस दिन हम दोना हुमायूँ के मकबरे गये थे। वहा वह नगे पाव घास पर चली थी। मुझे नगे पाव घास पर चलना अच्छा लगता है—उसने कहा था। मैंने उसकी चप्पलें हाथ मे पकड रखी थी। उसने मना किया था। 'इट इज नाट डन', उसने अग्रेजी मे कहा था। यह उसका प्रिय वाक्य है। जब कभी मैं उसे धीरे से अपने पास खीचने लगता हू तो वह अपने को बहुत हल्के से अलग कर देती है और कहती है—इट इज नाट डन। मैंने उसकी चप्पलो को अपने रूमाल म बाध लिया था। रूमाल का एक सिरा उसने पकडा था दूसरा मैंने। हम उस रूमाल को हिला रहे थे और चप्पलें बीच हवा मे ऊपर नीचे झूलती थी। मकबरे के पीछे पुराना,

टूटा फूटा टरस था, उसक आगे रेल की लाइन थी, बहुत दूर जमुना थी, जो बहुत पास दीखती थी ।

उसके नगे साँवले पैरो पर घास के भूर तिनके और बजरी के दाने चिपक गए थ । मेरी ऐनक पर धूल जमा हो गई थी, लकिन मैं रूमाल स उसको नही पोछ सकता था क्योंकि रूमाल म चप्पलें बँधी थी और उसके पाँव अभी तक नगे थे । तब मैने उसकी उनाबी साडी के पल्ल से अपनी ऐनक के शीशे साफ किये थे । वह नीचे झुक आई थी और उसने धीरे स पूछा था—तुम यहाँ कभी पहले आये थे ?

—हा, अपने दोस्तो के सग ।

—क्या किया था ?—उसने मेरी ओर झपकती आँखों से देखा ।

—दिन भर फ्लश खेली थी—मैंने कहा ।

—और ? और क्या किया था ?—उसके स्वर मे आग्रह था ।

—शाम का बियर पी थी, वे गर्मी के दिन थे ।

—तुम पीते हो ?

—हा—मैंने कहा—पीता तो हूँ ।

—किसी ने देखा नही ?

—नही, अँधेरा होने पर पी थी और जाने से पहले बोतलें नीचे फक दी थीं ।

—नीचे कहा ?

—टरस के नीचे ।

टरेस के नीचे रेलवे लाइन है । जमुना है, जो बहुत दूर है और बीच म पुराने किले के खण्डहर हैं । बहुत शुरू का मौन है और सदियो का धूप है, जो किले के भग्न झरोखों पर ठगी सी ठिठकी रह गई है ।

वह शुरू दिसम्बर की शाम थी और हम हुमायू के मकबरे के पीछे छोटे टैरेस पर बैठे थे । बाड़ और पुराने किले के टूटे पत्थर थे, धूप म सोते-से । सामने ऊबड-खाबड मैदान था जिसे बाढ के दिनो म जमुना भिगो गई थी, और जहा चूने सी सफेदी बिछन आई था । जब वापस

आने लगे तो वह सीढियो पर उतरती हुई सहसा ठिठक गई।

—तुमने देखा ?—उसकी आख कही पर टिकी थी।

उधर, हवा मे उसकी निगाहो पर मेरी आखे सिमट आई थी।

उसने हाथ से दूर एक पक्षी की ओर सकेत किया। वह मकबरे की एक मीनार पर बैठा था। वह चुपचाप निरीह आखो से हमे देख रहा था।

—यह नीलकण्ठ है। तुमने कभी देखा है ?—उसने बहुत धीरे से कहा—नीलकण्ठ को देखना बडा शुभ माना जाता है।

क्या हम दोनों के लिए भी ?—मैं हँसने लगा। मेरी हसी से शायद वह डर गया और अपने पख फैलाकर गुम्बद के परे उड गया था।

क्या हम दोनो के लिए भी, यह मैंने कहा नहीं सिर्फ सोचा था। कुछ शब्द हैं, जो मैंने आज तक नही कहे। पुराने सिक्कों की तरह वे जेब मे पडे रहते है। न उन्हे फेक सकता हूँ, न भुला पाता हूँ।

जब वह आई, तो मैं उसके बारे मे नही सोच रहा था। मैं क्रिकेट के बारे मे, सिनेमा के पोस्टरो के बारे मे और कुछ गन्दे अश्लील शब्दो के बारे मे सोच रहा था, जो कुछ देर पहले मैंने पब्लिक लेवेट्री की दीवार पर पढे थे। ऐसा अक्सर होता है। प्रतीक्षा करते हुए मैं उस व्यक्ति को बिलकुल भूल जाता हूँ जिसकी मैं प्रतीक्षा कर रहा हू। सामने जो पडो की कतार है वह सिंधिया हाउस की क्रासिंग तक जाती है, और वहा ट्रैफिक लाइट लाल से गुलाबी होती है और गुलाबी से हरी। जब वह आई, तो मुझे कुछ भी पता नही चला था। मैं ट्रैफिक लाइट को देख रहा था और वह मेरे पास चली आई थी—बिलकुल पास बिलकुल सामने। उसने काली शाल ओढ रखी है और उसके बाल सूखे है। उसके होठो पर हल्की, बहुत ही हल्की लिपस्टिक है जैसी वह अक्सर लगाती है।

– तुम क्या बहुत देर से खडे हो ?—उसने पूछा।

—मैं तुमसे पहले आ गया था।

—कब से इन्तजार करते रहे हो ?

—पिछले एक हफ्ते से—मैंने कहा।

वह हँस पड़ी—मेरा मतलब यह नहीं था। तुम यहाँ कब आये थे?

मैं नहीं चाहता कि वह जाने कि मैं रात भर जागता रहा हूँ। मैं सिर्फ यह जानना चाहता हूँ कि उसने क्या निर्णय किया है। शायद मैं यह भी नहीं जानना चाहता। मैं सिर्फ उसे चाहता हूँ और यह मैं जानता हूँ।

हम दोनों एल्प्स की तरफ बढ़ जाते हैं। दरवाज़े पर खड़ा लड़का हमें सलाम करता है। वह दरवाज़ा खोलकर भीतर चली जाती है। मैं क्षण भर के लिए बाहर ठिठक जाता हूं। लड़का मुझे देखकर मुस्कराता है। वह हम दोनों को पहचानने लगा है। उसने हम दोनों को कितनी बार यहां एक संग आते देखा है।

एल्प्स' के भीतर अँधेरा है या शायद अँधेरा नहीं है हम बाहर से आये हैं, इसीलिए सब कुछ धुँधला सा लगता है। बाहर दिसम्बर की मुलायम धूप है। जब कभी दरवाज़ा खुलता है, धूप का एक सांवला-सा धब्बा खरगोश की तरह भागता हुआ घुस आता है, और जब तक दरवाज़ा दोबारा बन्द नहीं होता वह पियानो के नीचे दुबका सा बैठा रहता है।

—आज अखबार में देखा?—उसने पूछा।

—न—मैंने सिर हिला दिया।

—शिमले में बर्फ गिरी है, तभी कल रात इतनी सर्दी थी—उसने कहा—मैं सारी खिड़कियां बन्द करके सोई थी।

कल रात मैं जागता रहा था मैंने सोचा और बाहर सूखे पत्तों का शोर होता रहा था। दिसम्बर के दिनों में बहुत से पत्ते गिरते हैं, रात भर गिरते हैं।

—तुमने बर्फ देखी है निन्दी?—उसने पूछा।

—हां, क्यों?

—सच?—आश्चर्य से उसकी आंखें फैल गईं।

—तब मैं बहुत छोटा था। अब तो कुछ भी याद नहीं रहा।—

मैंने कहा।

—तुम अब भी छोटे लगते हो।—उसने हँसकर कहा—जब तुम फुल स्लीव का स्वेटर पहनते हो।—उसने अपना छोटा सा पस पास की ख़ाली कुर्सी पर रख दिया और अपने दोनो हाथ शाल से बाहर निकाल लिए। वह मेरे स्वेटर को देख रही है, मैं उसके हाथों को। उसके दोनो हाथ मेज पर टिके है लगता है जैसे वे उससे अलग हो। वे बहुत नवस है। आधे खुले हुए, आधे भिंचे हुए। लगता है, वे किसी अदृश्य चीज को पकडे हुए है।

हम कोने मे बैठे है, जहा वेटर ने हमे नही देखा है। सुबह इतनी जल्दी बहुत कम लोग यहा आते है। हमारे आस पास की मेज कुर्सिया खाली पडी हैं। डासिंग फ्लोर के दोनो ओर लाल शेड से ढँके लम्प जल हैं। दिन के समय इनसे अधिक रोशनी नही आती, जो रोशनी आती है वह सिर्फ इतनी ही कि आस पास का अँधेरा दिख सके। कुछ फासले पर डासिंग-फ्लोर की दाइ ओर जाज और उसकी फियासे ने मुझे देख लिया है, और मुस्कराते हुए हवा मे हाथ हिलाया है। जाज 'एल्स' का पुराना ड्रमर है। साढे दस बजे आरकेस्ट्रा का प्रोग्राम आरम्भ होगा तब तक वह खाली है। वह जानता है, मैं आज इतनी सुबह क्यो आया हूँ। वह मुझसे बडा है और मेरी सब बातें खुली छिपी सब बातें जानता है। उसने मुझे देखा और मुस्कराते हुए अपनी फियासे के काना म कुछ धीरे से फुसफुसाने लगा। वह अपना सिर मोडकर गहरी उत्सुक आखो स मुझे मुझे और उसे देख रही है। उसकी आखो मे अजीब सा कौतूहल है। यदि जाज उसकी बाह को खीचकर झिझोड न देता तो शायद वह देर तक हम लोगो को देखती रहती।

मेरे एक हाथ में सिगरेट है जिसे मैंने अभी तक नही जलाया। दूसरा हाथ टागो के नीचे दबा है। मै आगे झुककर उसे दबाता हूँ। मुझे लगता है जब तक वह मेरे बोझ के नीचे बिलकुल नही भिच जाएगा तब तक ऐसे ही कापता रहगा।

वेटर आया। मैंने उसे कोना काफी लाने के लिए कह दिया। वह चुप बैठी रही, कुर्सी पर रख अपने पर्स को देखती रही।

—मैंने सोचा था, तुम फोन करोगी—मैंने कहा।

उसने मेरी ओर देखा, उसकी आखो म हल्का सा विस्मय था—तुम काफी अजीब बातें सोचते हो —उसने कहा।

शायद यह गलत था—मैंने कहा—शायद तुम नाराज हो।

—पता नही शायद हूँ—उसने कहा।

मैं हँसने लगा।

—क्यो ? तुम हँसते क्या हो ?

—कुछ नही मुझे कुछ याद आ गया।

—क्या याद आ गया ?—उसने पूछा।

—तुम्हारी बात, इट इज नाट डन !

उसका निचला होठ धीरे से कॉपा था, तितली सा, जो उडने को होती है, और फिर कुछ सोचकर बैठी रहती है।

—तुम उस दिन ठीक समय पर घर पहुच गई थी ?

—किस दिन ?

—जब हम हुमायू के मकबरे से लौटे थे।

—न, बस नही मिली। बहुत देर बाद स्कूटर लेना पडा उस रात बडा अजीब सा लगा।

—कैसा अजीब सा ?—मैंने पूछा।

—देर तक नीद नही आई—उसने कहा—देर तक मै उस नील कण्ठ के बारे म सोचती रही जो हमने उस दिन देखा था मकबरे के गुम्बद पर।

नीलकण्ठ ! मुझे वह शाम याद आती है। उस शाम हम पवेलियन के पीछे टरेस पर बैठे थे। मेरे रूमाल म उसकी चप्पलें बँधी थी और उसके पाँव नगे थ। घास पर चलने से वे गीले हो गए थे और उन पर बजरी के दो चार लाल दाने चिपके रह गए थे। अब वह शाम बहुत दूर

लगती है। उस शाम एक धधली सी आकाक्षा आई थी और मैं डर गया था। लगता है आज वह डर हम दोनो का है, गेंद की तरह कभी उसके पास जाता है, कभी मेरे पास। वह अपनी घबराहट को दबाने का प्रयत्न कर रही है, जिसे मैं नही देख रहा। मेज के नीचे कुर्सी पर भिचा मेरा हाथ काप रहा है, जिसे वह नही देख सकती। हम केवल एक दूसरे की ओर देख सकते हैं और यह जानते है कि ये मरते वर्ष के कुछ आखिरी दिन है और बाहर दिसम्बर के उन पीले पत्तो का शोर है, जो दिल्ली की तमाम सडको पर धीरे धीरे भर रहे है।

मुझे लगता है, जैसे मैं वह सब कुछ कह दू जो मैं पिछले हफ्ते के दौरान मे, सडक पर चलते हुए बस की प्रतीक्षा करते हुए रात को सोने से पहले और सोते हुए पल छिन सोचता रहा हू, अपने से कहता रहा हूँ। मैं भूला नही हू। कुछ चीज हैं जो हमेशा साथ रहती है उन्हे याद रखना नही होता। कुछ चीजें हैं, जो खो जाती है, खो जाने मे ही उनका अर्थ है उन्हे भुलाना नही होता।

वेटर आया और कोना-काफी की बोतल से पहले उसके और फिर मेरे प्याले मे कॉफी उँडेल दी। हमारे सामने वाली मेज़ पर एक अग्रेज़ युवती आकर बैठ गई। उसके सग एक छोटा सा लडका है जो उसकी कुर्सी के पीछे खडा है। युवती का चेहरा मीनू के पीछे छिप गया।

—वाट विल यू हैव सनी ?

लडका पजो के बल खडा हुआ, सिर झुकाकर मीनू को देख रहा है कें ऊँ ऊँ, लडके ने जुबान बाहर निकालकर बिल्ली की तरह नाक सिकोड ली।

—ओ, गेट अप! वाट यू सिट डाउन ?

डासिंग फ्लोर के पीछे जो कुर्सियाँ अभी तक खाली पडी थीं वे धीरे धीरे भरने लगी। लगता है बाहर सूरज बादलो मे छिप गया है। सामने खिडकी के शीशो पर रोशनी का हल्का सा आभास है दरवाज़ा खुलता है, तो पहले की तरह धूप का टुकडा भीतर नही

सिर्फ हवा आती है, और मैली-सी धुंध। दरवाजा खुलकर एकदम बंद नहीं होता और हम बाहर देख लेते हैं। बाहर सर्दी का धुंधलका है और दिसम्बर का मेघाच्छन्न आकाश जो कुछ देर पहले बिलकुल नीला था।

जहां हम बैठे हैं वह एक कोना है। जब कभी हम यहाँ आते हैं (और ऐसा अवसर होता है), तो यहीं बैठते हैं। उस कोने में बैठना अच्छा लगता है। वह चम्मच से मेजपोश पर लकीरें खींचती है और मैं अपनी उन कहानियों के बारे में सोचता हूँ जो मैंने नहीं लिखी, जो शायद मैं कभी नहीं लिखूंगा और मुझे उनके बारे में सोचना अच्छा लगता है।

दो दिन बाद क्रिसमस है। 'क्वींस वे' की दूकानों पर इन दिनों भीड़ लगी रहती है। कुछ लोग खरीदारी करने के बाद अक्सर यहाँ आते हैं, उनके हाथों में रंग बिरंगी बास्केट, थैले और लिफाफे हैं। जब वे भीतर आते हैं, वह दरवाज़े की ओर देखने लगती है। उसकी आँखें बहुत उदास हैं। मैं उसकी बाँहों को देख रहा हूँ। प्लास्टिक की चूड़ी और ज्यादा नीचे खिसक आई है। उसका निचला हिस्सा प्याले की काफी में भीग रहा है, भीग रहा है और चमक रहा है।

—निन्दी—उसने धीरे से कहा और रुक गई।

यह मेरे घर का नाम है। एक बार उसके पूछने पर मैंने बताया था। जब कभी हम दोनों अकेले होते हैं जब कभी हम दोनों एक दूसरे के संग होते हुए भी अपने अपने में अकेले हो जाते हैं और उसे लगता है कि उसकी बात से मुझे तकलीफ होगी, तो वह मुझे इसी नाम से बुलाती है। मेरा हाथ मेरे घुटनों के बीच दबा है। लगता है अब वह क्षण आ गया है जिसकी इतनी देर से प्रतीक्षा थी वह आ गया है और हम दोनों के बीच आकर बैठ गया है।

—निन्दी यह गलत है—उसने धीरे से कहा, इतने धीरे से कि मैं हँसने लगा।

—तुम क्या इतनी देर से यही सोच रही थी?—मैंने कहा।

—तुम अब मुझे बुरा समझने लगे ?

मैं हँस देता हूँ। मैं अब बिलकुल शान्त हूँ। टाँगों के नीचे मेरा हाथ नहीं काँप रहा। जब हम यहाँ आये थे, तब सब कुछ धुँधला धुँधला सा दीख रहा था। लगा था, जैसे सपने में मैं सब कुछ देख रहा हूँ। सपना अब भी लगता है उसकी शाल, उसकी सफेद मुलायम बाँह लेकिन अब वे ठोस हैं, वास्तविक हैं। मैं चाहूँ, तो उन्हें छू सकता हूँ और उन्हें छूते हुए मेरा हाथ नहीं काँपेगा।

—नि दी वी कन बि फ्रैंडस आफ्टर ऑल वी ?—उसने अंग्रेजी में कहा। जब वह किसी बात से बहुत जल्दी घबरा जाती है, तो हमेशा अंग्रेजी में बोलती है और मुझे उसकी यह घबराहट अच्छी लगती है। मैं कुछ भी नहीं कहता, क्योंकि कुछ भी कहना कोई मानी नहीं रखता और यह मुझे मालूम है कि जो कुछ मैं कहूँगा, वह नहीं होगा, जो कहना चाहता हूँ वह शब्दों से अलग है इसलिए पन्द्रह बीस वर्ष बाद जब मैं दिसम्बर की इस सुबह को याद करूँगा, तो शब्दों के सहारे नहीं। याद करने पर बहुत सी बेकार, निरर्थक चीजें याद आएँगी, जैसे वह क्रिसमस के दो दिन पहले की सुबह थी हम एल्प्स में बैठे थे और बाहर दिसम्बर के पीले पत्ते हवा में झरते रहे थे

क्योंकि यह कहानी नहीं है ये कुछ ऐसी बातें हैं जिनकी कहानी कभी नहीं बनती। यही कारण है कि मैं बार बार मन ही मन दुहरा रहा हूँ ये वर्ष के अंतिम दिन हैं। बाहर दूकानों पर क्रिसमस और न्यू ईयर कार्ड बिक रहे हैं। यह दिल्ली है हमारा शहर। बरसों से हम दोनों अलग अलग घरों में रहे हैं किन्तु आज की सुबह हम दोनों अपने अपने रास्तों से हटकर इस छोटे से काफे में आ बैठे हैं कुछ देर के लिए। कुछ देर बाद वह अपने घर जाएगी और मैं जाज के कमरे में चला जाऊँगा सारी शाम पीता रहूँगा।

—सच, नि दी आफ्टर वी वि फ्रैंडस ?

उसके स्वर में भीगा सा आग्रह है। मैं मुस्कराता हूँ। मुझे एक

1स्वो भी जम्हाई प्राती है। मैं उस दबाता नही। अब मैं बिना शम महसूस किय उसस कह सकता हूँ कि कल सारी रात मैं जागता रहा था।

—क्या सोच रह हो ?—उसने पूछा।

—बफ के बारे म—मैंन कहा—तुमन कहा था कि शिमल म कल बफ गिरी थी।

—हाँ, मैंन अखबार म पढा था और मैं देर तक तुम्हार बार म सोचती रही थी। रात भर बफ गिरती रही थी और मुझ पता भी नही चला था। इसीलिए कल रात इतनी सर्दी थी। मैं अपन कमर की सारी खिडकियाँ बन्द करके आई थी।—उसन कहा—जब कभी शिमले म बफ गिरती है, तो दिल्ली म हमशा सर्दी बढ जाती है।

कुछ दर पहल मैं 'एल्प्स' के पास खडा था। मैं पहल आ गया था और ट्रैफिक-लाइट को दखता रहा था। मैंन दस तक गिनती गिनी थी। सोचा था, यदि दस तक पहुचते पहुचते बत्ती का रग हरा हो जाएगा, तो वह हाँ कहेगी नही तो न,ही किन्तु अब मैं शान्त हूँ।

—और, निन्दी—उसन कहा—तुमन यदि पत्र म न लिखा होता, तो अच्छा रहता। अब हम वस नही रह सकेंगे, जसे पहल थ

और मैं जागता रहा था, मैंन सोचा।—तुमन नही सुना ? बस रात दर तक दिल्ली की सूनी सडकों पर पतंग भागत रह थ—मैंन कहा।

—मैं खिडकियाँ बन्द करक सो गई थी—उसन कहा—और मुझ सपन म हुमायू का मकबरा दिखाई दिया था। तुम उसके ऊपर थ और वहाँ नीलकठ दूर स उड गया था।

हम दोनो चुप बठ रह।

कुछ दर बाद उसकी पलकें ऊपर उठी।—क्या सोच रह हो ?—मैंन पूछा।

मैं चुपचाप उसकी ओर दखता रहा। बफ के बारे म—मैंन धीर स कहा।

हम उठ खडे होते हैं। आरकेस्ट्रा शुरू होन वाला है और हम दर

गुरू होने से पहले ही बाहर चले जाना चाहता हूँ। दरवाजे के पास आकर मैं ठहर जाता हूँ और आखिरी बार पीछे मुडकर देखता हूँ। मेजपोश पर वे लकीरें अब भी अंकित हैं जो अनजाने में उसने चम्मच से खींच दी थीं। *उन लकीरों के दोनों ओर दो प्याले हैं, जिनसे हमने* अभी काफी पी थी। वे दोनों बिलकुल पास पास पडे हैं और कुछ देर तक वैसे ही पडे रहेंगे, जब तक बैरा उन्हें उठाकर नहीं ले जाएगा। वे दो कुर्सियाँ भी हैं, जिन पर हम इतनी देर से बैठे रहे थे और जो अब खाली हैं। कुछ देर तक वे वैसी ही खाली, प्रतीक्षारत पडी रहेंगी।

जाज की फियान्स ने मुझे देखा है। वह मुझे देखती हुई शरारत भरी दृष्टि से मुस्करा रही है। वह समझती है, हम दोनों लवर हैं। जाज ने शायद उसे बताया होगा। जाज स्टेज पर ड्रम के आगे बैठा है। कुछ ही देर में आरकेस्ट्रा शुरू हो जाएगा। *जाज ने भी मुझे देख लिया है।* वह धीरे से ड्रम स्टिक हवा में घुमाता है। 'गुड लक'—उसने कहा और धीरे से आँख दबा दी।

मैं बाहर चला गया।

बाहर बादल छँट गए हैं। कारीडोर में धूप सिमट आई है। 'एल्म' के बाहर अंग्रेजी पत्रिकाओं की दूकान पर कुछ लोग जमा हो गए हैं। सामने क्वीसन्वे की दूकानों के आगे भीड़ लगी है। क्रिसमस रिबनन मल की तख्तियों पर टँगे रंग बिरंगे रिबन हवा चलने से फरफराने लगते हैं। उनके पीछे दिसम्बर का नीला आकाश फैला है।

मुझे एक लम्बी-सी जम्हाई आती है और आँखों में पानी भर जाता है।

—क्या बात है?—उसने पूछा।

—कुछ नहीं—मैंने कहा।

—मुझे कुछ क्रिसमस कार्ड खरीदने हैं मेरे संग आओगे?—उसने कहा।

—चलो—मैंने कहा—मैं बिलकुल खाली हूँ।

हम दोनो क्वीन्स-वे की ओर चलने लगते है।

—ज़रा ठहरो, मैं अभी आता हूँ।—मैं पीछे मुड गया और तेज़ी से कदम बढ़ाता हुआ अमरीकी पत्रिकाओं की दुकान के सामने आ खड़ा हुआ। पुरानी पत्रिकाओं का ढेर मेरे सामने बेंच पर रखा था। मैं उन्हे उलट फेरकर नीचे से एक मैगजीन उठा लेता हूँ। वही कवर है, जो अभी कुछ देर पहले देखा था। वही बीच का दृश्य है, जिस पर अर्द्ध नग्न युवती धूप में लेटी है।

—क्या दाम है ?—मैंने पूछा।

लड़के ने मुझे देखा, दाम बताया और मुस्कराते हुए सीटी बजाने लगा।

माया दर्पण

छज्जे पर भूरी, जलती रेत की परतें जम गई है। हवा चलन पर अलसाए स धूल-कण धूप म झिलमिल-म नाचते रहते हैं। लडाई के दिनो म जो वरक वनाये गए थ, वे अब उखाडे जा रहे हैं। रेत और मलब के ढूह ऐस खडे हैं मानो कच्ची सडक के माथे पर गोमड निकल आए हो।

खिडकी से सब कुछ दीखता है। दिन और शाम क बीच कितन विचित्र रगो की छायाएँ टीलो पर फिसलती रहती है।

दूर से निरतर सुनाई दता है, पत्थर तोडने की मशीन का शोर, दत्य के घुर्राटो की तरह घुर घुर घुर

दोपहर की नीद के कच्च कगारो पर य आवाजें हल्की लहरो जसी थप थप टकराती हैं। तरन अकवकाकर जाग गई। हाथ माथे पर गया तो लगा पसीने की बूदो पर वाल चिपक गए है बिन्दी की रोली दोना भौहो के बीच फल गई है। उसे लगा मानो वह अब तक जाग रही थी। सचमुच जागन पर पता चला था कि सोत समय भी वह यही बराबर सोच रही थी। दुपहर की नीद जो ठहरी, आधी आँखो म, आधी बाहर।

आँखें धोई बिन्दी पोंछ दी, पम्प के पानी को चुल्लू मे लेकर आँखो म छिडका । गुसलखाने की खुली खिडकी से मैदान का वह हिस्सा दीखता था, जहा बरको को ढहाया जा रहा था । आधी टूटी इमारतें, सूखे भग्न ककालो-सी खडी थीं । सूखी रेत के कण तितीरी धूप मे मोतियों से झिल-मिला उठते थे । तरन को लगा, मानो उसके दातो के भीतर भी रेत चरमरा रही हो ।

—देख तो तरन बाबू उठ गए हो, तो हुक्का उनके कमरे म रख आ—बुआ ने रसोई मे सटी कोठरी से आवाज दी । इतनी उम्र मे भी बुआ को सब कुछ याद रहता है । लगता है जसे उठते बठते सोते जागते उनकी चेतना की डोर बाबू की दिनचर्या से जुडी रहती है । अपनी कोठरी की देहरी पर ऊँघती रहती ह बुआ आस पास के काय कलाप स सवथा निलिप्त । इस पर भी उन्ह बाबू की हर जरूरत का आभास कस हो जाता है तरन के लिए यही सबसे बडा आश्चय है ।

शाम होते ही दीवान साहब अधीर आतुरता से महमाना की प्रतीक्षा करन लगते है । थाडी देर के लिए कुछ दूर छोटी लाइन के स्टेशन पर टहलने निकलते ह तो भी जल्दी वापस लौट आते ह ताकि कोई अचा नक उनकी अनुपस्थिति म घर न आ जाए । आते ही बुआ स पूछते ह कि उनक पीछे कोई आया तो नही था ? बुआ 'ह न' के अलावा कोई उत्तर नही दे पाती । बरसा बाद आज भी उ ह दीवान साहब से विचित्र अनाम-सा भय लगा रहता है । छोटी थीं, तो भी भाई के सामने सिर झुका रहता था, विधवा होने पर दीवान साहब ने कुछ रुपये महीने बाध दिए थे । अब इस उम्र मे मालकिन के न रहने पर आई है, वह भी इसलिए कि इतने बडे घर मे तरन अकेली है । तरन न होती तो क्षण भर के लिए भी उनका इस उजाड अकेले घर मे रहना दूभर हो जाता ।

धूप मिटते ही बरामद म जमघट लग जाता ह । सरकारी सुपर-वाइजर मिस्टर दास से लेकर बडे ठेकेदार महरचन्द तक बारी बारी स शान पर दीवान साहब के बरामदे मे कुछ दर के लिए मुस्तान आ बैठते ह ।

और है भी क्या इस उजाड़ बस्ती मे, जहा दिन की थकान उतारी जा सके ? अहीरा के मिट्टी के झोपडे इक्की दुक्की पान बीडी की दुकानें ढाब और ऊपर टील पर काल भरव का मन्दिर । ले देकर एक दीवान साहब का ही तो घर है जहा दूर शहरा स आये प्रवासी भद्र लोग घडी दो घडी हँस बोलकर जी हल्का कर लेत ह ।

—देख तो, तरन, जरा चिलम तो भर लाना दास बाबू के लिए । —दरवाजे की ओर मुह मोडकर बाबू ने कहा । उनके चेहर की मुस्कान मे अब ऊब का भाव डूबने लगा था । दास बाबू आए ह तो और लोग भी आत होंगे ।

—आज इतनी दर कैस हो गई ? भोपू तो कब का बज चुका ।

दास बाबू का थल थल गेंद मा शरीर आरामकुर्सी म धँस गया । बोले तो नकली पील दान कटकटा गए—नहर पार जमीन देखने गया था । वापस लौटते हुए नया पट्रोल पम्प देखने रुक गया । अब यहाँ पेट्रोल की दिक्कत नही रहेगी, दीवान साहब !

तरन भीतर स हुक्का लेकर आई, तो दास बाबू सिमट गए अपने मे । पचास से ऊपर उनकी उम्र लाघ गई है किन्तु किसी स्त्री के सामन आज भी घबरा से जाते हैं ।

तरन के पाँव पीछे मुडे, तो वह तनिक स्वस्थ हुए । गले को साफ किया, फिर भी जब बोले तो आवाज लँसारती रही —कुछ दिनो के लिए हरिद्वार ऋषिकेश क्या नही घूम आते, दीवान साहब ? न हो, बिटिया का मन ही बहल जाएगा । दिन रात अकेले म क्या ऊब नहा जाती होगी ?

दास बाबू तरन का नाम नही ले पात । वह जरा उम्र म छोटी होती, तो उसके सम्मुख इतना घना सा सकोच न घिर आता, जरा उम्र मे छोटी होती तो नाम सहज-स्वाभाविक हो जाता । किन्तु इन दो सीधी, स्पष्ट सीमाओ के बीच आयु की धुरी समय के जिस दलदल मे फँसी रह गई है उम्र जहाँ न बढती है न घटती है उस क्या कहकर सम्बोधित

करें दास बाबू कभी समझ नहीं पाते ।

बाबू कुछ भी न कहकर चुप बैठे रहे । वह अपने इन मित्रो से हँस-बोल लेते है यह बात और है, कि तु मन मे हमेशा उन्हे अपने से छोटा समझते है । इतनी घनिष्ठता के बावजूद उन्होने अपने और दूसरो के बीच कहीं एक लकीर खीच रखी है, जिसे उल्लघन करने का दुस्साहस कोई भी नहीं कर पाता ।

तरन के पाव, जो दास बाबू की बात पर सहसा देहरी पर ठिठक गए थे फिर आगे बढ गए । दूसरे कमरे म बुआ पुराने कपडे सी रही थी । उनकी आँख बचाकर वह अपने कमरे म चली आई । दरवाजा बन्द करके भी देर तक दरवाजे के आगे खडी रही । बरामदे की आवाजो को नहीं सुनती सुनती है उस निर्भेद्य मौन को जो सारे घर मे छाया है, जिसके भीतर ये आवाजें पराई, अपरिचित, भयावह सी जान पडती है ।

खिडकी से बरामदा दीखता है । जब किसी शाम बाबू के मित्र नहीं आते, तो वह अकेले आखे मूद कुर्सी पर बठे रहते हैं । ऐसे क्षणो मे कितना गहन सा मौन बाबू के इद गिद घिर जाता है ! उसने कई बार सोचा है कि ऐसे मे वह बरामदे मे उनके पास जाकर बैठ जाए, इधर उधर की बात करे । आखिर इस घर म अब वे दो ही तो रह गए है, जो विगत दिनो की स्मृतियो मे एक दूसरे के साझीदार हो सकें । किन्तु इतने पर भी कभी पाव नहीं उठते, सिफ खिडकी से ही वह चुपचाप उन्हे देखती रही है ।

हवा चलती है, दुपहर शाम साय सायें । मदानो के टीलो टूहो मे मिट्टी, रेत के गरम रेले बार-बार दरवाजे खटखटाते ह और रास्ता न पाकर आँगन मे बिखर जाते ह ।

कभी-कभी सडक को समतल बनाने के लिए बारूद स चट्टानो को फोडा जाता । विस्फोट होते ही कँपकँपाता सा धमाका होता, मार पार धरती हिल जाती, दूर-दूर तक मजर की लाल झण्डियाँ हवा म लहराती रहती ।

कितनी देर तक दिल धौंकनी की तरह चलता रहता था।

आज जब कभी लोग देखते हैं तो उसे स्वयं अपने पर आश्चर्य होता है। लगता है, जैसे वह अपने को छोड़कर उनके संग मिल गई है उन्हीं की कौतूहल भरी दृष्टि से अपने को देख रही है

—आप अभी तक यहीं बैठी हैं ?

तरन एकाएक चौंक सी गई। दरवाजे पर इंजीनियर बाबू खड़े थे।

—मैं अभी बरामदे में आ रही थी। आप चाय पी चुके ?

—चाय फिर किसी दिन पीने आऊँगा जब आपको बरामदे में आने की फुरसत होगी! इस वक्त तो झटपट घर पहुंचना है।

तरन ने उनके सामने चौकी रख दी।

—ठहरिए, कुछ खाकर जाइए! अभी तो आप आये हैं!

तरन रसोई की ओर जाने लगी, किन्तु इंजीनियर बाबू ने उसे बीच में ही रोक दिया—देखिए, इस वक्त यह झंझट रहने दीजिए। अभी अभी शहर से लौट रहा हूँ। रास्ते में धूल-गर्द खाई है, उससे बिलकुल पेट भर गया है।

जब कभी इंजीनियर बाबू हँसते हैं, तरन को हमेशा यह महसूस होता है कि इस बस्ती के लोग चाहे आदर भाव से उन्हें 'इंजीनियर बाबू' कहकर पुकारें, उम्र में वह उससे छोटे ही हैं। पहले पहल जब उसने इन्हें दीवान साहब की मित्र मण्डली के बीच बरामदे में देखा था, तो गहरा आश्चर्य हुआ था। इतने बड़े बुजुर्गों के बीच कालेज के छात्र से दीखने वाले यह इंजीनियर बाबू ठीक से फिट नहीं बैठते थे।

—आप उस तरफ आईं नहीं, मोन्टू आपके बारे में रोज पूछता है।

मोन्टू इंजीनियर बाबू का नौकर है जब कभी तरन रेलवे लाइन के पार टहलने जाती है, वह उसे हमेशा मिलता है।

—इस बार आऊँगी। आप रहेंगे ?

—अगले हफ्ते आइएगा। चार पाँच दिन के लिए एकदम काम आ पड़ा है।

इंजीनियर बाबू जाने से पहले एक क्षण रुके, ध्यान से अपनी ऐनक का शीशा साफ किया।

तरन की आँखें चुपचाप ऊपर उठ गई और देर तक उसी रिक्त स्थान पर टिकी रही जहाँ कुछ क्षण पहले इंजीनियर बाबू खड़े थे।

कैसे हैं यह इंजीनियर बाबू! खट-खट करके जब सीढ़ियाँ उतरते है तो सारा घर हिल उठता है।

खिड़की के परे रेलवे लाइन के ऊपर डूबता सूरज खून की लम्बी-सी रेखा खींच गया था। ऊँची नीची चट्टानों के बीच मजदूरों के खोखले शाम की पीली धूप में छोटे छोटे लकड़ी के बक्सों से दिखाई देते थे। काली देवी के मंदिर के आस पास फीके गुलाबी धुएँ का बादल क्षण प्रतिक्षण गाढ़ा होने लगा था।

तरन खिड़की से उठकर पलंग के पास चली आई। अधलिखा पत्र तकिये के नीचे अब भी दबा था। सुबह से भाई को पत्र लिखने बैठी है, किन्तु अभी तक मुश्किल से पाँच छः सतरें ही लिख सकी है। जब जब लिखने की कोशिश करती है, भाई का चेहरा समय की बुझी-बासी परतों को काटता हुआ आँखों के सामने घूम जाता है—वह चेहरा नहीं जो भाई बाबू से लड़कर घर छोड़ते समय अपने संग ले गए थे। उसकी तो विकृत, भयावह मुद्रा, इतने बरसों बाद आज भी जब कभी याद आ जाती है तो दिल काँप उठता है, न वह चेहरा नहीं एक और शक्ल है, बहुत सादी बहुत उदास तब माँ नहीं रही थी। शुरू से ही बाबू का इतना डर था कि जी भरकर रोने में भी झिझक होती थी। और तब भाई आए थे। —देखती नहीं तरन बाबू कितने अकेले रह गए हैं! —उन्होंने काँपते होठों से कहा था—हमें उनके संग रहना होगा। कुछ दिनों में फिर सब कुछ पहले जैसा ही हो जाएगा।

और आज तरन सोचती है कहाँ हो पाया सब कुछ पहले जैसा? उन दिनों वह काफी छोटी थी। भाई क्या चले गए और बाबू उन्हें क्यों नहीं रोक पाए, तब कुछ भी समझ में नहीं आया था। आज लगता है,

मा एक कडी थी परिवार और बाबू के बीच, उनके जाते ही व एक घर म रहते हुए भी सहसा एक दूसरे के लिए अजनबी से बन गए थे।

बुआ उसे भोजन के लिए बुलाने आइ। तरन के हाथ म कागज देखकर पूछा—क्या कोई चिटठी आई है ?

—भाई को लिख रही थी। कल से उनका पत्र आया पडा है।

—क्या कुछ आने क लिए लिखा है ?

—लिखा है, कुछ दिनो के लिए मै उनके पास चली जाऊँ क्या बुआ, चली जाऊँ तो कसा रहगा ?

बुआ विस्मय से आखें फाडते हुए तरन को देखती रही। इतनी दूर आसाम तरन अकेली जाएगी इसकी कल्पना करना भी पागलपन लगता है।

बहन के लिए इतनी मोह ममता होती तो इतने बरसो म क्या एक बार भी वह देखने नही आता ?—बुआ बोली—बाप से लडाइ है तो क्या सबसे किनारा कर लेना चाहिए ?

दमा के कारण बुआ से अधिक नही बोला जाता। जितने शब्द मुह से बाहर निकलते हैं उनसे कही ज्यादा चढती सास के भँवर मे डूब जाते है। बुआ की आखो मे आसू देखकर तरन एकाएक निश्चय नही कर सकी कि व उसके भाई के लिए है अथवा खासी के कारण खुद ब खुद उमड आए हैं।

—तुम चलो बुआ मैं अभी आती हू।—कमरे म वाभिल सा सन्नाटा छा जाता है। बरामदे म चहलकदमी करते हुए बाबू की थकी, अनिश्चित सी पदचाप सुनाई दे जाती है। खिडकी के बाहर मदान के अँधेरे म मिट्टी के लम्बे-लम्बे टूहो की पतली छायाएँ फीकी चाँदनी म उघड आई है।

एक धुँधली सी तस्वीर उभर आती है। ढलवाँ घाटियो पर दूर-दूर तक ऊपर नीचे चाय के बाग फले है इन्ही बागो के बीच पडो के झुरमुट क पीछे कही भाई रहते होग। कहते हैं, वहाँ स्टीमर पर जाना पडता है जाने स्टीमर पर बैठकर कैसा लगता होगा !

तरन उस छोटे-से स्टेशन के सिग्नल की हरी बत्ती देखती रही। पास आती ट्रेन के पहियों की गड़गड़ाहट मकान की दीवारों, मैदान में दूर खड़े घट्टों और टीलों का झिंझोड़-सी जाती है। कुछ देर के लिए पत्थर तोड़ने की मशीन की भयावह घुर घुर ट्रेन के पहियों-तले डूब जाती है। इंजन की हेडलाइट के घूमते प्रकाश वृत्त में आस पास खड़े झाड़ झखाड़ झिलमिला उठते हैं और फिर वही पहले जैसी घनी, बोझिल चुप्पी चारों ओर फैल जाती है।

उस रात बुआ तरन के कमरे में आई और देर तक बैठी रहीं। तरन की ओर कभी-कभी देख लेतीं और फिर एक लम्बी गहरी साँस लेकर सुपारी कतरने लगतीं।

—सो गई, तरन ?—बुआ कभी कभी शंकित स्वर में सिर उठाकर पूछ लेतीं।

—न बुआ अभी नहीं।

तरन समझ जाती कि बुआ कोई बात शुरू करने से पहले रास्ता टटोल रही हैं। वह चुपचाप आँख मूँदकर प्रतीक्षा करती रहती।

—आज तेरी माँ के कमरे में गई थी—बुआ कुछ देर बाद धीरे धीरे बोलीं—मैं तो देखकर हैरत में आ गई तरन! न जाने कितने बरसों से उसने ये सब चीजें जोड़ जोड़कर जमा की हैं! उसने ब्याह की साड़ी तक सन्दूक में अभी तक सँभालकर रखी है।

तरन के मन में हल्का-सा कौतूहल जाग उठा माँ का भी ब्याह हुआ होगा, इस पर कभी कभी विश्वास नहीं होता।

—तेरे बाबू उन दिनों नये नये दीवान बने थे। बड़ी धूमधाम से उनका ब्याह हुआ था। सिक्खों के दरबार में एक वही तो हिन्दू दीवान थे जो बरोक टोक राजा से मिलने जाया करते थे।

बुआ की आँखों में एक बहुत पुराना कभी न मिटनेवाला सपना तिर आया, हाथ का सरौता चलते चलते रुक गया। एक दिन रियासत के अंग्रेज रेजिडेण्ट उनसे मिलने आये थे। मुहल्ले के सब लोग आश्चर्य में

//.

मकान और समय की धूल म लद्रा फँ॰ा फट चीथडे सा 'दीवान' का खिताब, जिसे चाहे ओढ लो, चाहे दिखा लो, पर जो नही है, उस कोई कब तक मानेगा ?

बुआ का कण्ठ भारी हो उठता है आँखो के आग गीला सा झिल मिला तर जाता है, कि तु मुस्कराहट उनके होठा पर तब भी जमी रहता है मानो वह उसे मिटाना भूल गई हो।

कि तु तरन का बात का यह पहलू अब बिलकुल नही अच्छा लगता। अच्छा लगता था पहले जब मा हँसी हँसी मे वे गहने दिखाया करती थी, जो उस ब्याह पर दिये जाएग। तब हल्की सी गुदगुदी होती, ब्याह के लिए नही गहना के लिए नही बल्कि उस अजीब, अनजानी खुशी के लिए, जो उसकी अपनी थी, जिसमे वह बिलकुल अकेली थी।

तरन फिर लेट गई। खिडकी से सिग्नल की लाल बत्ती दीखती है, दूर अँधेर म। नहर के पीछे बैरक है, जिन पर रात चुपचाप झुक आई है। इ ही बरका की किसी सँकरी अँधेरी कोठरी मे इजीनियर बाबू रहते होग तरन न सोचा और आखे मूद ली।

उस पल उसे कुछ भी महसूस नही हुआ। यह भी याद नही रहा कि बुआ ने उससे कुछ कहा है। टाँगो पर एक हल्की मीठी सी थकान उतर आई। बरसो पहल की एक धुँधली सी अनुभूति कही भीतर धीमे स उमड आई है। लगता है, जस वह टब क पानी मे अपनी नगी देह पसारे लेटी है। बीच म कुछ भी नही है कोई भी घटना नही घटी है। जो बीता है जो कुछ भी घटा बढा है वह सब पानी के ऊपर है

—सा गई, तरन ?—बुआ न पूछा।

इस बार तरन स्वय निश्चय नही कर सकी कि वह नी॰ के इस तरफ है या दूसरी तरफ पानी के ऊपर छायाएँ तिरती हैं, किन्तु उसके नीचे कितना ढेर-सा मौन बिखरा है !

फिर अनक दिन एसे आते हैं, जब दीवान साहब अपने कमरे से बाहर नही निकलत। बरामदा सूना पडा रहता। खाली कुर्सियो पर

सूखा गरम रेत और चून की परतें इकट्ठी होती रहती। बुआ कई बार बाबू के कमरे तक गई हैं और चुपचाप वापस लौट आई हैं। खाना भी वह अपने कमरे में मँगवा लेते। आते जाते कभी सामने पड़ जाती थी, तो देखते भी नहीं, देख भी लेते तो इस तरह मानो उसे पहचानने में दुविधा हो रही हो। उनकी कोशिश यही रहती कि जहाँ वह बैठी हो वहाँ न जाना हो। अकस्मात मुठभेड़ भी हो जाए तो दूसरी तरफ देखने लगें, या रास्ता बचाकर निकल जाएँ।

तरन समझती है, बाबू उससे दूर-दूर क्या रहने लगे हैं, क्या घर में तनाव रहने लगा है। पहले बहुत दिन गुस्सा आता था अब वह भी नहीं आता, केवल रूखी सी रिक्तता मन में भर जाती है। कभी कभी वह सोचती है कि यदि बाबू को उससे इतनी विरक्ति है तो क्या नहीं उससे छुटकारा पा लेते? कई बार बुआ ने जोर डालकर बाबू से पत्र लिखवाए हैं, बातचीत आगे भी बढ़ी है, उसकी फोटो और जन्मपत्री बाहर भेजी गई है किन्तु हर बार बीच में ही सब कुछ रुक जाता है क्या रुक जाता है, आज तक तरन की समझ में नहीं आया है

आज भी तरन जब उस रात की घटना सोचती है, तो सारी देह में झुरझुरी सी दौड़ जाती है

उस रोज आधी रात से कुछ पहले बुआ उसके कमरे में आई थी। वह जाग रही थी। अँधेरे में बुआ की पदचाप धीरे धीरे उसके पलंग के पास सरकती सुनाई दी थी। वह साँस रोके लेटी रही थी।

—बुआ तुम हो?

—बुआ का स्वर काँप रहा था— तूने कुछ सुना?

तरन उठकर बैठ गई। आँखें फाड़ते हुए अँधेरे में धुएँ की काली छाया को देखा।

—क्या बात है बुआ?

—मुझसे अब इस घर में नहीं रहा जाएगा।

—क्या बात है, बुआ?

—कहना अब कुछ बाकी रहा है, तरन ?—बुआ का गला रुँध सा गया।

तरन स्तब्ध आंखों से अंधेरे के उस भाग को देखती रही, जहाँ बुआ खड़ी थी।

—तुमसे कुछ बात हुई थी—तरन ने पूछा।

—मैं तो कमरे मे ही बैठी रही थी वह खुद आये थे। मैं कहती हूँ कि जो कुछ उन्हें कहना है, तुमसे क्या नही कहते ? तू अब बच्ची तो नही रही नाहक मुझे बीच मे क्यों घसीटते है ?

—क्या कहते थे बुआ ?—तरन के स्वर मे एक अजीब सा खोखलापन उभर आया।

—उनकी बात मुझे कुछ समझ म नही आती। कहते थे, माँ के सामने सब कुछ हो जाता तो ठीक रहता। फिर देर तक चुपचाप कमरे म घूमते रहे। मैंने मौका देखकर कहा कि ऊंचे खानदान को लेकर आजकल कौन बैठा रहता है ? अच्छा लड़का मिले तो सब-कुछ है। लेकिन मेरी बात सुनते ही वह एक मिनट भी कमरे म नही ठहरे। तेजी से अपने कमरे मे गये और फटाक से दरवाजा बन्द कर लिया। कुछ देर बाद जब बाहर आये तो एकाएक उन्हें पहचान नहीं सकी। आँखें सुर्ख हो रही थी माथे पर बाल बिखरे थे तेरी माँ के मरने के बाद मैंने उन्हें कभी इस रूप मे नही देखा। हाथ मे एक पोटली थी जो उन्होंने मेरे सामने फेंक दी

—इसकी माँ के गहने इसमे रखे हैं इन्हें लेकर वह जहाँ जाना चाहे चली जाए। लड़का चला गया तो मर नही गया, यह चली जाएगी तो भी मुझे कुछ नही होगा। मैं तो भौंचक्की रह गई तरन ! क्या अपनी लड़की के लिए कोई ऐसे कहता है ?

उस रात बुआ का प्रश्न अंधेरे म भटकता रहा था। वह कुछ भी नहीं समझ पाई थी कि बाबू उससे क्या चाहते हैं। उसे अपने से ही डर लगने लगा था। लगा, जैसे बाबू को उस पर सन्देह है मानो वह भी भाई की

तरह किसी न किसी दिन उन्हें धोखा देकर चली जाएगी। पहले उसने कभी ऐसा नहीं सोचा था, किन्तु उस रात बाबू के सन्देह ने उसके मन को भी अस्थिर कर दिया। क्या सचमुच वह इस घर में रहना चाहती है? उसने बार बार अपने से पूछा था और उसे लगा था कि शायद बाबू का सन्देह सही हो, शायद उस उस घर से, घर के साथ साथ करते कमरों से डर लगता है, जिसे आज तक वह छिपाती आई है—क्या यह सच है?

यह कैसा प्रश्न था, सीधा सादा सहज किन्तु उन हजारों प्रश्नों में एक जिनका शायद कोई उत्तर नहीं होता, तरन यह नहीं जानती थी और तभी वह रात भर तकिये में मुँह छिपाकर थर थर कांपती रही थी।

उस रात तरन ने अचानक निश्चय कर लिया कि वह कुछ दिनों के लिए भाई के पास जाकर रहेगी

दूसरे दिन चाहने पर भी तरन बाबू से अपने जाने की बात कहने का साहस न कर पाई। कई बार उनके कमरे तक गई, किन्तु बिना कुछ कहे सुने उल्टे पाँव वापस लौट आई। उसे बाबू से एक विचित्र सा भय लगता था जिसे मिटाना कभी सम्भव नहीं हो पाता। उसने बुआ से कहा कि वह बाबू से जाकर कह दे।

बुआ विस्मित सी उसकी ओर देखती रही थी। किन्तु बाद में जब उन्होंने उस पर विचार किया, तो लगा कि शायद तरन का चले जाना ही बेहतर है।

उस शाम बाबू ने उसे अपने कमरे में बुलाया था। दरवाजे की देहरी पर तरन के पाँव सहसा ठिठक गये थे, साँस घुटन सी लगी थी।

—आ जाओ, इधर बैठो।—बाबू का भारी, धीमा सा स्वर सुनाई दिया।

दीवार के संग तकिये का सहारा लेकर बाबू बैठे थे, चुप निश्चल। एक बार विचार आया कि जैसे वह दबे पाँव आई है, वैसे ही वापस लौट जाए, किन्तु उसके पाँव फर्श से चिपके रहे।

—सुना है, तुम कुछ दिनो के लिए बाहर जाना चाहती हो।

तरन चुपचाप बैठी रही। उसे लगा, मानो बाबू भाई काना म उसके सामने नही लना चाहते उसन कभी बाबू के मुँह म भाई री चर्चा करत नही सुना। जब कभी उसकी चिट्ठी आती है, बाबू बिना पढे उसे उसके पास भिजवा दते हैं।

—यहाँ मन नही लगता तरन ?—बाबू के स्वर म एक निरीह अबाध सी जिज्ञासा थी मानो उन्होन पहली बार इस सम्बन्ध म सोचा हो।

तरन की आखें एक पल के लिए ऊपर उठी। उसके भीतर एक अजीब सी उथल पुथल होन लगी। शायद बाबू उसे रोक लेंगे शायद उसके बिना उन्ह भी अकेलापन महसूस होता होगा। उसका दिल तेजी से धडकने लगा। यदि एक बार भी बाबू उसे रुकने के लिए कहग, तो वह एकदम अपना इरादा बदल देगी। फिर जाने का प्रश्न ही नही उठता।

किन्तु बाबू चुप बैठे रहे। तरन की आँख नीचे झुक गई। कमरे की नीरवता फिर बोझिल सी बन आई।

—अच्छा है जाना चाहती हो तो चली जाओ। मेरी ओर स चिन्ता मत करना।—बाबू का स्वर बिलकुल स्थिर और भावहीन था।

कमरे से बाहर जाते हुए तरन के पाव एक बार देहरी पर ठिठके थे, सोचा था शायद बाबू कुछ कहेंग, किन्तु कमरे म सन्नाटा घिरा रहा

शायद कुछ भी कहना शेप नही रहा था। उस दुपहर तरन अपने कमरे मे ही लेटी रही। इतन दिना से अगर कोई एक इच्छा होती है तो यही कि जब इच्छा करे तभी, उसी क्षण नीद आ जाए। कभी कभी तो लगता है कि इतन वरसो मे जागने के आँखें खोलकर चारो ओर देखने के जो क्षण आए हैं व भी जैसे गलत हों अवास्तविक हो, लगता है जसे वे भी पूरी तरह स उसके पास न आए हो, नीद की डयोढी पर खडे खडे वापस लौट गए हों।

शाम को तरन अपने कमरे से बाहर आई। दुपहर-भर लेट रहने के कारण शरीर भारी लग रहा था। बाहर दिन भर रेत उडी थी आकाश पर पीली, मटियाली धूल की तह जम सी गई थी। मैदान के चारों ओर टीलों और मिट्टी के ढूहों पर फीकी बुझी बुझी सी धूप चमक रही थी। तरन ने देखा, बाबू अभी बगमदे में नहीं आये हैं। उनके कमरे का दरवाजा अब भी बन्द पडा था।

बुआ अपनी कोठरी में खाँस रही थी और मन-ही मन कुछ बुड-बुडाती जाती थी। जब कभी हवा का झोंका आता था उस सूने मकान के दरवाजे खटखटा उठते थे

तरन ने जल्दी जल्दी चप्पल पहनी। भीतर बुआ से कह आई कि वह कुछ देर टहलने के लिए बाहर जा रही है। न जाने बुआ ने उसकी बात सुनी या नहीं, सीढियाँ उतरते हुए भी तरन को उनकी खाँसी का घँघराता स्वर सुनाई दे जाता था।

दूर दूर तक रेतीली जमीन फैली थी। अस्त होने से पहले सूरज की पीली किरणें कच्चे सोने की-सी रेत पर बिखर गई थीं। नई सडक के दोनों ओर रोडी पत्थरों के ढेर छोटे छोटे पिरामिड जैसे पडे थे। उन्हीं के मग मग चलती हुई तरन पानी के टैंक तक पहुँच गई थी।

सब कुछ कितना दूर और फिर भी कितना अपना था तरन ने सोचा। कितने वर्षों से वह इन्हें देखती आई है! लडाई के दिनों में जब बैरक बनाये जा रहे थे और मिलिट्री ट्रकें गर्द उडाती हुई जब शहर से आती थी तब भी वह यहाँ थी आज बरसों बाद जब भीमकाय चट्टानों को तोडकर नई सडक खोदी जा रही है बैरकों को ढाया जा रहा है यह भी वह सुबह शाम कमरे की खिडकी से देखती आई है

तरन को यह सोचकर हल्की सी खुशी हुई कि अब कुछ दिनों के लिए वह इनसे छुटकारा पा लेगी। उसे लगा, मानो उसके भीतर का तनाव बह गया है, और जब उसने दूर से कच्ची सडक पर इंजीनियर बाबू को आते देखा, तो वह बिना मुस्कराये न रह सकी।

इ जीनियर बाबू टैक के पास आकर रुक गए। उनके सिर पर सोला हैट धूप में चमक रहा था, कमीज़ की बाँह ऊपर चढ़ी थीं जिनके नीचे नगी बाँहो के बाल धूल रेत मे सने थे। गले के बटन खुले थे और गले के निचले हिस्से पर पसीने की दो चार बूँदें दिखाई दे जाती थीं। उनके हाथ म एक लम्बा चौडा-सा बोर्ड था। ऐनक के पीछे आँखें वैसी ही चचल बचैन किन्तु निहायत गम्भीर दिखाई देती थीं।

—आप यहाँ कस खडी हैं ?

—यो ही जरा टहलने की सोच रही थी। घर मे तो उमस के मारे बैठा नही जाता। आपको मैंने दूर स ही देख लिया था इजीनियर बाबू हालाँकि सोला हैट म आपको पहचानना मुश्किल था।

इजीनियर बाबू हँस पडे। तरन को याद आया कि जब वह शुरू शुरू म दरवाजे के पीछे खडी होकर बरामदे म इ जीनियर बाबू की हँसी सुनती थी तो उसे लगता था कि वह उम्र मे उससे काफी छोटे है।

—इधर शहर जाना हुआ इजीनियर बाबू ?

—कम होगा ?—इ जीनियर बाबू अपनी परेशानियो को कुछ इस ढग से कहते हैं कि तरन को लगता है, मानो उन्हें उनसे काफी सुख अनुभव हो रहा हो।

—कसे होगा ? तीन दिन से कोई लारी नही गई है। उतनी दूर न मैं जा सकता हूँ, न बचारा मो टू।

—लारी नही गई है ?—तरन आश्चय से उन्हे देखने लगी—फिर खान पीने का सामान कौन लाता होगा ? यहा तो कोई अच्छा होटल भी नही है।

—आप मोटू को नही जानतीं—इ जीनियर बाबू ठहाका मारकर हँस पडे—शहर जाने मे हम दोनो को ही आलस लगता है इसलिए उसन यहाँ एक अच्छा सा ढाबा खोज निकाला है वही स अपने और मेरे लिए दोनो जून खाना ले आता है।

तरन न इजीनियर बाबू को देखा। बडा विचित्र सा लगा। कैसे हैं

यह इजीनियर बाबू ! अपने शहर अपने घर को छोडकर इतनी दूर चले आए हैं। नौकर के अलावा कोई भी तो नहीं है इस उजाड प्रान्त मे, जिसे वह अपना कह सकें।

—चलिय, आप टहलने आई हैं न !

ऊँची-नीची, ऊबड खाबड कच्ची सडक पर वे दोनो चुपचाप चलने लग। जब कभी हवा का झोंका आता, आखें मुँद जाती, मुँह म रेत करकराने लगती, आखो के आगे सफेद परदा सा खिंच जाता। मजदूरों के खोखलो और झाड फूस के छप्परो के ऊपर काली देवी के मन्दिर का दीया जल गया था, हालाकि धूप अभी तक आस पास खडी चट्टानों और मिट्टी के ढूहो पर रेंग रही थी।

चलते चलते अचानक इंजीनियर बाबू रुक गए।

—आपने वे टीले देखे हैं, उन खोखलो के पीछे ?—इंजीनियर बाबू की दृष्टि कही दूर जाकर अटक गई थी।

तरन जिज्ञासा भरी दृष्टि से उनकी ओर देखने लगी।

—सड़क बनने के बाद उन सबको गिरा दिया जायेगा। रेलवे लाइन के सामने आप जो बजर भूमि देखती है, उसे जोता जाएगा। नहर के इस तरफ कारखाने बनेंगे। आपके देखते देखते सब कुछ बदल जाएगा।

इंजीनियर बाबू का स्वर एकदम बहुत उत्साहपूर्ण हो गया था। शाम की धूप म उनके चश्मे का शीशा बार बार झिलमिला उठता था।

और भी न जाने इंजीनियर बाबू ने कैसी कैसी अजीब बात कही थी। तरन विस्मय से देखती रही थी, सोचती रही थी कि देखने मे चाहे इंजीनियर बाबू कालेज के छात्र से लगते हो जानते बहुत-कुछ है। उसे हँसी केवल इस बात पर आई थी कि वह इतना उत्तेजित होकर क्यो बोल रहे हैं, वह कोई उनका विरोध थोडे ही कर रही है !

रेलवे लाइन के फाटक के पास आकर वे रुक गए। इंजीनियर बाबू एकाएक चुप हो गए थे, मानो शाम के घिरते अँधियारे का सूनापन उन्ह

भी छू गया हो। आकाश पर हँसिया चाँद उग आया था टीला की ऊँची नीची रेखाएँ, जो दुपहर के समय तीखी और खरी दिखाई देती थी सन्ध्या के फीके आलोक में बेहद नरम और हल्की पड गई थी, मानो अपना अलगाव छोडकर व चुप एक दूसरे के पास सरक आई हो।

—इंजीनियर बाबू ! आप कभी आसाम गये हैं ?

—आसाम ? नही तो। क्या वहाँ क्या है ?

—कुछ नही ऐसे ही याद आ गया। वहाँ हमारे भाई रहते हैं आप ही की उम्र के हैं।

—ओह !—इंजीनियर बाबू चुपचाप दूसरी ओर देखने लगे थे।

तरन को यहाँ से लौट जाना था, किन्तु वह चुपचाप खडी रही थी। हवा का वेग अचानक कम हो गया था। पानी के टैंक के पीछे छोटे छोटे घरों की नीली छतें शाम की ढलती धूप में चमक रही थी।

—अब आप वापस लौट जाइए अँधेरा होने लगा है। कहिए तो मोटू को साथ भेज दू ?

—नही मैं चली जाऊँगी, दूर ही कितना है !

इंजीनियर बाबू रेल की पटरी पार करके धीरे धीरे मैदान की दूसरी ओर चलने लगे थे। तरन देर तक उनकी ओर देखती रही। डूबते सूरज के रंग का अन्तिम आभास भी मिटने लगा था।

वापस लौटते हुए तरन एक बार रुकी थी। उसे लगा था जैसे बरसो बाद उसके पास एक रहस्यमय, अनिर्वचनीय सुख आया है। चारो ओर घिरते अन्धकार की स्निग्ध छाया के बीच उसे अपनी सब चिन्ताएं निरर्थक सी जान पडी थी। वह समझ न पाई कि उसे अब तक जो इतना डर लगता रहा था, वह किस लिए था किससे था ? जिन्दगी मे केवल एक बार जीना होता है और उसे उसके अलावा कोई और नही जियेगा। इंजीनियर बाबू को ही देखो अपना घर बार छोडकर इतनी दूर आये हैं, भला किस लिए उन्हें कैसा लगता होगा ?

मैदान के अँधेरे ऊबड खाबड रास्ते पर चलते हुए तरन को लगा

था, जैम वीते वरसा का बासीपन धुल गया है। उसकी नस नस म ग्रान द की लहर दौड गइ थी।

—नही ग्रब वह इस घर म कभी वापस नही ग्रायगी वह ग्रपनी जि दगी स्वय जियेगी उस यहा ग्रब रहन के लिए किसी का मोह पीछे नही खीचेगा

सीढिया चढत हुए तरन ने ऊपर देखा, बरामदे मे निपट ग्रँधेरा था। सारे घर मे स नाटा फैला था। केवल रसोई की बत्ती जल रही थी, जिसकी रोशनी की एक धूमिल, फीकी सी रखा बाबू के कमर के दरवाजे पर खिच ग्राई थी।

दरवाजा खुला था। तरन का दिन तेजी से धडकने लगा। क्या बाबू ग्रकेले ग्रँधेरे कमरे मे बठे है ?

वह दब पाव दरवाजे क पास गई, कापते हाथो से दरवाजे को हल्क स पीछे ठेल दिया। ग्राखें ग्रँधेरे म पहल कुछ भी न पकड पाइ इधर-उधर भटकती रही, फिर एक कोने मे वे सहसा ठहर गइ।

एकटक देखती रही तरन। निद्रा मे चलते मरीज की तरह बाबू कमरे मे घूम रहे थे। कभी कभी अकस्मात कमरे के बीच खडे हो जाते थे, मानो किसी भूली हुई चीज को यादकर रहे हो। फिर ग्रचानक उनके पाव मुड जाते ग्रौर वह कोन की ताक मे रखी हुई बरसो पुरानी तस्वीर क सामने ग्रा खडे होते। उभरी हुई नीली नसो स भरे, काँपते बूढे हाथा से वह फ्रेम पर जमी हुई धूल की परतो को साफ करते। धूल कहा साफ हो पाती है ! केवल उनकी ग्रँगुलिया की छाप तस्वीर के पुरान, जद शीशे पर उभर ग्राती है।

कोई शक्ल है जो व्यतीत के धूमिल परदे पर दीये की लौ-सी झिलमिला जाती है। जाज पचम का सिल्वर जुबली के समारोह के ग्रवसर पर बरसो पहले जो फोटो लिया गया था, बाबू म त्रमुग्ध होकर ग्रपलक उस देख रह थे। रियासत के ग्रँग्रेजी रजीडट ग्रौर ग्र य राज्याधिकारियो के बीच जहा दीवान साहब बठे है फोटो के उस कोने पर बाबू की

आँखें स्थिर स्तम्भित सी जमी रह गई है, मानो वह अपने को ही पहचान पाने का प्रयास कर रहे हो।

क्षण भर के लिए भ्रम होता है, क्या बाबू सचमुच वहा है, जहाँ खड़े दीखते हैं ? क्या इस घरी उनके सग कोई नही है ?

दरवाजे के पास दीवार से सटकर तरन पत्थर सी खडी रही। आँखो पर एकाएक विश्वास नही हुआ। पहली बार तरन ने बुढ़ापे का एसी निरावृत्त अवस्था मे देखा था और वह बिना हिले डुले सुन्न सी खडी रही थी। बाबू के रूखे सफेद बाल, पतले, लकडी-से हाथो पर नीली नसें, चेहरे की असख्य उदास झुर्रिया, क्या यह सब कुछ उसकी आखो के सामने उसके देखते देखते हो गया है ?

—बाबू !—तरन के होठ फडफडा उठे। वह अँधेरे कमरे मे बाबू के सामने आकर खडी हो गई। जीवन मे पहली बार उसने बाबू के इतने निकट जाने का साहस किया था।

बाबू ने धीरे से सिर ऊपर उठाया तरन को देखा, और देखते रहे।

तुम यहा क्यो आई, तरन ?—उनका गला भर्रा सा आया, आँखो मे कातरता छलछला उठी।

तरन कमरे से बाहर चली आई। देर तक अँधेरे बरामदे मे खडी रही। एक भयावह-सा विचार उसके मस्तिष्क मे धीरे धीरे रेंगता रहा। बाबू उसे कभी नही छोडेंगे और वह उनसे कभी अलग नही हो सकेगी

वह अकेली रहेगी, किन्तु बाबू की छाया से बधी हुई। और बाबू का अकेलापन हमेशा, जिन्दगी भर उससे जुडकर रहेगा।

वह क्षण, जो आज शाम आया था, रेलवे लाइन के सामने जब वह इजीनियर बाबू के सग खडी थी, वह शायद गलत था, अपने सम्बन्ध मे एक सुखद भ्रम से अधिक कुछ नही वह क्षण फिर उसके जीवन मे कभी नही आएगा।

रात भर बुआ के कमरे मे खाँसने का स्वर सुनाई देता रहा। मायी

रात के समय तरन बाबू के कमरे तक गई थी और न जाने कितनी देर तक अंधेरे में दरवाजे से सटकर खडी रही थी । उसे लगा था मानो माँ उस रात दुबारा मर गई हो और जो आँसू बचपन में नहीं बह सके थे वे इतने बरसों से इसी रात की प्रतीक्षा कर रहे थे

अपने कमरे मे वापस आकर तरन चुपचाप खुली खिडकी के आगे खडी रही थी । दूर दूर तक मैदान में फीकी-सी चाँदनी बिखरी थी । रेलवे लाइन के पार तीन चार बत्तियाँ टिमटिमा रही थी । इन्ही के आस पास कही इंजीनियर बाबू रहते होंगे तरन ने सोचा । उस उस क्षण इंजीनियर बाबू की बात याद हो आई कि कुछ वर्षों मे सब-कुछ बदल जाएगा । क्या इंजीनियर बाबू सच कह रहे थे ? क्या सचमुच सब बदल जाएगा ? और तरन के होठो पर एक रूखी सी मुस्कराहट फैल गई थी

खिडकी से हटकर तरन अपने पलग पर लेट गई । थकान के मारे पलकें भारी हो गई थी, फिर भी देर तक सोना नही हो सका । एक बार बीच मे कच्ची नीद का हल्का सा झोका आया था तो लगा था जैसे सामने भाई खडे हो वैसी ही शक्ल थी वही उदास सी आँखें और तरन देर तक भाई के बारे मे सोचती रही थी । कितने बरसो से उन्हे नही देखा है ! अब तक तो शायद वह बिलकुल बदल गए होगे

एक धुधली सी तस्वीर आँखो के सामने उभर जाती है कही बहुत दूर, चाय के बागो के झुरमुट मे उनका बगला छिपा होगा । कहते हैं, वहाँ स्टीमर पर जाना पडता है । न जाने स्टीमर मे बैठकर कैसा लगता होगा !

एक शुरुआत

लगता है जसे एक लम्बे अरसे से हम दोनो इसी तरह खामोश बठे हैं।

हम दोनो की पहचान बहुत सक्षिप्त है। चनल पार करते हुए स्टीमर पर परिचय हुआ था—ऐसा परिचय जिसका ऊपरी तौर स कोई तुक और अथ नही होता, जो शुरू होने से पहले ही खत्म होन लगता है।

लन्दन स प्राग एक लम्बी रात और पूरा दिन। मैं दुबारा इस रास्ते स वापस लौट रहा हूँ। सर्दियो की फीकी धूप और उठती, डगमगाती लहरो का फेनिल ज्वार।

सोचता हूँ सागर एक स्वप्न है—डबडबाता स्वप्न।

स्टीमर के यात्री डेक की कुरसियो पर गुमसुम चुपचाप बठे है। कुछ घडिया के बाद वे यूरोप के अलग अलग कोने म खो जाएगे। मेजो पर डगमगाते लाइट एल के गिलास यू स्टटसमैन और 'ऑब्जवर' के फड़फड़ाते प न एक कोने म मुदी हुई खामोशी निष्प्रभ आख और चारो ओर फली हुई एक हल्की सी थकान स्टीमर की यह तस्वीर उस स्मृति मे कितनी भिन्न है जब मैं लन्दन आते समय पहली बार चनल पार कर रहा था। वे गरमियो के दिन थे और सब लोग यूरोप मे छुट्टिया गुजार

कर अपने अपने घर लौट रहे थे। स्टीमर खचाखच भरा था। चारो ओर नीली जीन्स पहने लडकिया हवा मे उडते हुए रग बिरगे स्कार्फ और बियर के गिलासो के इद गिर्द बैठे लडके लडकिया के गुच्छे दिखाई दे जाते थे।

अब वह सब कुछ नही है। डेक की कुरसियो पर बैठे लोग बहुत चुप हैं अपने मे खोए से। सिर्फ समुद्र का स्वर है एक अधीर बेचन सी आवाज।

अभी तीन घटे और हैं शाम तक स्टेंड पहुचेंगे। तब तक मैं खाली हूँ। मैंने 'प्लेयस' सिगरेट के कुछ पकेट खरीदे हैं। यहा स्टीमर पर सिगरेटो पर ड्यूटी नही लगती, अत शायद कोई यात्री हो जिसके हाथो म अग्रेजी सिगरेटो के दस बारह पैकेट न हो। मेरे बैग मे एक उपन्यास भी है जिसे मैंने लन्दन के स्टेशन पर खरीदा था। सोचा था, स्टीमर पर खाली समय काटने के लिए पढता रहूँगा। किन्तु अभी तक कुछ भी नही पढ पाया हूँ। किताब खोलते ही सिर चकराने लगता है। इसलिए मैं कुछ भी नही करता। समुद्र ही शायद अपने मे बहुत कुछ है बहुत कुछ और देखो तो कुछ भी नही।

—यह एक शुरुग्रात है—कोई धीरे से मेरे भीतर कहता है। डेक की कुरसी, गीली सफेद धूप और यूरोप का आकाश! मेरा ध्यान अनायास भटक जाता है। मैं उन लोगो के बारे मे सोचने लगता हू जो कभी मेरे नजदीक थे जिन्हे मैं अगले चन्द वर्षों मे नही देख सकूगा।

चन्द वर्ष एक अजीब सी शून्यता घिर आती है। मैं सैंडविचेज का डब्बा खालने लगता हूँ।

—आप भी कुछ लीजिए—मैंने कहा।

वह अचानक चौक से गए—नही शुक्रिया! मैं स्टीमर पर कुछ भी नही खाता।

उन्होने अपनी आखें दुबारा सामने फैले समुद्र पर गाड दी मानो कोई ऐसी चीज है जो खो गई हो और जिसे वह निश्चिन्त निर्विकार

भाव से सोच रहे हैं।

काफी देर तक हम इसी तरह चुपचाप बठे रहे। मेरे पास कुछ भी करने का नहीं था। समुद्र की ओर देखते-देखते आँखें थक सी गई थी अत अनायास मेरा ध्यान बार बार उनकी ओर भटक जाता था।

चश्मे के पीछे अधमुदी, खामोश आँखें, लम्बा नीला डफल-कोट, करीने से कटे छँटे बहुत छोटे छोटे भूरे बाल, जो हवा से बार बार उनके माथे पर आ जाते थे और जिन्हें वह खोई सी मुद्रा में ऊपर उठा लेते थे।

स्टीमर के उस उपेक्षित कोने में हम दोनों बहुत पास, फिर भी अपने मौन में एक दूसरे से बहुत अलग अलग बैठे हैं। पीली धूप में जल पक्षियों की कतार सागर के पार उड जाती है।

कुछ देर बाद उनकी आँखें मुझ पर उठ आइ—वसी ही शान्त, वसी ही निर्लिप्त।

—क्या आप पहली बार चनल पार कर रहे हैं?

—नहीं, दो महीने पहले लन्दन आया था, अब प्राग जा रहा हूँ।

मैंने अपनी यात्रा का संक्षिप्त सा ब्यौरा दिया। उन्होंने बीच में कोई भी प्रश्न नहीं पूछा, चुपचाप सुनते रहे। किताब बन्द करने के लिए जब उन्होंने अपना हाथ डफल-कोट की जेब से निकाला तो मैं अचानक चकित सा हो गया। उनके नग्न कोमल हाथों से उनकी कम उम्र का पता चलता है किन्तु उनके माथे की महीन झुर्रियों में अभी से हल्की थकान के चिह्न दिखाई देने लगे हैं।

स्टीमर चल रहा है। आस पास समुद्र के फेनिल जल में धूप के द्वीप डूब जाते हैं। और फिर जब हम उन्हें भूल जाते हैं वे कहीं दूर बच्चे की किलकारी की मानिन्द अपना चेहरा ऊपर उठा लेते हैं और लहरों की चमकीली नोकों पर बिछल जाते हैं।

—आप पहली बार यूरोप आए हैं।

उनकी आवाज़ बहुत धीमी थी। मैं चुपचाप सर हिला देता हूँ। और तब मुझे लगा, जैसे वह मुस्करा रहे हो।

—म्युज़ियम, आर्ट गैलरीज शायद आप यही सब-कुछ देखेंगे ?

मुझे लगा, जसे उनके स्वर मे हल्का सा व्यग्य हो। किन्तु उनका चेहरा पूर्ववत शान्त और गम्भीर था उसमे मुझे व्यग्य का कोई आभास दिखाई नही दिया।

व्यग्य न रहने पर भी मुझे लगा जैसे उनके शब्दो मे कुछ ऐसा है, जो मैं नही पकड पाया हूँ—ऐसा कुछ जिसने मुझे क्षण भर के लिए विचलित सा कर दिया है।

मेरा गला सूखने लगा था। थमस मे कुछ कॉफी थी जो सुबह लन्दन मे मेरे मित्र ने स्टीमर पर पीने के लिए दी थी। मैंने उन्हे अपने कप मे काफी दी। इस बार उन्होने इन्कार नही किया। स्वय अपने लिए मैं स्टीमर के 'बार' से लागर का गिलास ले आया।

लागर क्षण भर के लिए लगा जैसे यह लन्दन के बीते दिनो की अन्तिम, आत्मीय विदा हो। अक्सर कोई थियेटर या कसट देखने के बाद आधी रात को हम किसी उजाड सूने बार मे लागर पिया करते थे। लन्दन की गरम, पगली रातो के सग लागर का तीखा रग जुडा है यह अजीब बात है कि किसी खास किस्म की बियर या शराब या सगीत के सग एक पराये अजनबी शहर की कितनी स्मृतिया जुड जाती हैं।

डेक पर हवा का झोका आता है। समुद्र की नीली खारी बूदो की एक महीन सी बौछार हमारे कपडो को गीला कर जाती है। हमने अपनी कुरसियो को कुछ और पीछे कोने की तरफ खीच लिया है। हवा से उनकी किताब के पन्ने खुल गए हैं रिल्के की चन्द पक्तिया नीले जल मे भीग सी गइ। किन्तु उनका घ्यान उस ओर नही था। वह अब भी कॉफी पीते हुए समुद्र की ओर देख रह थे।

—स्टीमर की स्पीड काफी कम है। शायद स्टेंड पहुचते तक रात हो जाएगी—उन्होने अपनी पाइप सुलगा ली।

—आप ब्रसलस जाएँगे ? —मैंने पूछा।

—नही, ब्रसेल्स के पास एक पहाडी कस्बा है। मैं आजकल वही

रहता हूँ।

—आपका घर भी वहीं है ?

एक क्षण के लिए वह रुके, मानो हल्की-सी झिझक महसूस कर रहे हों,—नहीं, मैं अपने घर से वापस लौट रहा हूँ। किन्तु अब यह कहना काफी मुश्किल है कि कौन सा मेरा सही और स्थायी घर है—इंगलैंड या बेल्जियम—उन्होंने हँसते हुए कहा।

मैं कुछ समझा नहीं और प्रश्न भरी दृष्टि से उनकी ओर देखता रहा।

—वैसे पिछले छः वर्षों से बेल्जियम में रह रहा हूँ। साल में एक बार लन्दन घरवालों से मिलने आ जाता हूँ। इस बार सेनेटोरियम के डॉक्टर आने नहीं देते थे। मैं जबरदस्ती ज़िद करके चला आया। अब सोचता हूँ, नहीं आना चाहिए था—एक रूखी सी हँसी और फिर उनकी नीली गहरी आँखें चुप धीरे से मुँद गईं।

यूरोप आने पर मेरे मन में पिछले कई महीनों से जो ललक और ताज़गी उगती रही थी न जाने क्यों वह मुझे उनके चेहरे की व्यथा और थकान के सम्मुख कुछ असंगत सी लगने लगी।

फिर एक घनी सी चुप्पी ने हमें घेर लिया। लगा जैसे हम दोनों अपने अपने मौन के दायरों में सिमट गये हैं। स्टीमर पर लोगों का कोलाहल बढ़ गया है। बहुत से यात्री, जो अब तक बार में बैठे थे बियर के गिलास हाथों में लिये बाहर आ गए हैं। डेक के जंगले के पास एक छोटी सी लड़की अपनी माँ की झिड़कियों के बावजूद नीचे झाँक रही है। बार बार उसका रिबन हवा में फड़फड़ा उठता है।

लेकिन डेक पर हमारा कोना अब भी अलग है। वहाँ से केवल शाम की धूप में झिलमिलाते डोवर के भूरे, धुँधले दूह दिखाई दे जाते हैं।

—आप इतनी दूर से यूरोप आये हैं काफी लम्बा अरसा ठहरेंगे ?

—जी, अभी कुछ भी पता नहीं—मैंने कहा।

—आपको शायद यह बात काफी अजीब लगे लेकिन मैं अक्सर सोचता

हूँ, कमे कुछ लोग मपन पर म हजारा मोन चर जात हैं। प्रापको यह जानकर काफी प्राश्चय हागा कि मुझे कभी म्यूजियम्स या प्राट गलरीज जान का गौक नही हुआ। हर बार चनल पार करत हुए लगता है यह प्राखिरी बार है, प्रब नही लौटूँगा लेकिन एमा हा नहीं पाता

उन्होंने अपना हाथ डेक की रेलिंग पर रख दिया। मुझे लगा जसे चनल के नीले पानी म उनकी प्राँखें किसी भूले बिसर रहस्य की टोह म खो गई हैं।

—आप पहले प्राग जाएँगे फिर ?

—प्राग म कुछ अरसा ठहरूँगा, उसके बाद का कायक्रम अभी बिलकुल अनिश्चित है—मैंने कहा।

कुछ देर तक वह खामोश रहे। फिर जब बोल तो उनके स्वर मे एक अजीब-सी दूरी थी।

—इट वुड बि ए स्ट्रेंज लंड।

—क्या प्राग ?—मैंने पूछा।

—नही—वह कुछ रुके। फिर धीरे से कहा —प्राई मीन इंडिया।

क्षण भर के लिए वह एक शब्द मरी प्रात्मा मे बिध सा गया।

समुद्र की प्रबाध, असीम गहनता की मानिन्द रहस्यमय यह शब्द जसे अचानक भूली भटकी स्मृति सा मर पास चला आया है इस शाम स्टीमर पर। क्या कभी इस पहचान पाऊँगा ? इस जिन्दगी म क्या कभी इस शब्द के मेरे लिए कोई मानी रह हैं—ऐस मानी जा भ्रमा प्रार पूर्वाग्रहो से अलग सिफ मेरे लिए हा जि ह मैंन खोजा हो

इंडिया उस रोज स्टीमर पर शाम की भीगी, उजली धुप म वह शब्द मरे लिए कितना अजनबी सा हो आया था।

—स्ट्रेंज लंड—उन्होने फिर उस शब्द को धीर से दुहराया मानो व अपन प्रापसे कुछ कह रह हो।

—मैं बहुत घूमा नही हू। सेहत की लाचारी नहीं भी होती तो भी शायद कही नही जाता। कहीं भी जाने से जी घबराता है। इस लिहाज

से आप भाग्यवान हैं। इतनी कम उम्र में आपने बहुत-कुछ देख लिया।

—उम्र कुछ ऐसी कम तो नहीं है—मैंने हँसते हुए कहा—कभी-कभी सोचता हूँ कम उम्र में यहाँ आ जाता तो बहुत-कुछ सीख सकता था।

इस बार उन्होंने रिल्के से अपना चेहरा उठा लिया। उनकी आँखों में हल्का सा विस्मय भी रहा था।

—आप सचमुच ऐसा सोचते हैं! क्या आपको कभी महसूस नहीं हुआ कि वह अचानक चुप हो गए।

पहली बार मुझे लगा जैसे उनके शान्त निर्विकार चेहरे पर एक उद्भ्रान्त सी छाया सिमट आई है।

यूरोप की यात्रा करते क्या आपको कभी महसूस नहीं हुआ कि देयर इज डेथ डेथ इन एयर ऑल एराउण्ड?

मैं स्तब्ध-सा बैठा रहा।

—कोई भी उसे नहीं देखता। हर साल हजारों टूरिस्ट आते हैं आर्ट गैलरीज़ म्यूज़ियम्स पुराने चर्च और कथीड्रल वह सब-कुछ जो बीत गया है उन्हें आकर्षित करता है और उसे देखकर वे वापस लौट जाते हैं लेकिन

उनकी आँखें अधमुँदी सी हो आई, अधूरा वाक्य कुछ देर तक खामोशी में टँगा रहा।

लेकिन इसके परे भी एक यूरोप है वह, जिसे कोई नहीं देखता जो बहुत अकेला है, धीरे धीरे मर रहा है।

उन्होंने रिल्के की पुस्तक उठा ली और उसके भूरे पुराने पन्नों को सहलाते हुए कहने लगे—जिस सेनेटोरियम में मैं रहता हूँ, उसके सामने यहूदियों का सिनागोग है मध्यकालीन गोथिक इमारत। पिछली लड़ाई में जब नाज़ियों ने बेल्जियम पर कब्जा किया, तो अन्य यहूदी धार्मिक स्थानों के संग इस सिनागोग को भी जला डाला था। किन्तु पूरा नहीं उसका एक हिस्सा अब भी साबुत खड़ा है। टूटी इमारत के पास पुरानी ईंटों और पत्थरों का ढेर लगा है जो नाज़ी सैनिक निशानी के तौर पर

पीछे छोड गए थे । जब कभी मैं अपने कमरे की खिडकी के बाहर देखता हूँ तो अनायास मेरी दृष्टि उस ओर चली जाती है । सदियो पुराने पत्थर कभी कभी रात के समय वह टूटी, नगी इमारत काफी भयावह सी दिखती है । शायद मैं उस कमरे मे बरसो स अकेला रह रहा हू, इसी लिए मुझे ऐसा महसूस होता है, किन्तु कभी कभी सोचता हू यह सिर्फ मेरा ही अकेलापन नही है । वह टूटा सिनागोग और उसके जल, पुराने पत्थर, मानो वह किसी चीज का सकेत हो कैसा सकेत, यह मैं आज भी ठीक-ठीक नही समझ पाता ।

वह चुप हो गए । उनके चेहरे पर एक टूटी सी थकान उभर आई थी । मैं उनसे बहुत-कुछ पूछना चाहता था, किन्तु शाम की उस नीरव घडी म उनका मौन कुछ इतना निजी और व्यक्तिगत सा हो आया कि कुछ भी कहना निरथक जान पडा ।

डेक की कुरसिया धीरे धीरे भरने लगी थी । स्टैंड पहुचने म अब ज्यादा दर नही थी । समुद्र जो दिन भर अधीर आतुर स्वर मे चीत्कार करता रहा था, अब किंचित् शा त हो गया था, मानो घिरती शाम के स नाटे ने उसे भी छू लिया हो । पीछे इ गलैंड का तट नीली सी धु ध मे खो गया था, केवल चट्टानो की धूमिल छाया कभी कभी शाम की मिटती धूप म उघड आती थी ।

स्टैंड के परे हम, स्टीमर के सब यात्री, यूरोप के अलग अलग सुदूर कोनो म खो जाएँगे । उनके सग बहुत-कुछ खो जाएगा—चैनल की गत् शाम, समुद्र की अबाध, रहस्यमय शू यता, उनकी निस्प द आंखो मे मौन । शाम की उस नीरव घडी मे, न जाने क्यो एक अजीब सा प्रश्न मन म कौंध गया । मैं अपने देश से हजारो मील दूर, यहाँ क्यो पडा ... हूँ ? मेरे लिए यूरोप के क्या अथ रहे है ? क्या यूरोप मेरे लिए ... अपने से बचाव का ही साधन रहा है—उन सब विवशताओ से, जो सोते-जागते धुँधली छाया-सी मुझ पर मँडराती रहती थी, कुछ अधिक ? एक शब्द बार-बार ध्यान में आता है

बहुत पुराना है मिनानाग क दूर, सून पत्थर सा। जितना वह बड़ा है, उसके सामने अपने को उतना ही छोटा पाता हूँ। किन्तु महीनों पहले यह शब्द इतना भारी नहीं लगा था। तीन दिन भूखा-प्यासा रहकर वियना की सड़कों पर भटकते रहने के बाद जब रात को होटल के कमरे में आया था तो लगा था जैसे भीतर की हर दूरी बहुत पास बहुत आत्मीय सी हो आई है सिर्फ एक डर रह गया है—डर, जो अपने में अपना ही आलोक समेटे है। वियना की उस रात लगा था, जैसे मैं गड्ढे के बहुत नीचे हूँ जिसके नीचे और जाना नहीं होता। तब उन लमहों में, होटल के तंग, सीलन भरे अकेले कमरे में यूरोप का अर्थ धीरे धीरे जोड़ पाया था—टेरर—टेरर ऑफ एनलाइटनमेंट—ऐसा भय, जिसमें मृत्यु और मुक्ति दोनों ही समाहित हैं

वियना की वह रात अब बहुत दूर लगती है। उसके संग बहुत-कुछ दूर हो गया है। अब मैं वापस यूरोप लौट रहा हूँ बीच में चैनल का समुद्र है और दूर सागर के पार 'सी गल्फ' का झुण्ड उड़ा जाता है—डोवर से परे यूरोप के आकाश पर।

स्टीमर की गति धीमी होती जा रही है। सामने स्टेण्ड, शहर का जगमगाती बत्तियों के परे रात—यूरोप की एक रात बहुत दूर तक फैल गई है।

यह भी एक शुरुआत है।

कुत्ते की मौत

फिर यह भी एक रात है। घर के हर प्राणी के कान ऊपर लगे हैं। एक टूटती मरमराती-सी चीख सुनाई देती है। घर का सन्नाटा सिहर जाता है केवल पल भर के लिए। फिर सब पहले सा शान्त हो जाता है।

ऊपर कमरा नहीं था। सिर्फ एक छोटी सी बरसाती थी, जिसे सब लोग नितिन भाई का कमरा कहते थे। जब नितिन भाई वहां न होते—और अक्सर ऐसा होता—तो मुन्नी उसे अपनी गोद में उठाकर भीतर चली आती। दो महीने पहले नन्हे भाई उसे अपनी साइकिल की टोकरी में लाए थे। तब वह बहुत छोटी और हलकी थी जैसे सफेद ऊन का गोला हो। सिर्फ आंखों के पास भूरे बाल थे और एक काली बिन्दी जैसे किसी ने काजल का टिमकना लगाया हो।

नाम दे रखा था लूसी। बाबू हँसकर कहते—मुन्नी तू पागल है। भला कुत्तों का कहीं ऐसा नाम होता है?—कौन समझाए भला? सनक जो है।

नन्हे भाई को वह वहां कैसे मिल गया, यह आज भी रहस्य बना है। किसी ने उनसे पूछा भी नहीं। वैसे उनसे कभी कोई कुछ पूछता हो,

दिन भर कहाँ रहते हैं क्या करते हैं, याद नहीं आता।

पहले, बहुत गुम्म बाबू याडा-चढ़त बुड़बुड़ाते थे। तब नन्हे बाहर चले जाते थे—बिना किसी से कुछ कहे सुने। शाम हो जाती और छत पर उनका पलंग खाली रहता। अम्मा बार बार उठकर दरवाजे पर आहट सुनती। और लूसी उस जगह भनक पड़ जाती। दरवाजे के पास लेटी रहती, सीढ़ियों पर। मुन्नी बुलाती तो हलके से पूँछ हिला देती, लेकिन वापस फिर भी नहीं आती।

गई रात जब नन्हे लौटते तो देर तक लूसी पिछले पंजों पर खड़ी होकर उनसे लिपटी रहती। सब जान जाते नन्हे लौट आए हैं। बाबू साँस खींचकर करवट लेते। नितिन भाई बिस्तर पर लेटे-लेटे सिगरेट जलाते। रसोई में नल खुलने की आवाज आती। सब जान जाते, नन्हे खाने के लिए बैठे हैं।

लूसी बोरी पर सो जाती—निश्चिन्त।

न, पहले वह बोरे पर नहीं लेटती थी। मुन्नी के बिस्तर पर चढ़ने के लिए छटपटाती रहती। किन्तु मुन्नी के अपने कायदे-कानून हैं। दिन भर लूसी इधर लूसी उधर। वह लूसी की छाया है या लूसी उसकी, कहना मुश्किल है। किन्तु रात को उस मुन्नी के बिस्तर पर आने की कड़ी मनाही है। 'लूसी देख, तेरा यह बिस्तर है (मुन्नी बोरे की ओर इशारा करती) और मेरा वह। तू अपने बिस्तर पर सोएगी और मैं अपने पर। इतना सहज, न्याय संगत तक नहीं समझ पाती लूसी, यही आश्चर्य है। दिन भर की थकी मादी मुन्नी सो जाती और लूसी अगले पंजे उसके बिस्तर पर टिकाकर देर तक बिलखती रहती।

फिर एक ऐसे ही दिन नितिन भाई दबे कदमों से उसके पास आये थे। उन्होंने उसे अपने पास बुलाया था। 'बोरा चुभता है लूसी' क्यों? टकटकी लगाये लूसी देखती रही। आँसू ? न सिर्फ अपने की पहचान—एक स्पर्श और गन्ध के बीच की आर्द्रता जो आदमी के अलावा हर प्राणी में होती है और आदमी जिसे नहीं पहचान पाता।

नीचे से एक पुरानी गद्दी उठा लाए नितिन भाई। साफ किया, फिर करीने से उस बारे पर बिछाया और तब लूसी को उस पर लिटा दिया। दूसरे ही क्षण लूसी फिर उछलकर गद्दी से उतर आई।

न, वह ऐसे नहीं लेटगी। इस बार नितिन ने चारों ओर देखा। कोई स्वर नहीं। सिर्फ दूर किसी छत में बीत्तन करताला की गज तिर आती है। सोई थकी सी आवाज़ें। एक छत से दूसरी छत पर उडती हैं एक गुनगुनी सी गूज, गीले कोयलों के धुएँ की मानिंद। बीच बीच में हारमोनियम। आश्वस्त होकर चप्पल उतारी। लूसी को गोद में लेकर स्वयं गद्दे पर लेट गए नितिन भाई। देर तक उसके माथे पर हाथ फेरते रहे। लूसी के माथे पर हाथ फेरा, तो उसे बडा धीरज मिलता है। आँखें मुँद जाती हैं।

और बाल कापते है, हर सास के संग।

चप्पल हाथ मे लिये नितिन भाइ उठते हैं। अपने बिस्तर के पास आकर ठिठक जाते है—किसी ने नहीं देखा। नहीं, शायद किसी ने नहीं देखा। वह अब सो गई थी—लूसी। और उन्हें कुछ अजीब-सा लगा कि अब वे एकदम खाली हैं। सिर्फ सोना शेष है। वह इतनी जल्दी सो जाएगी, उन्होंने नहीं सोचा था। और अब ?

उन्होंने एक और सिगरेट जलाई।

सब-कुछ चुपचाप देखते हैं नन्हे। जुलाई की नरम रात में जुगनू सी चमकती है नितिन भाई की सिगरेट। क्या कभी कोई जान पाया है नितिन भाई के भीतर को ? न जाने अकेले मे लूसी से क्या-कुछ कहते हैं !

हवा चलती है छत पर। चादरें फडफडाती है। नन्हें और भी कस-कर चादर को अपने इर्द गिर्द समेट लते हैं, फिर पलंग पर अपनी देह बिलकुल सीधी कर लेते है। पैताने पर सिर्फ दो पाव ऊपर उठे रहते हैं जैसे किसी ने दो इटें उलटी खडी कर दी हो। चादर के भीतर लगता है, जैसे ये पाँव उनके अपने न हो। सफेद चादर मे अपनी देह को देखते हैं नन्हे—सास रोके।

एक दबी सी सुबकी खिंच आती है। न जाने सपने में मुन्नी क्या देखती है ?

न सपना नहीं है हड़बड़ाकर उठ बैठते हैं बाबू। सिर्फ लेटे थे और नींद घिर आई। गुरू रात की नींद टूटती है तो लगता है, जैसे कोई बीच की सीढ़ी न देख पाए हों एकदम अप्रत्याशित-सा झटका लगता है। हाथ अनायास उठ आते हैं पास रखी तिपाई पर। खाने से पहले की अलग, सोने के बाद की अलग, दवाई की हर शीशी चुनकर तरतीबवार रखी है—तिपाई पर रेडियो पर, पलंग के नीचे। शीशियाँ जैसे दानरज के मु०रे हों कोई न कोई कभी जरूर कारगर साबित होगी—आज नहीं तो कल, कल नहीं तो आने वाले किसी भी दिन।

आने वाले दिन। अँधेरे में टटोलकर बाबू ने टेबल लैम्प जलाया। वहाँ अब कोई नहीं था। सिर्फ एक सरसराहट थी—खिड़की का पर्दा हवा में डोलता हुआ सुराही को छू लेता था, ढक लेता था उस मौन को जो दो सांसों के बीच सिमट आता था। अब उन्हें कोई नहीं देख रहा। दबे कदमों से अलमारी के पास आये। सबसे नीची दराज में वह रखा था—रजिस्टर। बहुत पुराना और जर्द दस वर्ष पहले, जब रिटायर हुए थे इसे खरीदा था। अंगुलियाँ फिरती हैं एक एक पन्ने पर। जब रिटायर हुए थे तो नन्हे ने बी० ए० किया था (सब कुछ दर्ज है रजिस्टर में)। तब नौकरी कर लेते, तो आज लेकिन वैसे देखो तो हमारे नन्हे सबसे अलग हैं। दो पन्नों के बीच आँखें थिर रह जाती हैं निर्तिन, नन्हे और मुन्नी की जन्मतिथियाँ। कौन-से दिन वे रिटायर हुए। किस दिन मकान खरीदा। निर्तिन की नौकरी। किस वर्ष और किस डिवीजन में नन्हे ने बी० ए० पास किया। (अखबार का वह पन्ना आज भी रजिस्टर में रखा है, जिसमें नन्हे का रिजल्ट निकला था और नन्हे के नाम के नीचे पेंसिल की रेखा खींची गई है।)

और तब आँखें सहमा टिक जाती हैं १६ जुलाई लूसी, जिसे दो महीने पहले नन्हे अपनी साइकिल की टोकरी में लाए थे, आज शाम से

बीमार है। बार बार उल्टी करती है। पीडा असह्य है। जान पडता है सुबह तक नही बचेगी।

बस इतना ही । फिर उन्होंने नीद की गोलिया पानी के सग निगल ली। उन्हे कमे मालूम, नीद की सीमा पर एक अजीब सा विचार एक जिद्दी मक्खी सा भिनभिनाता रहा। उन्हें कैसे मालूम कि पीडा असह्य है। एक हलका सा झटका लगता है, जैसे कोई फुसफुसाता हुआ उनके कानो म कह रहा हो—'बच नही सकेगी।'

आदमी 'बचता' कसे है ?

मक्खी उडाने के लिए बाबू हाथ उठाते हैं और उठा रहता है हाथ हवा म —कापता हुआ—जसे ऊपर बरसाती से आने वाली चीख लूसी की न हो, जैसे ।

और आखें मुद जाती हैं अगली चीख की प्रतीक्षा मे।

जुलाई की रात। दूसरी छत फिर तीसरी छता के परे शहर की हवा। कीतन के उनीदे स्वर। बीच बीच मे हारमोनियम। एक दबी सुरीली सी आवाज । नितिन ऊँघते हुए चौंक जाते है। सब आवाजो से अलग। पसीने और शम मे भीगी। हारमोनियम जब ऊँचा उठता है तो वह दब सी जाती है। लेकिन ध्यान से सुनो, तो पूरी नही दबती, पत्थरों के नीचे दबी तितली सी फडफडाती रहती है। शहर के अन्तिम छोर पर जहा पुरानी दीवार है और छाया है उडती चीलो के पखो की यहीं इसी जगह (मुगल बादशाह की दीवार से घिरी हुई) मुन्नी लेट जाती थी और लूसी उसके चारो ओर चक्कर काटती रहती थी जैसे पहरा दे रही हो ।

लूसी का दिल धक धक धडकता है—मुन्नी की छाती से टकराता हुआ—और मुन्नी को अजीब सी गुदगुदी महसूस होती है। लूसी की जुबान लाल पान के पत्ते सी, मुँह के एक तरफ लुढक आती है और थूक की एक एक बूद नीचे टपकती जाती है—कभी मुन्नी की फ्रॉक पर, कभी नगे फश पर।

हवा चलती है छत पर। सब साँसों को समेट ले जाती है—नितिन भाई की अलग, अम्मा की अलग। किन्तु नन्ह ?

देखो, न हे चादर अपने इर्द गिर्द लपेटे लेते ह। पैताने पर दो पाव ऊपर उठे रहते है। खुद अपने को सफेद चादर म लिपटे हुए देखना साँस रुक जाती है । देखो, एक दिन इसी तरह

और तब अचानक वह चीख सुनाई दी थी। अतडियो को फाडती हुई भर्राहट फिर चुनचुनाता सा दद, दद को काटती एक साँस, साँस पर उमडती हुई एक निहायत बेचैन सिसकी और सिसकी को रास्ते म ही तोडती वह चीख (एक नन्ही सी चीख का कितना लम्बा इतिहास)!

अम्मा से और नही लेटा गया। बरसाती की दहरी पर आकर सहसा ठिठक गई। लूसी को छाती से चिपकाकर मुन्नी छत की ओर ताक रही है—विस्फारित आँखो स। तनिक भी हिल नही पाती मुन्नी। जरा सी भी करवट लेती है, तो एक फटी फटी सी कराहट लूसी की देह को मरोडती हुई ऊपर उठ आती है। लूसी की देह मे यह पीडा (क्या पीडा है ? मुन्नी तय नही कर पाती) किस छोर से शुरू होती है, किस छोर पर जाकर खत्म हो जाती है, कोई भी नही जान पाता।

देख मुन्नो इस तरह जी हलका करने से क्या बनेगा ? तू इसे इस तरह छाती से चिपकाए रहेगी, तो क्या इसकी तबीयत सुधर जाएगी ?, अम्मा कहती है मुन्नी सुन लेती है। फिर ये चीखें, जो इतनी भयकर नही, भयकर है दो अलग अलग चीखो के बीच कापता सहमा-सा सन्नाटा।

मुन्नी की आखो म एक गूँगा प्रश्न सिमट आता है—इसका क्या होगा ? यह जो (और मुन्नी देखती है अम्मा क चेहरे को खोजते हुए एक ऐसे शब्द को, जिसे सब जानते हैं लकिन जो मुन्नी के लिए अभी तक अँधेरे मे छिपा है)

इसका क्या होगा ?

कितनी बार यह प्रश्न उठा है माँ क मन में। आज तक अपने को

बचाती चली आई हैं जैसे कोई कीचड़ के गड्ढे को देखकर कपड़े बचाकर किनारे से निकल जाए। लेकिन आज जब मुन्नी उन्हें इस तरह देखती है, तो वे सामना नहीं कर पाती।

वैसे तो बात कुछ भी नहीं। यह छोटी उम्र का पहला पहला दुःख है ज्यादा देर नहीं रहेगा। देहरी से हटकर अम्मा छत पर चली आती है।

छोटी उम्र का दुःख। आखों के आगे गर्मी का भरा भरा सा आकाश फैलता जाता है। यह तो कुछ भी नहीं है मुन्नी देखा तो कुछ भी नहीं। आगे चलकर जब उम्र बढ़ जाती है, तब कितनी मुद्दत बीत गई है, जब पहले पहल घर छोड़ा था एक अजनबी के संग, जो आज उनके बच्चों के पिता हैं ('वे' नीचे लेटे हैं, अब वे रात को 'उनके' कमरे में नहीं जाती वे उनके बच्चों के पिता हैं, यह वे जानती हैं, लेकिन पूरा विश्वास आज भी नहीं हो पाता।), लोग कहते थे, धीरे धीरे पराए शहर, पराए घर में जी लग जाता है। लग जाता होगा लेकिन वे तो लम्बे अरसे तक गुसलखाने में घण्टा छिपी रहा करती थी। 'वे' दरवाजा खटखटाते थे, और वे बेहोश सी पाइप की खुली धार के नीचे लेटी रहती थीं। देह नीली पड़ जाती थी। तब नितिन पेट में था। आज बरसों बाद भी जब वे नितिन को देखती हैं, तो न जाने क्यों पाइप की धार की झुरझुरी देह में सिमट आती है।

सिर्फ इसी कारण? और नितिन का चौंककर आधी रात को उठ जाना? लूसी के बोरे पर लेटकर धीरे धीरे बुदबुदाते जाना यह क्या कुछ नहीं? लगता है, उन्होंने नितिन के संग कोई गहरा अपराध किया है ऐसा अपराध जिसे नितिन खुद नहीं जानता (बहुत पहले चर्चा होती थी नितिन के ब्याह की अब कोई भूलकर भी इशारा नहीं करता)। कभी नितिन उनका बच्चा रहा होगा पलंग पर उनकी देह से सिमटकर लेटा होगा, इस ख्याल से ही माँ को झुरझुरी सी आती है। (शर्म? न, शर्म हो भी तो भी क्या कोई माँ स्वीकार करेगी?)

अम्मा उसके बचपन का चेहरा याद करती हैं, तो बहुत कोशिश करने के बावजूद तो भी याद नही आता। रह रहकर सिर्फ वही चेहरा याद आता है जो उसका आज है जस निर्तिन की यही उम्र चिरन्तन हो।

और अम्मा छाया की तरह घूमती हैं छत पर। एक छोटा सा दायरा है आलोक का, जो सडक के लम्प पोस्ट से कटकर यहा आ पडा है। मुन्नी की निगाह स्थिर है इस दायरे पर, जसे उसका लूसी की पीडा से कोई अज्ञात सम्बन्ध रहा हो और कोई चुपके से सबकी आख बचाकर उसे यहाँ छोड गया हो और अब वह किसी का नहीं है—एक खोयी हुई रोशनी का ढेर या महज एक अन्तराल जिसे लूसी की चीख किनारे पर फेंककर पीछे मुड गई है और वह वहा पडा रहेगा, जब तक दूसरी चीख फिर उमडकर उसे अपने मे नही डुबो लेती।

अम्मा की छाया नन्ह ने अपनी मुटिठयाँ खोल दी और साँस ली जैसे उसकी साँस मुटिठयो मे बन्द थी और अब सहसा वह मुक्त हो गई हो। चादर ऊपर खिच आई। उसने देखा पैताने पर उठे अपने दो पैरो को। अम्मा की छाया का एक भाग पैरो पर गिरता है और वे सिहर जाते है, जसे खुद अम्मा अपने हाथो से उन्ह छू रही हो। तो क्या वह पकड सकता है उस एक खास बिन्दु पर जहाँ वह कह सके यह मैं हूँ, ये अम्मा हैं और यह वह सम्बन्ध है जहा बरसो की घृणा एक बहुत पुराने मोह से जकडी है जकडी है अलग नही हो पाती।

लूसी क्या कभी चुप नही होगी? नन्ह करवट बदलता है। एक बार (कौन सी रात, कौन सा महीना? लूसी की कराहती चीख उस स्मृति को बहुत दूर धकेल ले गई है), एक बार कोशिश की थी नन्ह ने अपने को अलग करने की। मेरी उम्र ज्यादा नही है मैं चाहूँ तो निकल सकता हूँ। कपडो की पाटली मे बाँधा था। कुछ कमीजें दो पैंट एक कम्बल अपनी चन्द किताबें और एक टूथ ब्रश। अपने को छोडकर—यहीं इस बिस्तर पर—सफेद चादर के नीचे, जहाँ वह लेटा है वह धीमे कदमो से

सीढ़ियाँ उतर गया था। वह नीचे उतरकर गली के पार चला आया था। और फिर दूसरी गली और उसके परे बड़ी सड़क, जहाँ से मुगल बादशाह की दीवार दिखाई देती है। कितना आसान था यह यानी एक बार भी पीछे मुड़कर देखे बिना घर छोड़ देना बाहर आ जाना। हाँ, देखो (नन्हे अपने से ही कहते हैं) मेरे जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना कितनी आसानी से घट गई! 'बाहर' अँधेरी सड़क पर, मकानों की दो कतारों के बीच।

नहीं घटी नहीं, घटने वाली थी, और तुमने उसे रोक दिया। नन्हे तुम्हें याद है वह जब तुम बाबू की भयत्रस्त आँखें खुली रहीं। नींद की गोलियों की धुंध सहसा छितरा गई थी और एक क्षण के लिए उन्हें अजीब-सा भ्रम हुआ, जैसे ऊपर बरसाती से आने वाली चीख लूसी की न होकर खुद उनकी है, खुद उनके भीतर से निकली है।

शायद कल तक बच नहीं सकेगी' जैसे कोई गिलगिली सी चीज़ फुफकारती हुई उनकी देह के आर पार निकल गई हो लेकिन याद आता है, ये शब्द उनके अपने ही हैं, यानी अभी कुछ देर पहले उन्होंने खुद अपने हाथों से अपने खाते में दर्ज किये हैं। इनमें शान्ति मिलती है किन्तु इन शब्दों में एक अनोखी, भयानक सी पहचान है। एक कमरा और वे और अपनी देह की गंध। तीन साल पहले ठीक ठीक दिन और महीना आज याद नहीं, लेकिन खाते में सब कुछ दर्ज है। उन दिनों की छोटी से छोटी तफसील। सब कुछ बाद में लिखा था नन्हे और नितिन को पास बिठाकर। उन्हें तो पता भी नहीं चला था कि कब, कौन उन्हें अस्पताल ले आया था। जब होश में आए, तो वे थे और एक अजनबी कमरे की खिड़की, जिसके परे रेल की लाइन दिखाई देती थी। हाँ रेल की लाइन, यह उन्हें आज भी अच्छी तरह याद है। और बर्फ़-सा जमा समय रात और दिन (कितने बरसों बाद उन्होंने शाम के अँधेरे को रफ्ता रफ्ता घिरते देखा था) टप टप पिघलती चेतना, जिसके नीचे वे औंधे पड़े थे।

पीड़ा ? मृत्यु का डर ? नहीं नायद यह नहीं। मापका ता हाग नहीं रहा (उनकी पत्नी कहती है), तब और नितिन ने आपको गोद म उठाकर सीढ़िया से नीचे उतारा था।

लोग बीमारी की चर्चा करते हैं और उनके बारे म कोई कुछ नहीं कहता, जो उन्हाने उस शाम अस्पताल की खिड़की से बाहर देखा था— तीन दिन की बेहोशी के बाद झाड़िया के झुरमुट म रेल की लाइन और हवा बिलकुल बन्द थी और कमरे में वे अकेले थे और तब ।

तब क्या ? कितनी बार उन्होंने अपने मन म उस तब' के बाद खाली जगह म लिखने की कोशिश की है, जैसे वह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है जैसे उस खाली जगह म एक शब्द लिखने मात्र से वे उस चीज का अर्थ समझ लेंगे जिसे उनकी समूची जिन्दगी उस शाम अस्पताल के कमरे म समेट ले आई थी किन्तु जब भी कोशिश करते हैं, रह रहकर एक ही चीज सामने आ जाती है नन्हे और निनिन मुझे उठाकर सीढ़िया के नीचे ले आये थे (गोद म उठाकर) वे और मुझे पता भी नही चला।

—बहुत कम लोग बच पाते हैं । आपके 'फादर' बहुत भाग्य शाली हैं जो जो (और डाक्टर समझ नही पाया, आगे क्या कहे) जो वापस लौट आए हैं '—उसने शालीनतापूर्वक कहा।

बाबू आँखें मूद लेते हैं। खिड़की से हल्की सी चान्दनी आती है। सुराही पर रखा शीशे का गिलास चमकता है और दवा की शीशियाँ और सुनहरी फ्रेम म जड़ा प्रशसा पत्र जो रिटायर होने के अवसर पर उनके सहयोगियो ने उन्हे भेंट किया था चादनी की भूरी रेत सब पर बराबर बराबर बिछ गई है।

मैं लौट आया था। लेकिन कहा से ? किस सीमा पर आकर ?

एक अत्यन्त विस्मयकारी और चमत्कारपूर्ण चीज को छूकर जो 'बाहर है मैं वापस चला आया। जिस घर म मैं बरसो से रहा था, उसे छोडते हुए जरा भी पश्चात्ताप नही, तनिक भी पीड़ा नही। और

उस रात उसे यही चीज़ सबसे अधिक भयावह जान पड़ी थी। वह छुटकारा नहीं था। न वह मुक्ति थी। वह कुछ भी नहीं था। और तब नन्हे का पहली बार हाथ की पोटली निरर्थक जान पड़ी थी। लगा जैसे अँधेरी सड़क पर इस तरह खड़ा रहना काफी हास्यास्पद है (बिलकुल वैसे ही जैसे आत्महत्या करने से पहले—ऐन एक क्षण पहले—किसी व्यक्ति को अपनी शक्ल आईने में दिखाई दे जाए और वह अचानक हँस पड़े)।

वापस लौटते हुए एक अजीब बेढंगा सा विचार आया था। बरसों पहले जब वे छोटे थे, तो सोचा था, एक बार हुआ तो रोम जाएँगे। शायद किसी एटलस में कोलोसियम के खंडहरों की तस्वीर देखी थी।

चाँदनी में छत की बरसाती का कोना। समूचा घर सन्नाटे में लिपटा है। नितिन भाई की छाया दीवार पर सरकती है और फिर स्तब्ध सी ठिठकी रह जाती है।—मुन्नी!—नितिन भाई फुसफुसाते हैं—मुन्नी, देखो मैं हूँ।

किन्तु देर तक कोई स्वर सुनाई नहीं दिया। फिर अचानक झटके से कोई चीज़ लूसी की अंतिम साँस से छूटकर बाहर आ गई। वह जिसे लोग पीड़ा कहते हैं और अब जो खालीपन था, लूसी की चौखट से मुक्त, खुला, अबाध और गंधहीन।

क्या यही? नितिन आगे नहीं सोच पाए। घर, समूचा परिवार एक बोझिल नींद में डूबा था। और मैं? मैं जो इस परिवार में सबसे पहले आया, आखिर तक यहीं बना रहूँगा। नितिन भाई के घुटने नीचे झुक आए। एक दिन ननकू चले जाएँगे और इस बार वापस नहीं लौटेंगे। और मुन्नी? नितिन के मन में एक जबरदस्त इच्छा उठती है कि वे मुन्नी का हाथ पकड़ लें, लूसी की निर्जीव लोथ से, जो उसकी देह से चिपटी है, अलग कर दें। एक ऐसे कोने में खींच लें जो उनके लम्बे अटपटे जीवन से बाहर हो। और नितिन भाई अनहाशा खाँसते हैं शुरू से आखिर तक। क्या आज उनमें कहीं भी ऐसा कोना शेष रहा है?

और मुनी का हाथ पड़ा रहता है थोड़ा गुना-सा, पसीन और सूखी की गिलगिली गरमाहट म लथपथ। किन्तु उसकी आँख अब भी थिर है—आलोक के उस दायरे पर जो गली के लैम्प-पोस्ट स टूटकर घर की छत पर आ पड़ा था एक अपूर्ण रहस्य की आतुर कातरता म भीगा।

छत पर हवा चलती है। चादरें फड़फड़ाती हैं देर तक बरसाती के कोने स मटी एक छाया चाँदनी म बार बार डोल जाती है —मुनी देख यह मैं हूँ।

पहाड

—क्या इस बार हम पहाडो पर जाएँगे ?

हर रात सोने से पहले वह एक ही प्रश्न पूछता था। मा की आखें खिडकी के बाहर अँधेरे पर टिक जाती। पिता की पेंसिल (वे आर्किटेक्ट थे) कागज पर घूमती हुई क्षण-भर के लिए एक जगह ठिठककर फिर घूमने लगती।

दोनो ही शुरू मे अनिश्चित थे। हर पतझड के सग पूरा एक बरस निकल जाता। समय के बीतने के सग वह बडा होता गया था। पिता अभी युवा थे और मा वह अब भी अपने पति को चाहती थी।

मुझे सुखी दम्पती देखने अच्छे लगते हैं और जब वे एक-दूसरे को चाहते भी हो तो वह एक रहस्यमय चमत्कार सा लगता है।

दोनो की पुरानी स्मृतियाँ थी—और ऐसी नही कि एक की अलग और दूसरे की अलग बल्कि एक-दूसरे पर टिकी हुई ताश के घर की तरह, जिसमे एक पत्ता दूसरे से जुडकर ही खडा रह पाता है।

समय के सग एक एक पत्ता जुडता गया था और अब वे एक-दूसरे के सग इस तरह घुल मिल गए थे कि यह कहना मुश्किल था कि कौनसा

पत्ता किसका है या शुरू म किसका था। फिर वह बच्चा भी था।

अक्सर होना यह है कि बच्चे के आने पर पति पत्नी अनायास एक दूसरे के प्रति कुछ थोड़ा सा विरक्त हो जाते हैं, चाहते है एक दूसरे को, लेकिन बच्चे क माध्यम से और यह शुरुआत होती है, अन्त होने की।

किन्तु इस दम्पती के सग ऐसा कुछ नही हुआ। वह बड़ा होता गया था—दोनो के बीच नही—बल्कि अपने मे अलग। जब वे उसकी ओर देखते तो उन्ह हल्का सा आश्चय होता। उसका चेहरा एल्बम म लगी पुरानी फोटो सा जान पडता, जब वे खुद बहुत छोटे थे और एक-दूसरे को नही जानते थे। उन्हे यह चीज़ बहुत विस्मयकारी-सी जान पडती कि कभी ऐसा समय भी रहा होगा जब उनकी स्मृतिया एक दूसरे को लेकर नहीं बनी थी और वे एक दूसरे से पृथक अपने मे अलग अलग *जी रहे थे। उन्हे यह असम्भव लगता और वे इस पर अधिक ध्यान नही* देते थे। उन्ह उन स्मृतियो से ही सन्तोष था, जो उनकी अपनी थी उनके बाहर जो कुछ था वह बाहर था। उसमे झाँकने की उनमे कोई लालसा नही थी।

इन स्मृतियो मे एक खास जगह बना ली थी—पहाड़ों न !

हर रात सोने से पहले बच्चा उनसे पूछता था—क्या इस साल हम वहा जायेंगे।

वे उसे समझाने की कोशिश करते और बच्चे की आख विस्मय से खुली रहती।

एसे ही एक के बाद एक वष गुजरता गया था। फिर एक साल *अक्तूबर के महीने म, जब पत्ते झरने लगते है वे यहा आये थे।* दोनो को यह पहाडी स्टेशन बहुत प्रिय था। विवाह के बाद कुछ दिनो के लिए वे यहा आये थे रिज की बेंच लोअर बाजार जाने वाली पगडडी, पुराने *चचयार्ड का कोना जहा वे अक्सर बठते थे होटल पुराना परिचित था,* उन दिनो बहुत से कमरे खाली पडे थे, शायद पतझड के कारण बहुत कम टूरिस्ट वहाँ आये थे। सौभाग्यवश उन्हें वह कमरा भी मिल गया था,

जहां बरसों पहले उन्होंने अपनी सुखद रातें एक साथ गुजारी थी।

यात्रा की थकान के कारण वे उस दिन होटल के कमरे में ही रहे थे। बच्चा सोता रहा था। दोनों बेसुध से लेट रहे थे—एक दूसरे की बाहों में। पति बार बार उसके होंठों, उसकी आंखों, उसके बालों को चूमता हुआ कहता था—आखिर हम आ गये हैं।

बाहर पतझड़ का हरा आलोक था और भुरभुराए पत्तों की बोझिल गंध, जो हवा में ठहर गई थी।

बच्चा जो जाग गया था चुपचाप अपने माता पिता को देख रहा था। उसकी आंखें बहुत बड़ी और गहरी थीं और जैसा कि कुछ बच्चों में होता है—उन आंखों का समूची देह से कोई सम्बन्ध नहीं जान पड़ता था।

— तुम जाग गए ?—मां ने पास आकर उसके माथे पर हाथ रख दिया और वह अपलक देख रहा था जैसे उसकी मां एक गुड़िया हो।

—क्या आज हम जायेंगे ?—उसने शान्त स्वर में पूछा।

—कहां ?

—पहाड़ों पर।

—पागल ! हम आ तो गए। तुमने बाहर देखा नहीं वे यहां हर जगह हैं।

बच्चा गुमसुम सा बारी-बारी अपने माता पिता को देखता रहा।

—आज शाम ऊपर रिज की तरफ जायेंगे, वहां से तुम उन्हें देख सकोगे।

अंधेरा होने से पहले वे ऊपर चढ़े थे। बच्चे ने गोद में आने से इन्कार कर दिया था। वह उनके संग पैदल ही चल रहा था।

तीनों ने एक-दूसरे का हाथ पकड़ रखा था। शुरू जाड़े के हल्के बादल थे और वे बहुत सफेद थे समूचे पहाड़ी शहर पर एक नीली-सी छाया उतर आई थी। आखिरी धूप के धब्बे चीड़ की सुइयों पर लिपट गए थे सोने के छल्लों से और हवा खामोश थी।

—क्या हम आ गए ?

उत्तर म माँ न बच्चे की आर देखा और हँस दी।

माल रोड पार करने के बाद लाइब्रेरी आई जो चच के सामने थी। लाइब्रेरी की लम्बी खिडकिया पर पत्तो की वल झूल रही थी। जब कभी हवा का हल्का सा झोका आता उनकी छाया किराशिए स काढे गए बेल बूटो सी दीवार पर डोल जाती सब वैसा ही था। कुछ भी नही बदला।

—क्या हम आ गए ?—इस बार कोशिश के बावजूद बच्चा अपनी उत्तेजना नही दबा सका। इतनी चढाई पदल पार करने के बाद उसकी आखें ज्वर ग्रस्त सी हो आई थी।

—क्या तुम देखत नही—पिता ने कहा—उधर वे क्या हैं ?—बच्चे की आख पिता की अँगुली की दिशा मे उठ गइ।

बीच मे नील जगलो के झुरमुट थे और उनके परे बादलो की सुरमई रेखा। मौसम असाधारण रूप से साफ था। हवा के आर पार पारदर्शी धूप थी चाकू की धार सी पैनी—बीच के कोनो, हाशियो को तराशती हुई और उनके ऊपर दूर वे खडे थे, नगी बफ मे लिपटे हुए खामोश और खुद अपनी खामोशी से आतंकित

बच्चे की ज्वर-ग्रस्त आखें असाधारण रूप से चमकने लगी थी। —क्या हम वहा जायेंगे ?

इस पर मा नही हँस सकी। उसके छोटे से स्वर मे एक अजीब परायापन सा था, जिस दोनो ने पहचान लिया था।

—तुम कसे हो हमे यहीं तो आना था—पिता ने कहा। उनके स्वर मे दबी सी झुँझलाहट थी। फिर उन्हे अपनी ही झुँझलाहट पर शम सी हो आई और दूसरी ओर देखने लगे।

—हा हमें यही तक आना था!—मा ने कहा, जसे वह सोती हुई बोल रही हो।

यही तक आगे पहाडियाँ थी धूप की, सुनहरी आभा मे रगी हुई, चुप और स्तब्ध।

चारो ओर था रिज का समतल मैदान और पुराना चर्च खिडकियो के स्टेन ग्लास पर एक तिरछी किरण आ लटी थी और दूर से लगता था जसे वह टूटे काच की दरार हो, जो सिफ भ्रम था और कुछ नही।

—तुम्हें सर्दी तो नही लग रही ?—पति ने पूछा।

—नही मैं ठीक हूँ।—वह क्षण भर के लिए काप गई थी और पति न उस देख लिया था।

वे रिज के एक कोने म खडे थे। सामने हवाघर की बेंचें थी और उनके परे लकडी का जगला था। नीचे घास की ढलान थी, जहा इक्के-दुक्के जुगनू चमक जाते थे। सामने बेंच थी। वह खाली थी और उस पर धीरे धीरे धूल और धूल म सने पत्ते इकट्ठा होते गए थे। वह बहुत साधारण थी और कोई भी नही कह सकता था कि कभी कोई उस पर बठा होगा। लगता था, मुद्दत से वह ऐस ही खाली पडी है।

कुछ देर तक वे उस देखते रहे मानो किसी बहुत पुरानी चीज को पहचान पाने की चेष्टा कर रहे हो और न जाने क्यो, चाहने पर भी वे उस क्षण एक दूसरे को छूने का साहस नही कर पाए।

बच्चा बेंच पर सिर टिकाए सो गया था। सामने पहाडिया थी, जो धीर धीर पतझड के नरम और चमकीले अधकार मे डूबने लगी थी।

पति ने उसके कधे पर हाथ रखा। वह सिहर सी गई और उसन धीरे से उसका हाथ अलग कर दिया।

क्या बात है ?—पति ने तनिक सशकित स्वर मे पूछा।

—मुझे लगता है, हमे इसे यहाँ नही लाना चाहिए था।—उसने बच्चे की ओर देखा और फिर सहसा उसकी आखें अधेरे के उस सुदर धब्बे पर उठ गई, जहाँ कुछ देर पहले पहाड थे और अब कुछ भी नही

—हमे इसे यहाँ नही लाना था—उसने कहा।

—अरे कुछ भी नही। वापस होटल जाने पर यह सब-कुछ भूल जाएगा।

—हाँ सब-कुछ !—पत्नी ने कहा, किन्तु पति ने उसका स्वर

नहीं सुना। वह बहुत धीमा रहा होगा। उसका ध्यान भटक गया था और वह अपने होटल के कमरे के बारे में सोचने लगा था, जहाँ बरसों पहले उन दोनों ने कुछ बहुत सुन्दर रातें गुजारी थीं। अचानक उसका मन उल्लसित-सा हो आया—देखा बदला कुछ भी नहीं।

और वह जैसे आधी नींद से जाग उठी हो—हाँ, कुछ भी नहीं।—उसने कहा।

पति ने उसकी ओर देखा—तुम्हें सर्दी तो नहीं लग रही?

—नहीं मैं ठीक हूँ।

पति ने आश्वस्त होकर लम्बी साँस ली और उसे पास खींचकर धीरे से चूम लिया।

मुझे सुखी दम्पती देखने अच्छे लगते हैं और जब वे एक दूसरे को चाहते भी हों तो वह एक रहस्यमय चमत्कार सा लगता है।

पराये शहर मे

मैं उससे सेण्ट माक के स्कॉयर मे मिला था । स्कॉयर मे भी नहीं उसके ज़रा पीछे पुल के पास, जहा गदोले खडे रहते है ।

वह रविवार की रात था और दूसरे दिन मुझे चला जाना था ।

ऑरकेस्ट्रा पर वे आइदा का ऑपेरा बजा रहे थे उस रेस्तरा के आगे, जहाँ कुछ देर पहले मैं कियान्ती रहा था। कियान्ती खून की तरह लाल थी और लिसलिसी । मुझे कियान्ती अच्छी लगती थी और हालाकि वह लिसलिसी और कसैली थी, तुम कियान्ती को फेंक नहीं सकते।

गर्मी बहुत थी और वह लडकी गाते हुए बार बार पसीना पोछ लेती थी । चारा तरफ भीड थी और सेन्ट माक चच के आगे कबूतर उड रहे थ। शाम की मिटती धूप मे वे भूर मटियाल एजल से लग रहे थे और कभी कभी उनकी बीट मरी जाकेट पर टपक जाती थी ।

—सिन्योरा ओह सिन्योर !

उस छोटे से लडके ने मेरे आगे बहुत-से पिक्चर पोस्टकाड फैला दिए। वे काफी गन्द थे । लेकिन वे खूबसूरत रह होगे । शुरू मे वे काफी खूबसूरत रहे होंगे । अब उन पर मिट्टी और गद जमा हो गई थी । उसके बावजूद

मरी आँखें एक मडोना' के चहरे पर जा टिकी जो वही पीछे स मरी ओर झाँक रहा था। एक गुलाबी चादर उसक सिर पर झुक आई थी और उस पर कुछ हरे उदास धब्बे चमक रहे थ।

लडकी गा रही थी। 'ग्राइदा' का उन्माद और बदहवास पागलपन चच की दीवारों म टकराकर भीड म खो जाता था।

—सिन्योरा यू लाइन मैंडोना!—उसने मडोना का पोस्टकाड मेरे आग कर दिया। अमरीकी टूरिस्टो के सम्पक म रहकर उसन चन्द जरूरी शब्द सीख लिय थ।

—माई लाइक मडोना—मैंन कहा।

–सिफ चार सौ लीरा—उसन मडोना का काड मेरे आग हिलाते हुए कहा।

मैंन कन्धे सिकोड लिए।—नो मनी बबीनो! —मैं आगे बढ़ गया।—मोमेन्तो सिन्योरा तीन सौ लीरा!—मैंडाना का चेहरा मरे पीछे-पीछे भाग रहा था। उसने मेरी जाकेट पकड ली।

—नही बबीनो (बच्चे)—मैंन निराश भाव स कहा।

—ग्राह सिन्योरा तुम मैंडोना को नही चाहते।—लडके के स्वर मे हल्का सा व्यग्य था।

—मैं मैंडोना को चाहता हूँ—मैंन कहा—माई लव मडोना वेरी मच

किन्तु उसने मेरी बात नही सुनी। सुनी भी शायद, तो विश्वास नही किया। दूसरे क्षण वह भीड म खो गया।

उसके साथ मैंडोना का उदास चेहरा भी। मैं भीड से ऊबकर ग्रड कनाल' के सामने चला आया। वेनिस का गम, मला अँधेरा पानी पर सरक रहा था। एक लम्बी मोटरबोट 'लीडो' से वापस आ रही थी। उसकी रोशनी मे पानी की पीली सलवटें दिखाई दे जाती थी। बाहर पब म बठकर मैंने बियर पी—गुनगुनी इटलियन बियर, जो नीचे जान से पहले गले मे अटक जाती थी। वह काफी कमजोर थी। लेकिन वह इतनी कमजोर नही

थी कि चियान्ती की मीठी लिसलिसी पीडा' को दूर न कर सके ।

मैं वापस सेण्ट माक के चौक मे चला आया। लोगो की एक वडी भीड आरकेस्ट्रा के आग-पीछे जमा हो गई थी। जो लाग वाहर रेस्तराओ की कुर्सियो पर बठे थे उन्होने अपनी कुर्सियाँ आरकेस्ट्रा की तरफ माड ली थी।

लडकी बीच स्क्वॉयर मे गा रही थी। वह आइदा का एक आरिया (ओपेरा गीत) था, जो अर्सा पहले मैंने प्राग मे सुना था। उसका स्वर वहुत ऊपर जाकर तन जाना था और तब लगता था जैसे आतिशबाजी के 'अनार' की तरह हवा मे टूट जाएगा और उसके स्वर की रग बिरगी चिप्पिया सारी भीड पर बिखर जाएँगी। लेकिन वह टूटता नहीं था। धुर ऊपर जाकर वह गेहू की बाली-सा नीचे झुक जाता था। नीचे—जहाँ भीड और गम देहो से निकलते हुए पसीने की गन्ध थी। मेरे पास समय काफी था। चौक के अन्तिम छोर पर जाकर मैं एक छोटी सी गली म मुड गया।

दूकानें अब भी खुली थी, लेकिन अब वे वीरान थी। सिफ 'बार' या छोटे काफा के आगे कुछ लोगो के गुच्छे दिखाई दे जाते थे। ऊपर मकानों पर अधेरा था। जान पडता था, गर्मी की उस रात मे वेनिस के सब लोग अपने अपने घरो से निकलकर बाहर सडको पर चले आए थे।

वह गली पुल तक गई थी। वह एक छोटा-सा पुल था। वेनिस क हजारो पुलो की तरह। मैं आगे नही जाना चाहता था। पिछले दिनो मे कई बार रास्ता भूल चुका था। उस रात मैं रास्ता नही भूलना चाहता था, क्योकि अगले दिन मुझे चले जाना था और म चाहता था कि आखिरी घडियो मे सेण्ट माक क आस पास घूमता रहूँ। यदि तुम सेण्ट माक के पास रहो, तो रास्ता भूल जान पर भी ज्यादा फिक्र नही होती। दूर से उनकी ऊँची बुर्जिया दिखाई दती रहती हैं।

पुल के नीचे तीन चार गदोले खडे थे। उन पर छोटी छोटी लालटेन

जल रही थी। उनके मद्धिम आलोक मे कूडा-कचरा दिखाई दे जाता था, जो पानी पर था, लेकिन जिसन पानी को छिपा लिया था।

एक लम्बा, पतला-दुबला सा लडका मेरे सामन चला आया। उसने अपने लम्बे, घुघराले बाल वैसलीन मे चुपड रखे थे। गले मे एक रग-बिरगा रूमाल लटक रहा था।

—गन्दोला ?

—नही—मैंने कहा।

—बिग दूर ग्रण्ड कनाल—उसन हवा म अपनी लम्बी बाँह फैला दी। उस बाँह के भीतर समूची कैनाल समा सकती थी।

मैंने तनिक खेद प्रदर्शित करते हुए सिर हिला दिया।

—माई गन्दोला गूद बेरी गूद!—उसने मेरे कान के पास चीखते हुए कहा।

कोई फायदा नही। मैं वापस मुडने लगा। मुझे उस रात गन्दोला मे घूमने की कोई इच्छा नही थी। लेकिन उसने मुझे छोडा नहीं। उसने सोचा, मैं बहुत अकेला हूँ।

—नो सिग्नोरिना ?—उसने पूछा। फिर उसने एक लम्बी उच्छ-वास ली और दिल पर हाथ रखकर आखें मूद ली।

वह मेरा कधा पकडकर पुल के दूसरे छोर पर ले गया। वह बरा-बर मुझसे इटेलियन, फ्रेंच और अग्रेजी की मिली जुली भाषा मे कुछ कह रहा था जो मै बिलकुल नही समझ पा रहा था। मैंने समझने की कोशिश बहुत पहले छोड दी थी। कोशिश यही थी कि मैं अपने को उससे छुडा सकू, जो असम्भव था।

एक 'पब' के सामने आकर उसन मेरा कधा छोड दिया। उसन दो तीन बार सीटी बजाई और फिर मेरी ओर देखकर मुस्कराने लगा। मैं भी मुस्कराने लगा। म अब उसे छोडकर नही जा सकता था।

मोतिया की झालरवाली चिक को बीच मे से हटाकर एक स्त्री

बाहर आई। उसन पहले उस लडके की ओर देखा फिर मेरी ओर।

एक छोटी सी भीड हमारे पीछे इकठ्ठी हो गई थी। इटली म कही भी आसानी स भीड जमा हो जाती है, चाहे बात कुछ भी न हो।

मेरे साथी ने उस स्त्री से कुछ फुसफुसाते हुए कहा, जो मैं नही सुन सका। अगर सुन भी लेता तो भी कुछ समझ पाना असम्भव था।

वह मेरे निकट चली आई। मैंने उसकी ओर देखा। वह एक विराट काय स्त्री थी। उसन सस्ती जाजट की लम्बी स्कट पहन रखी थी। जुर्राबे नायलन की थी, लेकिन एडियो के पास व घिस गई थी। जान पडता था अर्से से उन्ह धोया नही गया।

वह मेरे पास आई। उसने मरे बालो को छुआ। फिर आखो को

—स्पीक इगलिश ?—उसने पूछा। भीड म खडे लोग हँसने लगे। किसी ने सीटी बजाई और अश्लील सा इशारा किया। किन्तु वह ऐसे खडी थी, जसे वह आदमियो क बीच एक मकान हो। उसे भीड का कोई ख्याल नही था।

—इसके साथ जाओगे ?—उस लडके ने फुसफुसाकर कहा—सिफ पाच सौ लीरा तुम पूरी रात इसके साथ रह सकते हो।

वह मेरा हाथ अपने हाथ मे लेकर अपनी स्कट पर रगडने लगी।

—तुम बालते नही ?—उसने कहा।—मेरा घर बहुत पास है —उसने मुस्कराते हुए कहा। उसकी आखें भारी थी नीद या नशे से कुछ भी कहना असम्भव था।

मुझे लगा, उसके सामने कुछ भी कहना असम्भव है।

वह लडका मेरे और निकट खिसक आया—तीन सौ लीरा सिफ एक घण्टे के लिए।

मैंने उसकी ओर देखा भी नही।

—बबीनो क्या मैं तुम्हारी आखें चूम सकती हू ?—उसने हँसत हुए कहा।

गली के गम अँधेरे मे लोगो की हँसी मुझे कुछ अजीब सी लगी।

वे हमारे बहुत निकट चले आए थे ।

—आह बबीनो ! तुम मुझे नही चाहते ?—स्त्री ने कहा ।

—मैं तुम्हें बहुत चाहता हू —मैंने कहा ।

—देखो यह मुझे नही चाहता ।—उसने भीड की ओर उन्मुख होकर कहा ।

वह लडका इटलियन मे कुछ कह रहा था उसकी कनपटियो पर पसीना और वैसलीन एक दूसरे मे घुलकर बह रहे थे ।

—बबीनो तुम मुझे नही चाहते ।—उसने हँसते हुए कहा—लेकिन देखो मै खूबसूरत हू ।—उसने अपनी स्कर्ट घुटनो से भी ऊपर उठा दी— मैं मडोना से भी ज्यादा खूबसूरत हूँ ।

उसकी बोझिल गाती हुई आवाज भीड के ठहाका मे डूब गई ।

—सियोरे यू लाइक मैंडोना ?—किसी ने हँसते हुए कहा ।

भीड से बाहर निकलकर मैं दुबारा पुल पर चला आया । इस बार उस लडके ने मुझे नही रोका । अब उसे शायद मुझमे या मेरे अकेलेपन मे कोई दिलचस्पी नही रह गई थी ।

मुझे खुशी हुई कि अब मैं सचमुच अकेला हूँ । मुझे इस बात की भी खुशी हुई कि उस लडके ने उस स्त्री को भी अकेला छोड दिया होगा ।

पुल के नीचे पानी का एक हिस्सा खुल गया था—सफेद और खामोश । कुछ दूर से वह एक फटी थिगली सा दीखता था । पानी पर लेटा हुआ, लेकिन अपने मे अलग ।

मैंने दुबारा पुल पार किया—फिर अधेरी सँकरी गलियो से गुजरता हुआ सैण्ट मार्क के चौराहे पर चला आया । चाँद निकल आया था, लेकिन अभी वह बहुत नीचे था । उसका पीला आलोक सिर्फ सैण्ट मार्क की बायजण्टाइन बुर्जियों पर गिर रहा था । कही दूर कैनाल के कोने से मोटरबोट की सूनी आवाज सुनाई दे जाती थी ।

ऑरकेस्ट्रा के लोग बहुत पहले जा चुके थे । बेंचें खाली पडी थी । जहाँ

पहले ग्राइदा की भटकती, पागल ग्रावाज थी, वहा ग्रब पुराने पत्थर थे गम ग्रौर मले। कबूतरो की छाया उन पर डोल जाती थी।

मैं चियान्ती पीने के लिए स्क्वायर के एक सस्ते रेस्तराँ मे बैठ गया। ग्रब मैं दूसरे लोगो की तरह था। वे मुझे नही देख रहे थे—ग्रौर पराये शहर म—ग्रगर तुम्हे कोई नही देख रहा हो, तब ग्रकेलापन नही लगता।

लेकिन मैं आखिर तक उस लडके को खोजता रहा, जो मुझे मैडोना का पोस्टकाड नही बेच सका था। वह भीड मे कही दिखाई नही दिया दो सौ लीरा मे वह ज्यादा महँगा नही था, वह उसे कहीं भी बेच सकता है। लेकिन मैं ग्रब उससे नही मिल सकूगा, मैंने सोचा, क्योंकि कल मैं वह मेरी ग्राखिरी शाम थी ग्रौर यद्यपि—चियान्ती का स्वाद फीका था गम ग्रौर लिसलिसा था, मैं उसे फेंक नही सकता था।

तुम चियान्ती को फेंक नही सकते, न ही उसकी याद को।

जलती झाड़ी

मैं उस शहर म पहली बार आया था। सोचा था, च द दिन यहा रह-कर आगे चला जाऊँगा, किन्तु कुछ अप्रत्याशित कारणो से रुक जाना पडा। दिन भर होटल मे रहता और जब ऊब जाता, तो अक्सर घूमते हुए इस स्थान की ओर कदम बढ जाते। अजनबी शहरो मे भी हर यात्री अपने प्रिय कोने खोज लेता है

वैसे भी कई बार वहाँ जाने को मन हुआ था। रात को किसी सस्ते रैस्तरा की तलाश करते समय अक्सर उस तरफ निगाह चली जाती या कभी ट्राम की खिडकी से पुल पार करते हुए एक दबा सा मोह जग जाता। इच्छा होती, यही उतर जाऊँ। किन्तु एक हल्की-सी हिचक उभर आती, और मैं उसके तले दब जाता।

वह दिन कुछ अलग-सा रहा होगा। मैं दिन भर होटल के अकेले कमरे मे सोता रहा था। फिर कुछ जरूरी पत्र लिखे और उन्हे पोस्ट करने के बहाने बाहर चला आया।

वापस आते हुए मैंने जान-बूझकर रास्ता बदल लिया। सम्भव है, एक धुधले ढग से मैंने अपने को ढीला छोड दिया ऐसा अक्सर होता

है। जब कभी मैं दिन भर साकर बाहर आता हूँ तब अपने को एक नये सिरे से छोड देने की इच्छा होती है—खासकर अजनबी शहरो म जहा हमे कोई नही पहचानता, और हम किसी शम और झिझक के बिना एक रास्ता छोडकर दूसरे रास्ते पर हो लेते हैं।

ऐसा ही एक पतझड का दिन था, जब मैं वहा चला आया था।

वह एक टापू था—शहर के छोर पर जहा पहाडी शुरू होती है। नदी की दो धाराए कैंची की तरह उसे बीच म से काट गई थी। पुल के नीचे लम्बी घास पानी म भीगती रहती थी। किनारे पर दूर दूर लाल तख्ता की बेंचें पडी थी। उन दिनो अक्सर ये बेंचें खाली रहती थी। बिलकुल खाली भी नही पत्ते लगातार उन पर झरते रहते। जब कभी हवा का कोई झोका उ ह उडा ले जाता, तो वही झोका वापस मुडकर दूसरे पत्ता को उन पर बिखरा देता। व कभी ज्यादा देर तक खाली नही रहती थी। पानी बहता रहता। उसकी आवाज के सग हमेशा एक और आवाज मन मे आती थी किसी दिन वहा जाऊँगा।

और ऐसे ही एक पतझड के दिन मैं वहा चला आया था

किनारे किनारे चलते हुए मैं उन बच्चो से अलग था, जो पुल के नीचे खेल रहे थे। उ होने शायद मुझे देखा भी नही। वे पत्तो का ढेर बना देते थे और उ ह माचिस से जलाकर भाग जाते थे। शाम की मद्धिम धूप मे धुए के दायरे फैल जाते थ। एक सोधी सी ग ध टापू के इद गिद हवा मे तिर जाती थी।

मैं पुल से दूर चला आया—दूसरी तरफ जहा पेडो की नगी शाखाए पानी का छू रही थी। वहा गीली घास का एक टुकडा नदं क छोर तक चला गया था। ढलान पर उतरत ही निगाह अचानक उस पर टिक गई। पाँव अनायास ठिठक गए।

वह एक बहुत बूढा व्यक्ति था। एक छोटी सी स्पोट चेयर पर बठा था—बिलकुल निश्चल और खामोश। मुह म पाइप दबी थी, जो न जान कब से बुझ चुकी थी। हाथ में मछली पकडने का काटा था—नदी के

गँदले पानी में दूर तक डूबा हुआ। किन्तु उसका ध्यान काँटे की तरफ़ नहीं था—वह टापू के परे शहर के पुलों की ओर देख रहा था। रह रहकर मुँह में दबी पाइप हिल उठती थी।

वह टापू का नीरव कोना था। मैं निरुद्देश्य घूमता हुआ थक गया था। अपना चमड़े का बैग मैंने भीगी घास पर रख दिया और वहीं बैठ गया।

पास, मेरे बिल्कुल पास, एक नंगा वृक्ष खड़ा था। बारिश में भीगा लेकिन गरम। उसकी गरमाई धीरे धीरे मुझे छूने लगी। पिछले एक सप्ताह से इस शहर पर पानी बरसता रहा था। घास के नीचे मिट्टी नम थी, और इतनी मुलायम कि पैर नीचे दबने लगते थे।

यह पहला दिन था, जब बारिश थमी थी। बादल अब भी थे, कुछ टापू पर, कुछ हटकर शहर की पहाड़ी पर, किन्तु अब वे खाली और हल्के थे और हवा में उड़ते-से जान पड़ते थे।

मैं काफ़ी देर तक वहाँ बैठा रहा। इस दौरान में बूढ़े ने एक भी मछली नहीं पकड़ी। एक बार काँटा हिला था—उसने लपककर डंडी खींची। मैंने सोचा अब एक तड़पता हुआ मांस का लोथ ऊपर आएगा। मैं खुद शायद काफ़ी उत्तेजित हो गया था और पानी के पास सरक आया था। किन्तु कुछ भी नहीं हुआ। उसने नदी से काँटा बाहर निकाला, फिर मेरी ओर देखकर हँसने लगा। काँटा खाली था—मछली बहुत सफ़ाई से अपना आहार चुरा ले गई थी।

हम दोनों फिर अपनी अपनी जगह चुपचाप बैठ रहे। बूढ़े ने अपने काँटे में चारा भरा और फिर दूर हवा में उछालकर पानी में डुबो दिया। बहते पानी पर एक चौड़ा सा दायरा फैल गया—धूप में पारे-सा चमकता हुआ और फिर मिट गया।

उसने अपनी पाइप दुबारा सुलगा ली और पुराने ओवरकोट के कालर ऊपर कानों तक चढ़ा लिये। पानी पर तिरती धूप का एक हिस्सा बच्चों के लट्टू सा घूमता हुआ किनारे आ लगता था और टूट

जाता था। किन्तु बूढे का ध्यान उधर नही था। मैं बहुत सोचता हुआ भी ठीक से निश्चय नही कर पाया कि उसकी आखें किस खास बिन्दु पर टिकी है। उसकी आखें खुली हैं या बन्द, यह भी सही सही कह पाना कठिन था।

किन्तु रफ्ता रफ्ता मेरा भ्रम पक्का होता गया और वह भ्रम किस चीज को लेकर था मैं आज तक ठीक से नही जान सका, किन्तु वह अवश्य किसी अज्ञात सन्देह का द्योतक रहा होगा। वह सिर्फ एक बार मुझे देखकर हँसा था, किन्तु मुझे आश्चर्य है कि क्या इस समय भी उसने मुझे ठीक से देखा था ? यदि नही देखा था तो मेरी ओर उन्मुख होकर हँसने की जरूरत क्या महसूस हुई ?

मुझे अपने भीतर एक अजीब सी बेचैनी महसूस होने लगी। उसे मेरे अस्तित्व का बिलकुल भी आभास नही हालाकि मैं उसके इतने पास बैठा हूँ—यह मुझे अत्यन्त अस्वाभाविक सा जान पडा। अजाने शहरो मे कभी कभी आत्मीयता की भूख कितनी उत्कट हो जाती है, यह उस क्षण से पहले मैं नही जान पाया था।

निस्सन्देह वह कहीं किसी खास चीज पर आख टिकाए था—ऐसा कुछ जो मेरी आखो के घेरे के भीतर छुआ भी मुझसे अछूता था।

किन्तु मैंने कोशिश की। उसकी आखो के सामने शहर का सबसे पुराना पुल था उसके परे नेशनल थियेटर की बारीक दीवारें और छत और बीच मे पुल का टॉवर, जो शाम को डूबती रोशनी मे झिलमिला रहा था। किन्तु ये ऐसी चीजें थी जिन्हे उस शहर मे चलते हुए गलियो से गुजरते हुए हम रोज़ देखते थे। इनमे कुछ भी विशिष्ट कुछ भी असाधारण नही था, कम से कम इस बूढे के लिए तो नही, जो शायद बरसो से इस शहर मे रह रहा है। मेरे भीतर का भ्रम फिर जागने लगा—इसके अलावा भी शायद कुछ और है, कुछ अन्यतम, बिलकुल अलग से

किन्तु क्या यह आदमी देख सकता है ? अचानक मेरे मस्तिष्क मे

यह बेतुका विचार कौंध गया। वह बहुत बूढ़ा है

हवा का हल्का सा झोंका आया—धूप धीरे धीरे उड़ने लगी। समूचे टापू पर एक जड़वत् निस्तब्धता-सी घिरने लगी। पत्ते पानी पर झरते थे और बह जाते थे। सिर्फ धूप के कुछ टुकड़े शेष रह गए थे—पत्थरों पर, टहनियों पर। कुछ देर बाद शाम उन्हें भी बुहार ले जाएगी—सिर्फ हम दोनों वहाँ बचे रहेंगे।

किन्तु नहीं वह जा रहा है। मेरी आँखें अनायास ऊपर उठ आइं। वह सचमुच जा रहा था। उसने मछली पकड़ने के काँटे को पानी से बाहर निकाल लिया कनवास की कुर्सी को लपेटकर बगल में दबा लिया, फिर बहुत पुराना जर्द बाउलर हैट पहना और पाइप मुँह से बाहर निकालकर जेब में रख ली। मछली पकड़ने का झोला—जो खाली था—उसने काँटे की डंडी पर लटका लिया था।

न जाने क्या उस क्षण मेरे भीतर एक अजीब सी झुरझुरी फैल गई। लगा जैसे मैं एक बहुत पेचीदा रहस्यमय ढंग से उस पर आश्रित हूँ जैसे उसके जाने भर से ही मैं कुछ खो दूँगा, जो एक लम्बी मुद्दत से मुझमें पलता रहा है, जैसे उसका यहाँ रहना खुद मेरे रहने से जुड़ा है किन्तु उस क्षण शायद कुछ हुआ शायद सूखे पत्तों की खड़खड़ाहट या शायद कोई पत्थर पानी में लुढ़क गया होगा—और वह चौंक गया जैसे उसके पाँव धरती पर बंधे-से रह गए जैसे किसी ने उसे पकड़ लिया हो। उसने एक बार पीछे मुड़कर देखा, नदी के बहते पानी की तरफ और फिर तेज़ी से कदम बढ़ाता हुआ मेरे सामने से निकल गया।

जाते हुए उसने एक बार भी मेरी ओर नहीं देखा। कुछ देर तक टापू में उसके पैरों के नीचे दबते पत्तों की चरमराहट सुनाई देती रही फिर सब-कुछ पहले-जैसा खामोश हो गया।

ऐसे ही कुछ क्षण बीते होंगे। मैं अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और ठीक उसी स्थान पर आकर बैठ गया, जहाँ कुछ देर पहले बूढ़ा मछुआ बैठा था, गीली मिट्टी पर उसके जूतों के निशान अब भी दिखाई

[illegible] किन्तु [illegible]
[illegible] साधारण [illegible]
[illegible] रहा।

[illegible] कुछ समय [illegible]
[illegible] मुझे कुछ [illegible]
[illegible] बिना [illegible]
[illegible] जहाँ कुछ [illegible]
[illegible] पर कुछ [illegible]
[illegible] पर [illegible]
[illegible] मुख [illegible]

[illegible] जानता मैंने सोचा, [illegible]
[illegible] वहाँ, [illegible]
[illegible] कि मैंने उनमें [illegible]
[illegible] मेरा भ्रम हो, [illegible]
[illegible] हुए हो जाते [illegible]
[illegible] सिरे में [illegible]
[illegible] घर में लौट आएगी।

[illegible] पुल पर टाम [illegible]
[illegible] पानी पर [illegible]
[illegible] रहे थे [illegible]
[illegible] आर-पार [illegible]
[illegible] उनके [illegible]
[illegible] लगी [illegible]
[illegible] मुझे [illegible]
[illegible] था।

कौशिश [illegible]
[illegible]

आई —
हज स
तुम खो
नी, मैली
से अब
चलन से
स बार
कहा—
दे रहा
टूटी।
र कट
लहजे
नोखा
मेरे

बहुत मन्द गति से चले आ रहे थे। इस शहर के अन्य लड़को की तरह उनके सिर गोल, नीली टोपियो से ढँके थे। छोटे लडके के हाथ मे एक चौड़ा रग बिरगा रूमाल था। वह पेड़ो से झरे हुए, पीले मुरझाए पत्ते उस रूमाल म बटोरता जाता था। बड़ा लड़का, जो पहले से कद मे ऊँचा था, कि तु उम्र मे ज्यादा बड़ा नही लगता था, अनमने भाव से एक छोटी सी टहनी हवा म घुमाता हुआ चल रहा था। वे दोनो टापू के अन्तिम छोर पर आ गए थे—उस जगह तक जहाँ किनारे पर लगी झाड़िया पानी मे भीग रही थी।

छोटा लड़का दबे कदमो से ढलान पर उतरा और रूमाल म बँधे सब पत्ते पानी म छोड दिये। फिर उसन अपन कोट की दोना जेबो स कुछ और पत्ते निकाले—गीली मिट्टी मे लिथडे पत्ते—और फिर उन्ह भी दोनो हाथो से बहते पानी मे बहा दिया। इस बीच मुझे महसूस हुआ कि बड़ा लड़का मुझे देख रहा है—अब भी वह छोटी-सी नगी टहनी हवा मे घुमा रहा था। उसके दाँतो के बीच घास का एक तिनका था, जिसे वह बराबर चबाए जा रहा था। छोटा लडका पत्तो को बहाकर ऊपर आ गया। वे दोनो अब एक सग खडे मुझे देख रहे थे।

एक निगाह होती है, सीधी और निश्चित। उसम हम बँध जाते हैं और रील की मानिन्द खिचते चले जाते हैं। मुझे ऐसा अक्सर हो जाता है। सुई की नोक तले जस कोई कीड़ा दब जाता है—बन्दश्वास होकर तिलमिलाता है, फिर ठहर जाता है मन्त्रमुग्ध-सा मूर्च्छित बस ही, बिलकुल बस ही।

फिर बड़ा लड़का आगे बढ़ा। बहुत सहज भाव से वह मेरे निकट चला आया। और मुझे लगा जैसे उसका इस तरह मेरे पास चला आना बहुत स्वाभाविक है, जसे पिछले कुछ क्षणो से मैं खुद उसकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

—आज कैसे हो ?—उसने पूछा। मैं कुछ भी कह पाता कि मुझे लगा, पीछे खड़ा छोटा लड़का बहुत ही विरक्त भाव स मुस्करा रहा है।

—आज भी खाली हाथ हो ?

खाली हाथ ? मेरी आखें अनायास अपने हाथो पर झुक आई —वे सचमुच खाली थे ।

—मरा मतलब इनसे नही है—बडे लडके ने उसी सहज सयत स्वर मे कहा—आज भी तुम कुछ नही पकड पाए ?

—कि तु तुम्हे गलतफहमी हुई है । मैं वह नही हू, जिसे तुम खोज रहे हो । वह तो कब का चला गया ।

—कहाँ ?

मैंने अपने चारो ओर देखा । टापू पर डूबते सूरज की पीली, मली सी ललाहट फैल गई थी । दूर पुल के पास जलते पत्ता के ढेर से अब भी धुआ उठ रहा था, कि तु वह कही भी न था । सिफ हवा चलन से पत्ते बेंचो से लुढककर धरती पर लोटने लगते थे ।

वह अब यहा नही है—मैने कहा, किन्तु न जाने क्या, इस बार मेरे स्वर मे पहले जसी दृढता नही थी ।

लेकिन तुम तो यहा हर रोज आते हो छोटे लडके ने कहा—उधर देखो तुम्हारे बूट के निशान अब भी है ।

मैंने देखा मेरे पैर से सटा अब भी वह निशान साफ दिखाई दे रहा था, भरा भरा-सा चौडा और आगे की तरफ से तनिक वेडौल टटी । उखडी हुई घास के बीच जूते की साफ साबुत छाप । बदन के एक कटे हिस्से की तरह वह निशान गीली जमीन से चिपका रह गया था ।

—किन्तु वह मेरा नहीं है—अत्य त अनिश्चित और कमजोर लहजे म मैंने प्रतिवाद किया । वे चुपचाप खडे रहे । मुझे लगा जसे वे प्रतीक्षा कर रहे हैं कि मैं प्रमाण दने के लिए अपने पर आगे बढाऊँगा । खुद मेरे लिए यह क्रिया बहुत स्वाभाविक होती, कि तु कोई ताक्त मुझे रोके रही । मैं पूरी शक्ति से अपने पैरा को लम्बी घास मे छिपाए रहा ।

फिर कुछ भी नही हुआ । लगा, जसे उस क्षण के बाद उनकी दिल चस्पी मुकम्म ग्तम सी हो गई है । छोटा लडका पूववत् अपने रूमाल म

नीचे गिरे पत्तो को बटोरता हुआ दूर निकल गया। बडा लडका अवश्य कुछ क्षण तक वहाँ खडा रहा था मेरी ओर से बिलकुल उदासीन और तटस्थ।

तब मैं अचानक चौंक सा गया। वह उसी जगह खडा था, जहाँ बूढा चलते चलते कुछ क्षणो के लिए ठिठक गया था। बिलकुल वही जगह और उसकी आँखें उसी अज्ञात बिन्दु पर जा टिकी थी, जहाँ बूढा इतनी देर से एकाटक देख रहा था।

वह महज एक सयोग रहा होगा, उससे ज्यादा कुछ भी नही, क्योकि कुछ देर बाद ही उसने अपने पास पडे एक ढेले को ठोकर मारकर पानी मे लुढका दिया। पानी हिला। कही बहुत नीचे बहुत सी परतें खुलती चली गईं। झाडी के पास गीली मिट्टी पर रेंगती हुई कीडियो की कतार लमहा भर रुककर फिर आगे बढ चली। उसने मुँह का तिनका पानी मे थूक दिया। सिर से टोपी उतारकर उसे हवा मे एक-दो बार झटकाकर पहन लिया और फिर उसी पुराने, अनमने भाव से टहनी को हवा मे घुमाता हुआ छोटे लडके के पीछे चल दिया।

इतना ही हुआ। वे चले गए थे, मुझे अपने पर छोडकर। मैं फिर वहाँ अकेला छूट गया था, किन्तु उनके जाने के बाद पहले का-सा अकेलापन वापस नही आया। जब तक अकेलापन सग रहता है, सही मानो मे तब हम अकेले नहीं होते। अब मैं सिर्फ अपने सग था और मुझे यह खयाल काफी भयानक लगा कि वे दोनो मुझसे कुछ छीन ले गए हैं, जो अब तक मेरे सग था।

उसके बाद मैं ज्यादा देर तक वहाँ नही बैठ सका। मैं फिर अपनी पुरानी जगह वापस आ गया—पेड के तने के पास—जहाँ अब भी मेरा बैग रखा था। हम कितनी जल्दी और कितनी बेचैनी से सुरक्षा की टोह पा लेते हैं।

शहर की पहाडियाँ अब अँधेरे मे छिप गई थीं, किन्तु उनके ऊपर पीछे की ओर उठती हुई गोथिक गिरजे की धूमिल मीनारें एक अधभूल

स्वप्न की तरह हवा मे टँगी थी। उन्हे देखकर लगता था जैसे एक विशालकाय पक्षी उडता हुआ अचानक ठिठक गया हो, पहाडी और खुले आकाश के बीच उसके दोनो पंख ऊपर की ओर मुड गए हो—पथरा गए हो खाली हवा पर।

टापू से कुछ दूर शहर के पुराने पुल की बत्तिया झिझकती-सी एक के बाद एक जलने लगी थी। बहते पानी मे उनकी छाया टिमटिमाती मोमबत्तियो सी काप जाती थी

बहते पानी को देखना शायद बहुत अजीब है। ज्यादा देर तक एक टक देखते रहो तो लगता है, हममे से भी कुछ टूट टूटकर उसके संग बह रहा है। हमारे भीतर दूरी के जो हिस्से है, जिन्हें कभी कभार सोते हुए नीद की चन्द लहरें भिगोकर वापस लौट जाती है जो हमारी आधी अँधेरी जिन्दगी का हिस्सा हैं लगता है, जसे वे स्याह गहरे पानी के भीतर से उन पर झाक रहे हों, हम देख रहे हों।

क्या पहले मैंने कभी देखा है —उन दो लडको को, जो अभी अभी यहा से चले गये थे ? किन्तु इस शहर मे मैं अजनबी हूँ। यदि आज रात अचानक मैं यहाँ से चला जाऊँ, तो होटल के मैनेजर और पुलिस के अलावा किसी को कुछ भी पता नही चलेगा। नही, यह मेरा भ्रम है। उन्होने जरूर मुझे पहचानने मे गलती की है। ऐसा धोखा अक्सर हो जाता है। हो सकता है वे मजाक कर रहे हो। बच्चे अक्सर विदेशी को देखकर मजाक करते हैं।

मुझे हल्की सी खुशी हुई कि व अब चले गये हैं और मैं जान बूझ कर यह खुशी अपने से छिपाता रहा, जैसे मैं उस पर शर्मिन्दा हूँ। टापू पर सिफ जलते हुए पत्तो पर से दो चार बुझती हुई लपटें उठ जाती थी। बच्चे उन्ह इसी तरह जलते छोड बहुत पहले चले गय थे। और अब चारो तरफ खामोशी थी—वसी ही अटूट और अनवरत, जस बहत पानी का स्वर। इस बीच टापू और नदी की सीमा रेखा मिट गइ थी या मिटी नही थी—अँधेरे म पानी को पहचानना मुश्किल था। बहुत गौर

भेदती, मंत्र मुग्ध साप की तरह बल खाती हुई मुझे लपेट लेती थी। झाडी बार-बार हिल उठती थी मानो उनकी गरम, बोझिल सासो का भार न सँभाल पा रही हो। उनके नीचे दबे पत्ते बार बार चरमरा उठते थे।

एक दबी उफनती सी चीख फिर सिसकती सी कराहट, फिर वह भी नही एक खाली हल्की हवा और तब सब कुछ पहले जैसा था न हो गया।

मुझे आज भी यह सोचकर अपने पर हैरानी होती है कि मैं वहा से चला क्यो नही आया। जो कुछ झाडी के पीछे हो रहा था, उसके प्रति मेरे मन म न कोइ जिज्ञासा थी, न जुगुप्सा कौतूहल भी नही। फिर भी मेरे पाव नही उठे मैं जडवत् बैठा रहा।

कुछ देर बाद व बाहर आ गए। या शायद मुझे आभास हुआ कि वे दोनो झाडी के बाहर आये हैं, हालांकि मैं उस क्षण सिर्फ लडकी को ही ठीक स देख पाया था। उसने अपने बाल ठीक किये। स्कर्ट पर जो पत्ते और तिनके चिपक आए थे उन्हें करीने से, एक एक करके अलग किया। फिर वह झाडी स कुछ दूर आगे चली आई—दरिया के पास। मैं अपने आश्चय का नही दबा पाया जब मैंने देखा कि वह उसी जगह बठ गई थी जहा पहले बूढा और बाद मे मैं कुछ दर के लिए बैठा था।

मैं उसे देख लेता हूँ। उसने सिगरेट जला ली है। उसक बाल बहुत छोट हैं—बिलकुल लडको के स काले रग की बरसाती पहने है, बटन खुले हैं जिसके नीचे स्कर्ट घुटनो तक ऊपर खिसक आया है। एक दबी, खिची साँस के सग धुआँ बाहर निकल आता है आखें अधमुँदी-सी रह जाती हैं

—देखा तुमने ?—वह धीरे स बुदबुदाई। मैं चुप रहा। वह अ न स ही कुछ कह रही है—मैंने सोचा और चुप रहा।

—मुझे लगा जैसे तुम चले गय हो।

—आपने मुझसे कुछ कहा ?

वह हँसने लगी ।

—और यहा कौन है ?

फिर भी वह मेरी ओर नही देख रही थी । वह दरिया के दूसरे छोर पर देख रही थी—एक ही बिन्दु पर । मुझे सहसा खयाल आया कि बूढा मछुआ भी उसी ओर देख रहा था पुलो और चच की बुर्जिया के परे—जहा शहर की रोशनिया खत्म होती हैं अँधेरा शुरू होता है ।

—तुम पहले ही चले आए ?—उसने कहा ।

—मैं मैं यही था—उसने मुझसे ही पूछा था और इस बार मुझे पहले जैसा विस्मय नही हुआ ।

—और वहा ?—उसने पीछे मुडकर झाडी की ओर सकेत किया ।

मैं कुछ भी नही समझा, उसकी ओर प्रश्न भरी निगाहो से देखता रहा ।

वहा मैं अकेली नही गई थी ।

—वह फिर हँसने लगी। इस बार वह हँसी पहले-जसी नही थी । उसमे एक वीभत्स अविश्वास भरा था, जसे मैं पकड लिया गया हूँ । वैसे ही जसे हम गलती से किसी अपरिचित घर का दरवाजा खटखटा लें और इससे पेशतर कि हम लौट पाएँ, कोई हमारा हाथ खीचकर हम भीतर घसीट ले

—लेकिन आपके सग मैं सहसा सहम जाता हूँ अनायास मेरी आखें झाडी पर उठ जाती है । हवा चलने से एक-दूसरे से उलझी टहनिया हल्के से अलग हो जाती हैं बीच म फँसी पत्तिया फट जाती हैं । पहचान लेना मुश्किल नही है । मैं पहचान लूगा और वह जान जाएगी कि मैं वह नही हूँ जो उसन समझा है ।

—वह वहा है । मैंने उस आपके सग देखा था ।—मैंने कहा ।

किधर देखा था ? उसके स्वर मे एक बहुत निरीह, कातर सी

आशा उभर आई, जैसे मेरे उत्तर पर उसका बहुत-कुछ निर्भर है, जैसे उसकी नियति का धागा मेरे शब्दो मे बँधा है

—किधर देखा था ?

—देखिए, उधर झाडी मे वह अब भी है।

—वह कौन ?

झाडी कापती है जसे उसके भीतर ही-भीतर कुछ जल रहा हो।

वह मेरे निकट सरक आई क्या मैं सच हूँ ? एक नरम सी सर-सराहट हुई, जैसे उसन मेरे भीतर एक पन्ना उलट दिया हो।

और वह जसे आखिरी पन्ना हो, उसके आगे कुछ भी नहीं।

और मुझे लगा जसे उस शाम दूसरी बार किसी ने मुझसे अपने 'सच' का प्रमाण माँगा हो। झाडी मुझसे सिर्फ तीन कदम दूर है—तीन कदम भी नही, शायद उससे भी कम। मुझे वहाँ जाने मे बहुत कम समय लगेगा। मैं पहले एक कदम लूगा, फिर दूसरा और फिर वह मेरे सामने होगा। हर कदम मुझे उस झाडी के पास ले जाएगा जहाँ वह है, अब भी है।

इसमे कुछ भी मुश्किल नही, कोई भी डर नही। यह इतना सहज और आसान है कि मेरा दिल तेजी से घबराने लगता है। मै सिर्फ एक कदम लूगा—और फिर सोचूगा कुछ भी नही दूसरा कदम लूगा और तब—तब बहुत कम समय लगेगा और मैं एक ऐसी उम्र मे पहुच गया हूँ जहा इतना समय ज्यादा मानी नही रखता। देखो (मैं अपने से कहता हूँ), देखो वह प्रतीक्षा कर रही है। साँस रोके, मेरी ओर स देह भरी दृष्टि से देखते हुए। कुछ ऐसे ही जैसे वह लडका तिनका चबाता हुआ मेरी ओर देख रहा था

मैं खडा हो जाता हूँ—झाडी की तरफ बढता हूँ। उसकी आँखें मुझ पर चिपकी हैं। आज तक किसी ने मुझे इतनी आतुर, विह्वल आँखो से नही देखा। एक देखना होता है, जिसम हम बँध जाते है सिमट जाते हैं। उसका देखना ऐसा नही था। वह देख रही थी, मुझे धकेलते हुए

जमे अपने से अलग करते हुए। और मैं ठहर जाता हूँ—अपने को खींच कर रुक जाता हूँ। जिन्दगी में जवाबदेही का लमहा एकदम किस तरह आ जाता है जब हम उसकी बहुत कम प्रतीक्षा कर रहे होते हैं, जब वह हमारे लिए न हो, किसी दूसरे के लिए आया हो, दूसरे के लिए नहीं तो तीसरे के लिए तीसरे के लिए नहीं तो चौथे, पाँचवें, छठे के लिए चाहे जिसके लिए हो हमारे लिए नहीं है। लेकिन वह है कि काँपते चीखते हाथों से हम पकड़ लेता है—किन्तु हम ताकतवर हैं और अपने को छुड़ा लेते हैं और सोचते हैं यह एक दुःस्वप्न है, जो अभी बीत जाएगा और आँखें खोलकर वही देख लेंगे, जो देखना चाहते हैं जिसके हम आदी हैं और फिर हम जवाबदेह नहीं रहेंगे किसी के भी नहीं, किसी के प्रति भी नहीं

किसी के प्रति भी नहीं। मैं भागने लगता हूँ। भागने लगता हूँ और पीछे मुड़कर नहीं देखता। मेरे पीछे झाड़ी है और उसकी वीभत्स मुतैली हँसी जो देर तक मेरा पीछा करती रही है लहू के कतरों की तरह मेरे भागते पैरों के पीछे टपकती रही है

उस रात मैं होटल नहीं जा सका। सारी रात शहर के शराबखानों के चक्कर काटता रहा। शराबियों के संग, उनके कंधों में हाथ डालकर गाता रहा। जब मैं थककर एक शराबखाने में सो जाता, तो वे मुझे घसीटकर बाहर सड़क पर फेंक देते और फिर कुछ देर बाद दूसरे शराबी मुझे अपने संग किसी अन्य शराबखाने में ले जाते और मैं इस तरह बारी बारी सोता, जागता गाता घिसटता हुआ समूचे शहर की अँधेरी गलियों में घूमता रहा।

आप विश्वास करें, आज तक मैंने कभी आत्महत्या के बारे में नहीं सोचा—मेरा मतलब है, अपनी आत्महत्या के बारे में—वैसे एक बौद्धिक समस्या के रूप में अवश्य दोस्तों से बात की है कभी कभी एक अजीब-सा विचार तंग करने लगता है। सोचता हूँ यदि उस रात कोशिश करता तो शायद कर सकता था

जैसा आप देखते है, मैंने उस रात आत्म हत्या नही की। उसके बाद भी नही। लेकिन यह जानते हुए भी कि मैं ज़िन्दा हू, पतझड की उस शाम के बाद अक्सर शका होने लगती है कि मरने के लिए आत्म-हत्या बहुत जरूरी नही है

दूसरे दिन सुबह मैं वह शहर हमेशा के लिए छोडकर आगे चला गया।

दहलीज

पिछली रात रूनी को लगा कि इतने वरसो बाद कोई पुराना सपना धीमे कदमो से उसके पास चला आया है, वही बगला था, अलग कोने मे पत्ता से घिरा हुआ वह धीरे धीरे फाटक के भीतर घुसी है मौन की अथाह गहराई मे लॉन डूबा है शुरू माच की बसन्ती हवा घास को सिहरा-सहला जाती है बहुत वरसा पहल क एक रिकाड की धुन छतरी के नीचे से आ रही है ताश के पत्ते घास पर बिखरे हैं लगता है, जैसे शम्मी भाई अभी खिलखिलाकर हँस दग और आपा (बरसो पहले, जिनका नाम जेली था) बगले के पिछवाडे क्यारियो का खोदती हुई पूछेगी—रूनी, जरा मेरे हाथो को तो देख, कितने लाल हो गए हैं।

इतने वरसा बाद रूनी को लगा कि वह बगले के सामन खडी है और सब कुछ वैसा ही है, जसा कभी वरसो पहले, माच के एक दिन की तरह था कुछ भी नही बदला, वही बगला है, माच की खुश्क, गरम हवा सायँ सायँ करती चली आ रही है सूनी-सी दुपहर का परद के रिङ्ग धीमे धीमे खनखना जाते हैं और वह घास पर लेटी है बस, अब

अगर मैं मर जाऊँ उसने उस घडी सोचा था।

लेकिन वह दुपहर ऐसी न थी कि केवल चाहने भर से कोई मर जाता। लान के कोने मे तीन पेडो का झुरमुट था, ऊपर की फुनगियाँ एक दूसरे से बार-बार उलझ जाती थी। हवा चलने से उनके बीच आकाश की नीली फाक कभी मुद जाती थी, कभी खुल जाती थी। बगले की छत पर लगे एरियल पोल के तार को देखो, (देखो तो घास पर लेटकर *अधमुँदी आखो से रूनी ऐसे ही देखती है*)*तो लगता है कैसे* वह हिल रहा है होले होल अनझिप आखो से देखो (पलक बिलकुल न मूँदो, चाहे आखो मे आसू भर जाएँ तो भी रूनी ऐसे ही देखती है) तो लगता है, जैसे तार बीच म से कटता जा रहा है और दो कटे हुए तारो के बीच आकाश की नीली फाक आसू की सतह पर हल्के हल्के तैरने लगती है

हर शनिवार की प्रतीक्षा हफ्ते भर की जाती है। वह जेनी को अपने स्टाम्प एल्बम के पन्ने खोलकर दिखलाती है और जेली अपनी किताब से आखें उठाकर पूछती है—अर्जेंटाइना कहाँ है? सुमात्रा कहा है? वह जेली के प्रश्नो के पीछे फैली हुई असीम दूरियो के धूमिल छोर पर आ खडी होती है। हर रोज नये नये देशो के टिकटो से एल्बम के पन्ने भरते जाते हैं, और जब शनिवार की दुपहर को शम्मी भाई होस्टल से आते हैं, तो जेली कुर्सी से उठ खडी होती है, उसकी आखो म एक धुली धुली सी ज्योति निखर आती है और वह रूनी के कन्धे झिझोडकर कहती है—जा जरा भीतर स ग्रामोफोन तो ले आ।

रूनी क्षण भर रुकती है, वह जाए या वही खडी रहे? जेनी उसकी बडी बहन है उसके और जेली के बीच बहुत से वर्षों का सूना लम्बा फासला है। उस फासले के दूसरे छोर पर जेली है शम्मी भाई हैं वह उन दोनो म से किसी को नहीं छू सकती। वे दोनो उससे अलग जीते हैं। *ग्रामोफोन महज एक बहाना है, उसे भेजकर जेली शम्मी भाई के* संग अकेली रह जाएगी और तब रूनी घास पर भाग रही है 1

तरफ पीली रोशनी मे भीगी घास के तिनको पर रेंगती हरी, गुलाबी धूप और दिन की धडकन हवा दूर की हवा के मटियाले पत्ते एरियल-पोल को *सहला जाते है सर सर और गिरती हुई लहरो की तरह झाड़ियाँ* झुक जाती है। आखो से फिसलकर वह बूँद पलको की छाह मे कांपती है जैसे वह दिल की धडकन है जो पानी मे उतर आई है।

शम्मी भाई जब होस्टल से आते है तो वे सब उस नाम लॉन के बीचो बीच कनवास की परासूटनुमा छतरी के नीचे बैठते हैं। ग्रामोफोन पुराने जमाने का है। शम्मी भाई हर रिकार्ड के बाद चाभी देते हैं, जेली सुई बदलती है और वह रूनी चुपचाप चाय पीती रहती है। जब कभी हवा का कोई तेज झोका आता है तो छतरी धीरे धीरे डोलने लगती है, उसकी छाया चाय के बतन टीकोजी और जेली के सुनहरी बालो को हल्के से बुहार जाती है और रूनी को लगता है कि किसी दिन हवा का इतना जबरदस्त झोका आयेगा कि छतरी धडाम से नीचे आ गिरेगी और वे तीनो उसके नीचे दब मरेंगे।

शम्मी भाई जब अपने होस्टल की बातें बताते हैं, तो वह और जेली विस्मय और कौतूहल से टुकुर टुकुर उनके चेहरे उनके हिलते हुए होंठो को निहारती ह। रिश्ते मे शम्मी भाई चाहे उनके कोई न लगते हो किन्तु उनसे जान पहचान इतनी पुरानी है कि अपन पराये का अन्तर कभी उनके बीच आया हो, याद नही पडता। होस्टल मे जाने से पहले *जब वह इस शहर मे आये थे तो अब्बा के कहने पर कुछ दिन उन्ही के* घर रहे थे। अब कभी वह शनिवार को उनके घर आते है तो अपने सग जेली के लिए यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी से अग्रेजी के उपन्यास और अपने मित्रो से मांगकर कुछ रिकार्ड लाना नही भूलते।

आज इतने बरसो बाद भी जब उसे शम्मी भाई के दिये हुए अजीब-गरीब नाम याद आते हैं तो हँसी आए बिना नही रहती। उनकी नौक *रानी मेहरू के नाम को चार चाँद लगाकर शम्मी भाई ने उसे कब सदियो* पहले की सुकुमार शहजादी मेहरुन्निसा बना दिया, कोई नही जानता।

हुआ एरियल पोल दिखाई देता है।

हवा मे उडती हुई शम्मी भाई की टाई उनका हाथ, जिसकी हर अँगुली के नीचे कोमल सफेद खाल पर लाल लाल से गडढे उभर आए थे, छोटे छोटे चाँद से गड्ढे जिन्हे अगर छुओ, मुटठी म भीचो, हल्के हल्के से सहलाओ तो कैसा लगेगा ? सच कैसा लगेगा ? किन्तु शम्मी भाई को नही मालूम कि वह उनके हाथ को देख रही है, हवा म उडती हुई उनकी टाई, उनकी झिपझिपाती आखो को देख रही है।

ऐसा क्यो लगता है कि एक अपरिचित डर की खट्टी खट्टी सी खुशबू उसे अपने मे धीरे धीरे घेर रही है, उसके शरीर के एक एक अग की गाठ खुलती जा रही है मन रुक जाता है और लगता है कि लान से *बाहर निकलकर वह धरती के अतिम छोर तक आ गई है और उसके* परे केवल दिल की धडकन है जिसे सुनकर उसका सिर चकराने लगता है (क्या उसके सग ही यह होता है या जेली के सग भी ?)

—तुम्हारी एल्बम कहा है ?—शम्मी भाई धीरे से उसके सामने आकर खडे हो गए। उसने घबराकर शम्मी भाई की ओर देखा। वह मुस्करा रहे थे।

—जानती हो, इसम क्या है ?—शम्मी भाई ने उसके कधे पर *हाथ रख दिया। रूनी का दिल धौंकनी की तरह धडकने लगा। शायद* शम्मी भाई वही बात कहने वाले है, जिसे वह अकेले मे, रात को सोने से पहले कई बार मन-ही मन सोच चुकी है। शायद इस लिफाफे के भीतर एक पत्र है जो शम्मी भाई ने चुपके से उसके लिए केवल उसके लिए लिखा है। उसकी गदन के नीचे फ्राक के भीतर से ऊपर उठती हुई कच्ची सी गोलाइयो मे मीठी मीठी सी सुइया चुभ रही है मानो शम्मी भाई की आवाज न उसकी नगी पसलियो को हौले से उमेठ दिया हो। उसे लगा, चाय की केतली की टीकोज़ी पर जो लाल नीली मछलियाँ काढी गई हैं वे अभी उछलकर हवा म तैरने लगेंगी और शम्मी भाई सब कुछ समझ जाएगे उनसे कुछ भी न छिपा रहेगा।

शम्मी भाई ने वह नीला लिफाफा मेज़ पर रख दिया और उसमे से टिकट निकालकर मेज़ पर बिखेर दिए ।

—ये तुम्हारी एल्बम के लिए है

वह एकाएक कुछ समझ नही सकी । उसे लगा, जैसे उसके गले म कुछ फँस गया है और उसकी पहली और दूसरी सास के बीच एक खाली अँधेरी खाई खुलती जा रही है

जेली जो माली के फावडे से क्यारी खोदने म जुटी थी उनके पास आकर खडी हो गई और अपनी हथेली हवा मे फलाकर बोली—देख रूनी, मेरे हाथ कितने लाल हो गए हैं !

रूनी ने अपना मुँह फेर लिया । वह रोयेगी, बिलकुल रोयेगी, चाहे जो कुछ हो जाए

चाय खत्म हो गई थी । मेहरुन्निसा ताश और ग्रामोफोन भीतर ले गई और जाते जाते कह गई कि अब्बा उन सबको भीतर आने के लिए कह रहे हैं । किन्तु रात होने मे अभी देर थी, और शनिवार को इतनी जल्दी भीतर जाने के लिए किसी के मन म कोई उत्साह नही था । शम्मी भाई ने सुझाव दिया कि वे कुछ देर के लिए वाटर रिजर्वायर तक घूमने चलें । उस प्रस्ताव पर किसी को कोई आपत्ति नही थी । और वे कुछ ही मिनटो म बगले की सीमा पार करके मैदान की ऊबड-खाबड ज़मीन पर चलने लगे ।

चारो ओर दूर-दूर तक भूरी सूखी मिट्टी के ऊचें-नीचें टीलो और टूहा के बीच बेरो की झाडिया थी, छोटी छोटी चट्टानो के बीच सूखी घास उग आई थी, सडते हुए पील पत्तो से एक अजीव, नशीली सी, बोझिल कसली गन्ध आ रही थी धूप की मली तहा पर बिखरी-बिखरी सी हवा थी ।

शम्मी भाई सहसा चलते चलते ठिठक गए ।

—रूनी कहाँ है ?

—अभी तो हमारे आगे आगे चल रही थी—जेली न कहा । उसकी

सास ऊपर चढती है और बीच मे ही टूट जाती है।

दोनो की आखें मदान के चारा ग्रार घूमती हैं मिट्टी के टूहा पर पीली धूल उडती है। लकिन रूनी वहाँ नही है, वर की सूखी, मटियाली झाडिया हवा म मरसराती हैं लेकिन रूनी वहा नही है। पीछे मुडकर देखा तो पगडडिया के पीछे पडो के झुरमुट मे बगला छिप गया है, लाल की छतरी छिप गइ है केवल उनके शिखरो के पत्ते दिखाई देते ह, और दूर ऊपर फुगनिया का हरापन सफेद चादी मे पिघलने लगा है। धूप की सफेदी पत्ता स चादी की बूँदा सी टपक रही है।

वे दोना चुप है शम्मी भाई पेड़ की टहनी से पत्थरा के इद गिद टेढी मेढी आकृतिया खीच रहे ह। जली एक बडे से चौकोर पत्थर पर रूमाल बिछाकर बैठ गई है। दूर मदान के किसी छोर से स्टोन कटर मशीन का घरघराता स्वर सफेद हवा मे तिरता आता है, मुलायम रुइ म ढकी हुई आवाज़ की तरह जिसके नुकीले कोने झर गए हैं।

—तुम्हे यहा आना बुरा तो नही लगता ?—शम्मी भाई ने धरती पर सिर झुकाए धीमे स्वर म पूछा।

—तुम झूठ बोल थे—जेली ने कहा।

—कैसा झूठ जेली ?

—तुमने बेचारी रूनी का बहकाया था, अब वह न जाने कहा हम ढूँढ रही होगी !

—वह वाटर रिजर्वायर की ओर गई होगी कुछ ही देर म वापस आ जाएगी—शम्मी भाई उसकी ओर पीठ मोडे टहनी से धरती पर कुछ लिख रहे है।

जेली की आखा पर एक छोटा सा बादल उमड आया है—क्या आज शाम कुछ नही होगा, क्या जिन्दगी म कभी कुछ नही होगा ? उसका दिल रबर के छल्ले की मानिद खिंचता जा रहा है खिंचता जा रहा है।

—शम्मी ! तुम यहा मेरे सग क्या आये ? और वह बीच मे ही रुक गई। उसकी पलको पर रह रहकर एक नरम-सी आहट होती है

और व मुद जाती हैं, अँगुलियाँ स्वय चालित सी मुटठी म भिच जाती हैं फिर अवश सी आप ही आप खुल जाती हैं ।

—जेली, सुना

शम्मी भाई जिस टहनी स जमीन का कुरेद रहे थ वह टहनी काप रही है । शम्मी भाई के इन दो शब्दो के बीच कितने पत्थर हैं, बरसो सदियो के पुराने, खामोश पत्थर, कितनी उदास हवा है और माच की धूप है, जो इतने बरसो बाद इस शाम को उनके पास आई है और फिर कभी नही लौटेगी । शम्मी भाई ! प्लीज ! प्लीज ! जो कुछ कहना है, अभी कह डालो, इसी क्षण वह डालो ! क्या आज शाम कुछ नही होगा, क्या जिन्दगी म कभी कुछ नही होगा ?

व बगले की तरफ चलने लगे—ऊबड खाबड धरती पर उनकी खामोश छायाएँ ढलती हुई धूप म सिमटने लगी । ठहरो ! बेर की झाडियो के पीछे छिपी हुई रूनी के होठ फडक उठे, ठहरो एक क्षण ! लाल भुरभुरे पत्तो की ओट मे भूला हुआ सपना झाकता है, गुनगुनी सी सफेद हवा, माच की पीली धूप, बहुत दिन पहले सुने हुए रिकाड की जानी-पहचानी ध्वनि जो चारो ओर फैली घास के तिनको पर फिसल गई है सब-कुछ इन दो शब्दो पर थिर हो गया है जिन्ह शम्मी भाई ने टहनी से धूल कुरेदते हुए धरती पर लिख दिया था जेली लव

जेली ने उन शब्दो को नही देखा । इतने बरसो बाद आज भी जेली को नही मालूम कि उस शाम शम्मी भाई ने कापती टहनी से जेली के पैरो के पास क्या लिख दिया था । आज इतने लम्बे अर्से बाद समय की धूल इन शब्दो पर जम गई है । शम्मी भाई, वह और जेली तीनो एक दूसरे स दूर दुनिया के अलग अलग कोनो मे चले गये हैं किन्तु आज भी रूनी को लगता है कि माच की उस शाम की तरह वह बेर की झाडियो के पीछे छिपी खडी है (शम्मी भाई समझे थे कि वह वाटर रिजर्वायर की ओर चली गई थी) किन्तु वह सारे समय झाडियो के पीछे साँस रोके, निस्पन्द आखों से उन्हे देखती रही थी उस पत्थर को देखती रही थी,

जिस पर कुछ देर पहले तक शम्मी भाई और जेली बैठे थे । आँसुओं के पीछे से सब कुछ धुँधला धुँधला सा हो जाता है शम्मी भाई का कांपता हाथ जेलो की अधमुदी सी आँख, क्या वह उन दोनो की दुनिया म कभी प्रवेश नही कर पाएगी ?

कही सहमा-सा जल है और उसकी छाया है उसने अपने को देखा है, और आखें मूद ली है । उस शाम की धूप के परे एक हल्का-सा दद है, आकाश के उस नीले टुकडे की तरह, जो आसू के एक कतरे मे ढरक आया था । इस शाम से परे बरसो तक स्मृति का उद्भ्रान्त पाखी किसी सूनी घडी म ढकी हुई उस धूल पर मँडराता रहेगा, जहा केवल इतना भर लिखा है, 'जेली लव' ।

उस रात जब उनकी नौकरानी मेहरुन्निसा छोटी बीवी के कमरे मे गई तो स्तम्भित सी खडी रह गई । उसने रूनी को पहले कभी ऐसा न देखा था ।

—छोटी बीवी, आज अभी से सो गई ?—मेहरू ने बिस्तर के पास आकर कहा ।

रूनी चुपचाप आँखें मूदे लेटी है । मेहरू और पास खिसक आई । धीरे से उसके माथे को सहलाया —छोटी बीवी क्या बात है ?

और तब रूनी ने अपनी पलकें उठा ली छत की ओर एक लम्बे क्षण तक देखती रही उसके पील चेहरे पर एक रेखा खिच आई मानो वह एक दहलीज हो जिसके पीछे बचपन सदा के लिए छूट गया हो

—मेहरू, बत्ती बुझा दे—उसने सयत निर्विकार स्वर म कहा—देखती नही, मैं मर गई हूँ ।

कधे से अलग कर दिया ।

—कल पन्द्रह मिनट पहले आ जाना । अगर कुछ लोग कल नहीं आये, तो तुम्हें ले लिया जाएगा । गुड नाइट ।—और वह चला गया ।

यह दूसरी रात थी । ट्यूब स्टेशन की सीढ़िया चढ़कर ऊपर आया तो देखा कल की चान्दनी आज पूरी तरह निखरकर फली है । दूर मिल की चिमनियों के बीच लन्दन का धूमिल आकाश सिमट आया था ।

मुझे दुबारा रास्ता टटोलना पडा । मैं उन सडको पर दुबारा चलने लगा, जिन पर कल चला था जो अब परिचित थी, किन्तु चादनी म अजीब सी अजानी दिखाई दे रही थी ।

किन्तु नाथ एक्टन स जरा आगे चलकर मरे पाँव खुद-ब-खुद ठिठक गए । सोचा था आज मैं जल्दी आ गया हूँ और गेट पर मेरे अलावा कोई दूसरा नही होगा । किन्तु मेरा अनुमान सही न था । वहाँ पहल से ही बीस पच्चीस बेरोज़गार युवको की भीड जमा थी । अग्रेज़ लडके कुछ छात्र, जो देखने मे बर्मी जान पडते थे, दक्षिणी अफ्रीका और वेस्ट इण्डीज के नीग्रो—सब अलग अलग गुच्छो म खडे थे । सबकी आँखें गेट पर टिकी थी । कुछ के चेहरे जाने पहचाने लगते थे । उन्हें शायद कल रात देखा था । उन सब की आखें मुझ पर उठ आईं, खामोश और तनी हुई । मुझे लगा, जसे उस खामोशी म एक अजीब-सा भय उभर आया है, मेरे प्रति उतना नही जितना उस अज्ञात नियति के प्रति, जिसका निणय अगले चन्द लमहो मे होने वाला था ।

मैं भी उनके सग एक कोने के खडा रहा—उनसे डरता हुआ, फिर भी उनसे बँधा हुआ ।

पौन नौ के करीब मैनेजर हमारे पास आये । मुझे तनिक निराशा हुई । वह कल वाले सज्जन नही थे, जिन्होने मरे कन्धे पर हाथ रखा था । उनके हाथ मे कागज़ का एक पुरज़ा था । हम सब उनके पास खिसक आए —चिडियाघर के उन मूक, निरीह जन्तुओ की भाँति जो कुछ भी पाने के लालच से यन्त्र-चालित गति म सीखचो के पास घिसटते आते

है। एक क्षण के लिए उन्होंने हमें देखा। हमारे खुले, नंगे, भावहीन चेहरे उन्हें अजीब-से भयावह लगे होंगे क्योंकि उन्होंने अपनी आँखें जल्दी ही कागज पर झुका लीं और तेजी से एक के बाद एक नाम पढ़ने लगे।

वे सब लोग छाँट लिये गए, जिन्होंने पिछली रात काम किया था। उनके अलावा सिर्फ तीन और लड़कों को चुना गया—दो लावारिस-से दीखने वाले अंग्रेज युवक और एक दक्षिणी अफ्रीका का विद्यार्थी, जो सबसे आगे खड़ा था और बार बार झुककर मैनेजर के कानों में कुछ फुसफुसा देता था।

—आज इतना ही—उन्होंने सहानुभूतिपूर्ण भाव से हमारी ओर देखा—आप लोग कल आइये, शायद कुछ आदमियों की जरूरत पड़ेगी।

भीड़ में से तीन चार युवकों ने आगे बढ़कर उनसे बहस करने की कोशिश की किन्तु उन्होंने बहुत असहाय भाव से अपने हाथ हिला दिए और मुस्कराती आँखों से हमारी ओर देखते हुए भीतर चले गये।

हमारी प्रतीक्षा का अन्त आ पहुँचा है इसे जानते हुए भी हममें से कोई उस पर विश्वास नहीं कर सका। मैनेजर के जाने के बाद भी हममें से कोई अपनी जगह से नहीं हिला। लगता था, जैसे पिछले तीन मिनटों में जो-कुछ भी घटा बढ़ा है, वह अभी अपूर्ण है, एक ऐसा अवास्तविक तथ्य, जिसका शायद हमसे कोई वास्ता नहीं अभी कुछ ऐसा है जो बाकी है जो प्रतीक्षा के बाद भी अपने दरवाजे खुले रखता है हममें से बहुत से ऐसे थे जो ट्यूब में तीन या चार शिलिंग का टिकट लेकर लन्दन के सुदूर कोनों से यहाँ आये थे। हम सबके हाथों में एक एक थैला था, जिसमें हमने रात की ड्यूटी के कपड़े और खाने का सामान बाँध रखा था। हममें से किसी के लिए भी यह विश्वास करना कठिन था कि हम अगली ट्यूब से वापस लौट जाना होगा। पाइप से निकलता गुनगुना पानी, चाँदनी में झिलमिलाते कीचड़ के गढ़े यहाँ तक कि नाली में पड़ी एक खाली बोतल हमें काफी अप्रासंगिक और बेतुके-से जान पड़े—हम शायद यह भी भूल गए कि हम यहाँ किस लिए आये थे। चन्द लमहों

पहले जो नौकरी न मिलने का दुःख था, अब वह सिर्फ एक बदौल, विकृत बोझ-सा हमारी टाँगों पर इन्ट गिर्द लिपट गया था, जिसे हम दुबारा घर तक घसीट ले जाना होगा।

उस क्षण भूख और निराशा के बावजूद हमारे मन में कहीं भी कोई खीझ या कटुता नहीं थी।

किन्तु कुछ लमहों के लिए ही। सहसा वह मायावी क्षण टूट गया। हम फिर वापस अपने अपने में लौट आए। एक लम्बी, वाञ्छित सी साँस उस अदृश्य बदौल भीड़ के ऊपर उठी और चन्द मटमैली, अनगल गालियों में खो गई। एक दूसरे की देह की गन्ध—जिसे हम पास-पास खड़े सूँघ सकते थे गालियों के बावजूद अपना सकते थे—अब अलग अलग रास्तों पर छितरान लगी थी। केवल हम तीन व्यक्ति अब भी अहाते के भीतर अनिश्चित-सी मुद्रा में खड़े रहे। मेरे पीछे हल्की-सी सरसराहट हुई।

—बनडी-बास्टड !—पहले व्यक्ति ने कुछ दर कुछ भर्राए-से स्वर में कहा। वह आगे बढ़ आया। भयभीत, आशंकित आँखों से चारों ओर देखा और फिर बोतल की टोकरिया के ढेर से सोडे की एक बोतल निकालकर पीने लगा। दूसरी बोतल उसने तीसरे व्यक्ति के हाथ में जबरदस्ती पकड़ा दी—पियो यार, उन सालों को कुछ भी पता नहीं चलेगा !

तीसरा व्यक्ति, जो कम उम्र का नीग्रो छात्र सा दीखता था, बोतल लेने में झिझक रहा था किन्तु फिर न जाने क्या सोचकर उसने अपने सिर को हल्का सा झटका दिया और एक दूध पीते शिशु की तरह बोतल को दोनों हाथों से पकड़कर होंठों से लगा लिया। एक लम्बा घूँट लेकर उसने नंगी बाँह से अपना मुँह पोछा और बोतल मेरे सामने कर दी।

—यह तीसरी बार है जब यहाँ मैं आया हूँ। कल जिस बाबू ने काम देने का वायदा किया था आज वह दिखाई नहीं दिया।

—कल भी ऐसा ही होगा। कोई नया बास्टड आयेगा और उसे पता नहीं चलेगा कि हम आज रात आये थे।

—कल कौन आयेगा—मैं तो इस तरफ झांकूगा भी नही। डम दीज

पहले व्यक्ति ने अपने ओवरकोट के बटन खोल दिए। इतनी गरमी मे ओवरकोट पहने था—इससे मुझे खास आश्चय नही हुआ। उसका व्यक्तित्व कुछ ऐसे ढग स ओवरकोट से जुडा था कि एक को दूसरे से अलग करना ही आश्चयजनक होता। वह एक लम्बा हृष्ट पुष्ट युवक था, छोटी सी 'गोरी' दाढी थी, जिसके पीछे आखें एक सूखी तिक्त बौखलाहट म झपकती रहती। बौखलाहट भी नही एक अजीब सा नवस तनाव जो अकसर शिकार किये जाने वाले जानवरो मे मिलता है। हालिवुड के विलेन-सा उसका डील डौल अँधेर म किसी भी अजनबी को काफी भयावह लग सकता था।

हम धीरे धीरे कदम बढाते हुए नाथ एक्टन के पुल पार आ गए थे। लन्दन की डबल डक्र बस हमारे पास से गुज़र गई। अगस्त महीने के पीले करारे पत्ता का रेला देर तक बस के पीछे भागता रहा।

तीसरा व्यक्ति, नीग्रो युवक, अब भी काफी उदास था और चुपचाप सडक पर आखें झुकाए चल रहा था।

—लन्दन मे कब से हो?—दाढीवाले युवक ने (बाद मे जिसन अपना नाम विली बताया था) नीग्रो के कन्धे पर हाथ रखकर पूछा।

वह चुप रहा।

—कहा से आये हो?

—दक्षिणी अफ्रीका से यहा पढता हू।

वह शायद बात को यही खत्म करना चाहता था। उसने जेब से सिगरेट का पैकेट निकाला और हम दोना के आगे कर दिया। हमने धन्यवाद देकर आखें मोड ली। यह उसकी आखिरी सिगरेट थी और अपनी भूखी लालसा के बावजूद हममे इतनी शिष्टता बाकी थी कि उसे लेने से इनकार कर दें। किन्तु यह शिष्टाचार अधिक देर तक न चल सका। कुछ देर बाद हम तीनो उस सिगरेट को बारी बारी से पी रहे थे।

सामने लन्दन की रात थी—बोमिल, गँदली, शान्त। वह शहर था एक उजाड कोना था और सडक खाली थी। खाली, लेकिन वीरान नहीं। पत्तों की मरसराहट, पुराने मकानों की बासी गन्ध—लगता था, जैसे बीच में हम अनेक निष्प्राण चीजों को ठेलते हुए आगे बढ रहे हैं—हालांकि बीच में हवा और लम्प पोस्ट के दायरों के अलावा कुछ भी न था

—तुम कहाँ जाओगे ?

—वारेन स्ट्रीट—उसने कहा—पिछले दो दिनों से आ रहा हूँ। अब तक पाँच पॉण्ड सिर्फ आने-जाने में खर्च हो गए। इतने पैसों में तो मैं टेनिस खेलने जा सकता था।

उस समय टेनिस खेलने की चर्चा काफी विचित्र जान पडी—उसके चेहरे से भ्रम होता था कि पिछले कई दिनों से उसे भर-पेट खाने को भी नहीं मिला है।

—मेरे दोस्त को काम मिल गया है—नीग्रो छात्र ने तनिक उत्साह-पूर्वक कहा—हम दोनों साथ रहते हैं। कल शायद वह मुझे कुछ शिलिंग उधार दे सकेगा।

—डेम हिम—इफ ही इजण्ट !—विली ने अजीब खीझे स्वर में कहा—मैं तो कल किसी हालत में नहीं आऊँगा। प्लीज़ कम टुमारो ! मैनेजर की नकल उतारते हुए उसने मुँह सिकोड लिया—टुमारो वि डैम्ड ! तुम कल आओगे ?—उसने पहली बार मेरी ओर उन्मुख होकर पूछा।

—शायद आऊँगा—मैंने जान बूझकर उसे कुछ अधिक खिझाने के लिए कहा। उसके इस समय 'कल' की बात करने से मुझे काफी अफसोस हुआ था।

—साले कितना देते हैं ?

—ढाई पाउण्ड—नीग्रो छात्र ने कहा।

—हर सुबह ?

—हाँ हर सुबह। *आधी रात के समय चाय और सेण्डविचेज़ भी देते* हैं—मेरा दोस्त बता रहा था। कल मैं और वह संग आये थे, उसे ले

लिया गया, मैं रह गया।

—नीग्रो था ?

—नहीं, वह बर्मी है।

—और आप ?—विली ने संदिग्ध भाव से मेरी ओर देखा जैसे अपनी नजरों से मुझे तौल रहा हो—आप क्या जापानी हैं ?

मैंने सिर हिला दिया। इतनी सी बात पर उसका प्रतिवाद करना मुझे निरर्थक जान पड़ा।

कुछ देर तक हम चुपचाप ट्यूब स्टेशन की ओर चलते रहे। जब कभी गरम हवा का झोंका आता, हम सिहर जाते। तब हमारी भूख अपने सब पैबन्द तोड़कर उघड़ जाती। लगता, जैसे हवा लैम्प-पोस्ट के पीले मद्धिम आलोक को तोड़ जाती हो, तोड़कर अपने संग बहा ले जाती हो।

—गरमी काफी है पिछले पांच साल से ऐसी गरमी नहीं देखी।

—पिछले पांच साल से लन्दन में हो ?

—शायद ज्यादा तब से कई काम कर चुका हूं। अब ज्यादा नहीं रहूंगा।

—क्या वापस घर जाओगे ?—विली ने पूछा।

—घर ?—नीग्रो छात्र आज के स्वर में एक सूना सा खोखलापन उभर आया, मानो 'घर' शब्द बहुत विचित्र हो, जैसे उसने पहली बार उसे सुना हो मैं चाहता था, यहीं रहूं। लेकिन वे हमें चाहते नहीं।

—वे आह !—विली ने कहा।

वे अनायास हमने चारों ओर देखा। कोई भी न था, हालांकि वे हर जगह हर समय हमारे संग थे। हमारे बाहर उतने ही, जितने भीतर —तुम यहीं थे, जब नाटिंग हिल में फसाद हुआ ?— विली के सफेद दांत चमक उठे।

—नहीं, तब मैं लन्दन नहीं आया था।

—मैं वहीं रहता हूं। तीन दिन तक एक अंग्रेज लड़की के घर छिपा रहा। जब वे एक एक नीग्रो को चुनकर लिंच कर रहे थे, मैं उस सफेद

'ह्वोर' के सग सोता रहा । उसने सोचा था, मैं उसे चाहता हूँ लेकिन मैंने उसे उसके बाद देखा तक नही । उसे नही मालूम, मैं बदला ले रहा था उसकी सफेद चमडी के सग और उसने हाथ म इशारा किया —अश्लील उतना नही जितना जुगुप्सामय ।

दूर कारखाना के धुएँ के पर ट्यूब-स्टेशन की बत्तियाँ चमक रही थी । लगता था, जैसे धरती का कोई टुकडा अचानक बीच म स फट गया हो और उसके नीचे स हीरों की चमचमाती झालर ऊपर निकल आई हो।

—तुम यहाँ पढ़ते हो ?

—हाँ लेकिन गरमियो की छुट्टिया म काम करता हूँ । पहले डाम के लिए जाता था ।—जाज न कहा । उसका स्वर भी काफी उदास था, जस काम न मिलन का दु ख अभी पूरी तरह न मिटा हो ।

—काटीनेण्ट म क्यो नही जाते, यार ?—विली न कहा—मरा एक दोस्त जमनी गया है, वहा नौकरियो की कमी नही । सुना है वहाँ लडकियाँ काले रग के पीछे भागती हैं—सिफ इशारा करने की देर है ।

—शायद पिछली लडाई की वजह से—जाज न कहा—कुछ साल पहले मेरे फादर वहाँ गये थे । कहते थे *कहीं आदमी नजर नहीं आता । हर तरफ औरतें*

—ओह, हाऊ आई विश फार एनदर वार एनदर एण्ड देन एन दर !—विली ने कहा ।

जाज ने आश्चय से विली की ओर देखा, फिर मरी ओर । वह शायद कुछ कहना चाहता था किन्तु फिर कुछ सोचकर उसने सिफ सिर हिला दिया । कहा कुछ भी नही ।

और शायद यह ठीक भी था । ल दन की उस खामोश गरम रात म 'वार' बहुत दूर की चीज लगती थी—अथहीन और हास्यास्पद । उस पर बहस करना कोई भी मानी नही रखता था । हुआ भी यही । हम बहुत जल्द विली की बात को भूल गए । उसके बाद हम देर तक अलग अलग देशो की लडकिया के बारे मे बातें करते रहे । लगता था जसे पुरानी

भूख के भीतर से एकाएक नई भूख जाग गई हो।

मैं स्पेन जाना चाहता था। उधर की लडकियाँ आह! पैगन! लेकिन साला ने वीसा नही दिया। अपने देश की कुँवारियो की वर्जिनिटी का उन्हें बहुत ख़याल है!

स्पेन किसी ने जैसे कुछ बहुत पुरानी राख कुरेद दी हो।

—तुम गये हो?

—मैं जाना चाहता था—बहुत पहले।

—सिविल वार मे?

—तब मैं बहुत छोटा था।

—सिविल वार हमारे देश म शायद और जाज अचानक चुप हो गया। उसके घुँघराले बालो पर पसीने की बूँदें चमक रही थी।

—आई डोण्ट लाइक सिविल वार—विली ने कहा।

हमारी बात फिर वही आ अटकी थी—बगाटेल की उस गोली की तरह जो चारो ओर घूम फिरकर एक ही छेद मे आ फँसती है। हमारा उससे कोई वास्ता नही था। वह लन्दन की बहुत खामोश और गरम रात थी और वार बहुत दूर की चीज लगती थी

रास्ते के दाइ ओर एक पुरानी टेवन से हँसी और सगीत का मिला जुला स्वर बह आता था। टेवन के पीछे गली गली के अधेरे कोने मे दो छायाएँ—एक-दूसरे से लिपटी हुई—बार-बार हिल उठती थी। ऊपर उठी हुई स्कर्ट के नीचे एक सुडौल नगी टाँग रह रहकर काँप जाती थी और फिर टटोलते हुए विह्वल हाथो के नीचे भिंच जाती थी।

—चलो, कुछ बियर पी जाए। बिना कुछ पिये मैं ठीक से सो नही सकता—विली ने कहा।

मुझे हलकी सी दुविधा हुई। मेरी जेब मे आखिरी दो शिलिंग पडे थे, जो मैंने ट्यूब के लिए बचा रखे थे। जाज का हाल ज्यादा बहतर नही दिखाई दिया। विली के प्रस्ताव को सुना अनसुना किए वह अँधेरे मे सीटी बजा रहा था।

किसी शायर ने ग़ज़ल कहा। पास के [illegible] कहा—फिर भी मज़ा नहीं। यहाँ के लोग मुझे जानते हैं—एक ज़माने में यहाँ [illegible] था।

[illegible] एक दरवाज़ा [illegible] पर [illegible]।

—मैं शायरी [illegible]। [illegible] है [illegible] कुछ [illegible] उधार दे सकता।

हमारे पाँव एक बार रुक गए।

दरवाज़ा खोलते ही आवाज़ों के एक रेले ने हम दोनों को समेट लिया—धुएँ में डूबी उलझी एक-दूसरी को छीलती आवाज़ें, जो कहीं [illegible] उबलते पानी की तरह एक ही [illegible] हो गई थीं। रोशनी थी मद्धिम, धुएँ के घेरे में घिरी, जिसमें किसी एक चेहरे को पहचानना, उसे दूसरे से अलग कर पाना असम्भव था।

नीचे बेसमेंट था कुछ सीढ़ियाँ उतरकर। कभी हमारे नाचते हुए जोड़ों की छायाएँ ज़ीने पर गिर जाती थीं। कभी बेडौल और लम्बी, कभी इतनी छोटी कि लगता जल पारदर्शी जल-तल मछलियाँ ऊपर उठती हों और दूसरे क्षण ही डूब जाती हों।

हम कोने की मेज़ पर इस तरह बैठ गए। किसी कुछ देर बाद बियर की तीन बोतलें और गिलास ले आया। हम पीने लगे।

—पहले मैं यहाँ काम करता था। कुछ महीने रहा फिर मन ऊब गया। इस पब का मालिक इटालियन है। बुरा नहीं है लेकिन डरता बहुत है। इस तरफ़ आया तो तुमसे मिलवाऊँगा—बिली ने कहा।

—काफ़ी टिप मिलता होगा ?

—अंग्रेज़ ज़्यादा नहीं देते। बहुत हुआ तो एक छः पेनी। लेकिन कान्टीनेण्ट से जो टूरिस्ट आते हैं, उनकी बात दूसरी है। दिल उनका खुला होता है लेकिन बेवकूफ़ ये भी होते हैं।

—मुझे अब कोई भी काम मिल जाए मैं कर लूगा—जाज ने कहा।

भीतर की गाठो बीच बियर न रास्ता बनाया है—जहा पहले बन्द सींकचा था अब वहाँ फडफडाते पख है—उडने को आतुर।

—मैं अब ज्यादा दिन यहाँ नही रहूँगा—विली ने कहा—मेरा दोस्त जमनी मे है। हो सका, तो एक दिन वहा जाऊँगा—विली ने गिलास खतम कर दिया। फिर उसे मेज पर उलटा कर दिया एक भी बूद नही गिरी। बियर का झाग दाढी पर छितर आया था, जसे रेत के कण हो—गीले और सफेद।

—मैं जमनो को नही सहन कर सक्ता—जाज ने फिर कहा।

देयर इज, रियल लाइफ! हर कोने पर जवान लडकिया खडी रहती हैं—विली ने कहा।

—मैं जमनो को सहन नही कर सकता—जाज न कहा।

मै हँसने लगा।

जाज ने मेरी ओर देखा। उसकी आखें बहुत निरीह सी हो आई थी।

—सब लोग एक-जैसे ही है—विली ने कहा।

—लेकिन वे लोग जाज ने इशारा किया—बाहर की ओर, दरवाजे क बाहर, जहा महज़ अँधेरा था।

—वे लोग भी तुम सिफ डरते हो—विली न कहा।

एक पल के लिए जाज का हाथ, जो गिलास पर टिका था, सिहर गया।

—यू आर य राटर—जाज न कहा।

उसके स्वर मे कुछ रहा होगा कि विली का चेहरा अचानक पीला पड गया।

—देखो, मैं काफी बुरा आदमी हू। इस लफ्ज़ को दुबारा मुह पर कभी न लाना।

—ओह! सचमुच?—जाज की आवाज़ काँप रही थी जैस वह हवा म लटकी रस्सी पर चल रही हो और नीचे गड्ढा हो, जहा वह कभी

भी पिघल सकती है—प्रेस, यू आर ए राइटर।

विली गिलास लेकर मेज पर खड़ा हो गया, जैसे वह कोई रस्म हो, और नियम के अनुसार उसे खड़ा होना ही हो।

—एक बार फिर यहाँ उसका गिलास जाज के सिर के पास सरक आया था। काँच पर बिखरी बियर का फेन रोशनी में चमक रहा था।

जाज की भसभुसी आँखें उस पर उठ आईं—यस, यू आर ए राइटर ऑल राइट!

गिलास तले उसका सिर हिल रहा था। आदमी का सिर पूरे धड़ से अलग होकर केवल अपनी धुरी पर इस तरह काँप सकता है, यह मुझे काफी हास्यास्पद सा लगा।

विली ने गहरे विस्मय से उसकी ओर देखा और फिर हँसने लगा—शायद तुम ठीक हो, माई एम—वह फिर अपनी कुरसी पर बैठ गया।

हमने पराग नहीं पी थी—सिर्फ किसी ने हमारे इर्द गिर्द एक भयावह सा फंदा डाल दिया, जिसे छूते ही खून बहने लगता था।

कुछ देर बाद पब का मालिक हमारी मेज के पास आकर खड़ा हो गया। गोल मटोल देह, किन्तु काफी सुगठित, रंग काफी पीला। छोटे-से माथे पर तेल से भीगे, स्याह घुँघराले बाल झुक आए थे।

—और चाहिए?—उसने मुस्कराते हुए विली की ओर देखा।

—अभी है, बाद में—विली ने कहा। उसके स्वर में पहले-सा तनाव नहीं था, हालाँकि तिरस्कार का स्पर्श हमसे छिपा नहीं रह सका। ये मेरे दोस्त हैं।

इटालियन ने हमारी ओर देखा, किन्तु उसकी आँखों में कोई उत्सुकता नहीं जगी।

—विली हमारे यहाँ काम करता था—उसने गर्व से विली की ओर देखा, मानो उसे हम लोग विली की तुलना में काफी तुच्छ जान पड रहे थे।

—काफी देर से हो ?—उसने पूछा ।

जाज चुप रहा (ईश्वर भला करे, उसका सिर अब नही काप रहा था) मैं खाली गिलास से खेल रहा था मेरे हाथ रुक गए ।

—सिफ कुछ दिन—मैंने कहा ।

—इजण्टिट फाइन ?

—इट इज फाइन—मैंने कहा ।

—कोई काम ?—वह मेरी कमीज के कालर को देख रहा था । न जाने कितने देशो की धूल उस पर जमा थी ।

—अभी कुछ नही

—विली को काम मिल सकता है लेकिन यह एक जगह टिकता नही—उसने विली की ओर देखा कुछ प्यार से, कुछ उलाहने से ।

—मैं तुम्हारे यहाँ रह सकता था । सिफ तुम विली ने कहा ।

इटालियन का चेहरा अचानक क्षुब्ध सा हो आया—तुम जानते हो उसने कहा ।

—आह—विली ने कहा—तुम सब लोग एक जैसे ही हो ।

—बहुत गर्मी है—जाज ने कहा ।

—तुम जानते हो इटालियन न बहुत आग्रह से कहा ।

—न मैं कुछ भी नही जानता । मैं सिफ इतना जानता हूँ कि मैं अभी डास करूँगा—विली ने अपनी कुरसी पीछे ठेल दी और उठ खडा हुआ ।

किन्तु इटालियन न झपटकर उसे क धो स पकड लिया । उसकी आखें सहसा आक्रान्त सी हो उठी । विली की लम्बी पतली देह के सम्मुख उसका ठिगना, गेंदनुमा शरीर एकाएक बहुत दयनीय-सा दीखने लगा ।

—विली ! तुम जानते हो, यहा पर

विली ने धक्का देकर झटके स अपना कन्धा छुडा लिया । उसकी पीठ हमारी मेज के सहारे टिक गई । जाज ने बियर की बोतल को हाथो

से पकड़ लिया। एक क्षण के लिए लगा, जैसे हम किसी जहाज़ के डगमगाते डेक पर बठे हो।

आरकेस्ट्रा शुरू होते ही पब के अलग अलग कोनो के लड़के-लड़कियों के जोड़े बेसमेण्ट की सीढ़िया पर उतरने लगे थे।

इटालिय्न न पीछे मुड़कर भी नही देखा। वह सिफ हवा म ताक रहा था।

विली कहीं भी नही था।

उसका खाली गिलास हमारी मेज़ पर रखा था। जाज ने बोतल से हाथ उठा लिया। उसकी हथेली के पसीने की पूरी छाप काच पर एक सफेद धब्बे की तरह अंकित हो गई थी।

इटालियन ने हमारी ओर देखा। लगा, जैसे वह हम पहचान न पा रहा हो। फिर अवश भाव से दोनो हाथ फैला दिए थे।

—पागल है है नही ?

हम चुप रहे। उस समय वहा कुछ था, जिनका हमसे कुछ सम्बंध नहीं था, जिसकी म्लान छाया चुपचाप हमारे बीच आ सिमटी थी। वह भारी, थके कदमो से काउण्टर की ओर मुड गया।

—बहुत गर्मी है—जाज ने कहा—तुम्हारे पास कितने पसे हैं ?

—क्यो ?—मुझे अचानक खीझ सी हो आई सब पर।

डेढ़ शिलिंग मेरे पास है। इसमे लागर आ सकती है ? —उसने पूछा।

मै विली के खाली गिलास को देख रहा था कहाँ हो सकता है ?

मद्धिम रोशनी के नीचे जूतो और सैंडिलो की खटखटाहट, इद गिद टूटती, बेशक्ल आवाज़ो का सलाब फैल गया था, जिसके एक छोर पर हम थे—एक मेज, जाज लागर के दो गिलास। सब-कुछ वैसा ही था, जैसा हमने पहले-पहल देखा था।

सिफ अब एक कुर्सी खाली थी।

—शायद वह नाराज़ था मैं अपने को रोक नही सका—जाज ने कहा।

—तुमने उसे कुछ भी नही कहा ?

—मैं अपने को रोक नहीं सकता—उसने मेज़ पर पडा मेरा हाथ ज़ोर से पकड लिया। मेरी अँगुलियां उसकी हथेलियों-तले चिपचिपाने लगी।

—तुम्हे नही मालूम मुझे बाक्सिंग का बहुत शौक है। जब मैं पहले पहल लन्दन आया था और बेकार नही था, तो मैं हर रोज बाक्सिंग के लिए जाता था। लेकिन मैं आज तक एक बार भी नही जीत सका हूँ। सुनते हो, *एक बार भी नहीं। मुझमें एक अजीब तनाव सा फैलने लगता* है। मैं प्रतीक्षा करता हूँ, कुछ लमहा तक, कि दूसरा आदमी मुझे हिट करे और जब वह नही करता तो मेरा खून खौलने लगता है। मैं आने-वाले खतरे का मुह नही जोह सकता। ठीक मौका आने से पहले ही मैं अंधाधुंध टूट पडता हूँ हालांकि मैं जानता हूँ, यह गलत है कि लडना इस तरह नही होता। और इसीलिए मैं घर से भागकर यहा आ गया हूँ—मैं अपने पिता की तरह प्रतीक्षा नहीं कर सकता।

—और वह तुम्हारे पिता किसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं ?

—मुझे नही मालूम मुझे राजनीति मे कोई दिलचस्पी नही है। उसका माथा लागर के गिलास के पीछे छिप गया।

मैंने अपना हाथ धीरे से छुडा लिया वह पसीने मे भीगा था। मैं उसे अपने पास ले आया, जैसे वह कोई पालतू चीज़ हो—अँगुलियो से गुथा हुआ, एक सफेद मास का लोथ उसके ऊपर भूरे बाल, बहुत से बाल, जो उसके स्पर्श से अभी तक दबे थे। और मैंने सोचा, हम सचमुच कितनी कम बार अपने हाथों को इस तरह देखते है, जैसे वे है, जैसे वे असल मे हैं और तब भ्रम होता है कि जो भी चीज़ उनकी पकड मे आएगी वह हमारी नही हो सकती।

—*जानते हो मैंने विली को राटर क्यो कहा ?*

—इट इज नथिंग—मैं उसके चेहरे को सीधी आखो से नही देख पा रहा था।

—*क्योकि असल मे मैं खुद एक हूँ। मैंने अभी तुमसे कहा था कि*

मैं अपने पिता की बहुत कद्र करता हूँ (हालाँकि यह उसने मुझे कभी नहीं कहा था) तुम उन्हें नहीं जानते। वह जीवित भी हैं या नहीं, मुझे नहीं मालूम। वे उनके पीछे थे।

—वे कौन ?

—वे एक बहुत ही ठंडा आतंक, साँप की कुण्डली-सा उसकी आँखों में बैठ गया था।

—तुमने कभी नहीं देखा—उसने मेरे हाथ को अपनी हथेलियों में बहुत ही सख्ती से जकड़ लिया। उसके काले चेहरे पर सिर्फ सफेद दाँत नजर आ रहे थे—एक कान से दूसरे कान तक खिंचे हुए—और मैं समझ नहीं सका कि वह हँस रहा है या सिर्फ एक भूले क्षण में उसके दाँत खुद ब खुद खुले रह गए हैं।

—मैं यहाँ सुरक्षित हूँ एण्ड फार दट आई हेट हिम, आई हेट हिम लाइक हेल।

हम चुपचाप पीते रहे। मेरे आगे घड़ी की डायल थी, जिसे मैंने पहली बार देखा था। मैं सोचता हूँ मुझे एक सिगरेट पीनी चाहिए मुझे लगता है, मैंने लम्बी मुद्दत से सिगरेट नहीं पी।

—तुम क्या सोचते हो ?—उसके स्वर में बच्चों का सा आग्रह था।

—कुछ भी तो नहीं।

—यदि तुम मेरी जगह होते, तो क्या करते ?

—तुम्हारी जगह पर ?—मैं हँसने लगा। मुझे आज तक यह भी नहीं मालूम कि मुझे अपनी जगह पर क्या करना चाहिए।

—लेकिन तुमने अवश्य निर्णय कर लिया होगा अपना देश छोड़ने से पहले ?

—शायद बचने के लिए।

—किससे बचने के लिए ?

—अपने देश के लोगों से शायद और चीजों से भी, जो अब मुझे याद नहीं।

ग्रौर तब उस क्षण मुझे लगा कि ज्यादा पीना शायद सम्भव नही होगा। सुबह से कुछ भी नही खाया था। खाली ग्रतडियो को लागर भिगो गई थी। एक नीली हरी सी धुध कही भीतर से रास्ता टटोलती हुई हर उस खिडकी के ग्रागे जमा हो गई थी, जहा से मैं बाहर देख सकता था। वहा घडी की डायल थी बहुत सफेद हवा म डोलते एक बहुत पुराने मुरदे की मानिन्द, जो न जाने कब्र से मेरे सग घिसट रहा था

—तुम हँस क्या रहे हो ?

मुझे यह जानकर काफी ग्राश्चय हुग्रा कि मैं हँस रहा हूँ ग्रौर जब मैंने जान लिया कि मैं हँस रहा हू, तो फिर अपने को रोकना बेमानी सा लगा।

—क्या बात है ?

—कुछ नही कुछ याद ग्रा गया था—मैंने टहलते हुए कहा। याद मुझे कुछ भी नही ग्राया था।

—क्या याद ग्रा गया था ?—वह मुझ पर झुक ग्राया, जैसे ग्रभी गले पर लटक जाएगा—बताग्रो, क्या याद ग्रा गया था ?

—जानते हो तीन दिन पहले मैं जेल जानेवाला था। मैं बाल बाल बच गया।

ग्रसह्य दबाव तले कोई भी चीज याद की जा सकती है ग्रौर मुझे सचमुच तीन दिन पहले की एक घटना याद हो ग्राई।

—हाँ, सचमुच मैं बाल बाल बच गया (मुझे इस तरह के मुहावरे बहुत पसन्द हैं, ग्रौर मैं उन्ह मौके बेमौके दुहराता रहता हूँ)।

—जानते हो लन्दन मे मैं ग्रपने एक दोस्त के घर ठहरा हूँ। पिछले कुछ दिनो से उसकी गर्ल फ्रेंड फिनलैंड से उसके सग रहने ग्राई थी। कमरा एक ही था, इसलिए मैं बाहर रहता था। मैं दिन भर म्यूजियम की लाइब्रेरी मे रहता ग्रौर रात को सोने के लिए यूस्टन्ड स्टेशन चला जाता था। हर रोज नियत समय पर मेरा मित्र मुझे कुछ शिलिंग दे जाता था। उस शाम किसी कारणवश वह मेरे पास नही ग्रा सका।

मेरे पास सिर्फ दस पेनी बचे थे। दिन-भर म्यूज़ियम मे बैठे भूख का कुछ पता नही चला, लेकिन रात होते-होते मैं अपने को नही रोक सका। उस समय तक किंग्स क्रॉस में सस्ते रेस्तराँ बन्द हो चुके थे और बस में बैठकर शहर के 'सेण्टर' मे जाने की सामर्थ्य नही थी। मैं काफी देर तक वाटरलू स्टेशन के इर्द गिर्द बदहवास सा घूमता रहा। आखिर मे एक ग्रीक रेस्तराँ दिखाई दिया जो ऊपर से काफी सस्ता दिखाई देता था। आलू के चिप्स और टोस्ट का आर्डर देकर मैं भीतर बैठ गया। तुम जानते हो ये चीज़ें सबसे सस्ती होती हैं—ज्यादा से ज्यादा आठ पेनी। मैं काफी निश्चिन्त था। कुछ देर बाद अनायास मेरी निगाह सामने दीवार पर जा पड़ी प्राइस लिस्ट पर, जिसे शुरू मे घबराहट के कारण मैं नही देख सका था। टोस्ट और चिप्स के दाम डेढ शिलिंग थे और मेरे पास दस पेनी से आधी पेनी भी ज्यादा नही। फिर जानते हो, मैंने क्या किया ? मैं एकदम खड़ा हो गया (इस तरह मैं जाक के सम्मुख खड़ा हो गया) और ज़ोर से चिल्लाया, गुड ईवनिंग ! अरे बाहर कैसे खड़े हो ? (और मैं सचमुच चिल्ला रहा था—जाक के मुँह पर) होटल का मालिक उत्सुकता से मेरी ओर देख रहा था। मेरे एक दोस्त बाहर खड़े हैं उनसे मिलकर अभी आता हूँ। टोस्ट और चिप्स की प्लेट मेज पर छोड़कर मैं आगे बढ़ा दरवाज़े की तरफ बिलकुल सधे कदमो से इस तरह (और मैं सचमुच चल रहा था—मेज़ो के बीच) और दरवाज़ा पार करते ही तुम जानते हो मैंने फिर मुड़कर नही देखा (मैं फिर मुड़कर जाक के पास आ गया था लागर का एक लम्बा घूँट पीकर मैं बैठ गया था) मैं बहुत देर तक भागता रहा था।

—और वह तुम्हारे पीछे था ?

—नही। हँसी की बात तो यही है कि वह मेरे पीछे नही था और फिर भी मै एक अँधेरी गली से दूसरी अँधेरी गली मे भागता रहा था और देखो, मेरी जेब मे दस पेनी बच गए थे, हालांकि मेरी भूख बिलकुल मिट गई थी।

—तुम भी खूब हो ! —जाज न हसत हुए कहा ।

मुझे काफी खुशी हुई कि वह हँस रहा है । मरा मित्र और उसकी प्रेमिका भी इसी तरह हसने लग थे, जब दूसरे दिन मैंन उन्ह यह घटना सुनाइ थी । हालाकि मुझे हमशा आश्चय हाता है कि लोग, विशेषकर वे लोग जिन पर एसी घटनाएँ बीतती ह बाद मे किस तरह आसानी से उ ह हनका सा रग द देत हैं । क्याकि दखा उस घडी मे, बिलकुल उस घडी में, जब घटना सचमुच घट रही होती है, आदमी कितना बदहवास-सा हा जाता है, बगलो से ठडा पसीना टपकता हुआ कमीज से चिपक जाता है और भीतर विह्वल सी कातरता भर आती है, बावजूद हमारी उम्र के, बावजूद हमार अनुभव के । म तो जानना ह कि उस रात जब मैं दस पनी जेब म दबाकर अँधेरी सडक पर भाग रहा था, ता कोई बार बार मुझमे कह रहा था—यू फकिंग फूल यू ईडियट यू

—तुम भी कमाल हो ! —जाज ने कहा । जब उसने तीसरी वार यही बात कही, तो मुझस नहीं वठा गया । आखो के आग घडी का डायल फिर घूमन लगा और मैं टायलेट की तरफ बढ गया। टायलट नीचे बसमेंट मे था । मैं जल्दी जल्दी सीढिया उतरन लगा । मुझे डर था कहीं सीढियो पर कुछ न हो जाए । मंन मुँह पर हाथ रख लिया और बहुत रहस्यमय ढग से मुस्करान लगा ।

हुआ कुछ भी नही—न सीढियो पर न वाश बेसिन मे, जिस पर मैं देर तक झुका रहा था—इस इतजार म कि कुछ बाहर आएगा । और अब घडी की सफेद डायल नहीं घूम रही थी । मैंने पम्प खोल दिया था ताकि मैं निश्चि त होकर एक एक चीज याद कर सकूँ और अपनी आवाज न सुन सकू (रात की इस घडी मे मैं यहा क्या कर रहा हू ? नही एसे नही चलेगा मुझे इस सिलसिल स ब्यौरेवार हर चीज याद करनी चाहिए—जसे यह बहुत महत्वपूण हो जमे कोई बडा सत्य इस पर निभर हो) । ब्यौरेवार' यह शब्द मुझे जँच गया था और मैं बार-बार इसे जबान पर फेर रहा था, क्याकि मैं कितनी दर तक चीजो को

याद करने के बजाय यही दुहराता रहा कि मुझे हर चीज 'ब्यौरेवार' याद करनी चाहिए।

टायलट से बाहर आया, तो पाँव ठिठके-से रह गए। नाचते हुए जोड़ों के भँवर में मैं घिर गया था। लोग धक्का देकर आगे निकल जाते थे और मैं कभी दायें, कभी बायें, एक कठपुतली की तरह घूम जाता था। जब कभी अपने पाँव जमाने का यत्न करता, तो डांसिंग फ्लोर पैरों तले सिकुड़ने लगता और लगता, जैसे मैं एक बहुत तेजी से घूमते लट्टू पर खड़ा हूँ। तभी मुझे अपने कन्धों पर एक अजीब-सा बोझ मालूम हुआ।

—तुम यहाँ हो ?—विली की दाढ़ी मेरे माथे को छू रही थी—और जाज ?

—वहीं है—मैंने ऊपर की ओर इशारा किया।

जिस लड़की के संग वह नाच रहा था उसका चेहरा उसके सीने तले छिप गया था—सिर्फ उसके ब्लोण्ड बाल दिखाई दे जाते थे।

—तुम आओगे नहीं ? तुम्हारा लागर मैंने कहा।

—आऊँगा। तुम नाचोगे नहीं ?

इस बार लड़की ने चेहरा ऊपर उठाया। उसके नंगे कन्धों पर पाउडर के हलके निशान थे और उसने सस्ती छींट की समर स्कर्ट पहन रखी थी। होंठों पर पसीने की बूँदें थीं, जो शायद देर तक नाचने के कारण लिपिस्टिक के ऊपर छितरा आई थीं।

भीड़ में खड़े रहना असम्भव था। वे मेरे नजदीक ही बहुत धीमे कदमों से नाचने लगे थे—एक बहुत तंग घेरे के भीतर—कभी विली का सिर मेरे पास सरक आता कभी लड़की के ब्लोण्ड बाल।

—कैसी है ?—विली ने धीरे से उसके बालों को झिंझोड़ दिया।

वह हँस रही थी।

—यह बहुत खराब है है न ?—उसने हँसते हुए कहा और पहली बार मुझे लगा, जैसे उसकी आँखें सोती जागती गुड़िया की हैं, जो सिर पीछे होते ही मुँद जाएँगी और सीधा होते ही खुल जाएँगी।

—नाचोगे ? म बि विद ट्र !—विली ने कहा ।

वे दोना घूम रहे थे बहुत ही हलके स्टप्स के सग । जब जिसका चेहरा मेरे पास आता, वह मरे कानो म कह देता ।

—इसके हमजोली वहा बठे हैं मर जाएँगे मुझे इसके सग देखकर ।—विली न कहा ।

—तुम नाचोग नही ? मे बि विद मी—लडकी ने कहा ।

—वह इटालियन मना करता था—मैंन विली से कहा ।

—मरने दो उस—विली न कहा ।

आरकेस्ट्रा की उस घिसी पिटी धुन म जाने कैसे मोसाट के लिटल नाइट' म्यूजिक की हलकी सी आहट ऊपर तिर आती थी—महज आधे मिनट के लिए—और तब मुझे लगता था जैसे किसी ने मरी सास को धागे की तरह अँगुली मे लपटकर खीच लिया हो ।

—जिन पिओगे ? पसे यह देगी—विली न धीमे स्वर म फुस फुसाते हुए कहा ।

—मे बि विद मी—लडकी ने बम हो उदासीन स्वर म कहा ।

इससे पहले कि मै कुछ कह पाता, नाचते हुए जोडो की भीड उन्हे मुझसे बहुत दूर घसीट ले गई । वे अचानक आखो से ओझल हो गए ।

मरा सिर अब भी घूम रहा था, किन्तु यह चक्कराहट वसी नही थी, जसी टायलट जाने से पहल । अब इस चक्कराहट म एक विचित्र-सा हलकापन था, जैसे धुध की जगह वहाँ सिर्फ छितरे बरसे हुए बादल हों और असीम खुलापन हो ।

भीड के भीतर रास्ता टटोलना सुगम नही था । वसमेण्ट की सीढियो के पास आकर मैं रुक गया । एक अदम्य इच्छा हुई वही सीढियो पर लेट जाने की, सो जाने की ।

—हलो !—मरे हाथ को किसी ने जकड लिया था । पीछे मुडकर देखा, पब का मालिक इटालियन खडा था । शायद वह दूर से भागकर मेरे पास आया था । हाथो पर कमीज की मुडी हुई बाँहें लटक आई

थी। वह हाफ रहा था, जैसे आस पास की हवा उसके सास लेन के लिए बिलकुल नाकाफी हो।

—सुनो, वह तुम्हारा दोस्त है ?

"मैंने कन्धे सिकोड लिये।

—क्या तुम उसे यहा से नही ले जा सकते—मेरा मतलब है इस जगह से ?

हमारे चारो ओर नाचते हुए लोगो का दायरा कभी बहुत तग हो जाता, कभी एकदम फैल जाता था। बैंड के आगे कोई व्यक्ति लाउड स्पीकर को दोनो हाथो मे पकडकर गाने लगा था।

हम दोना के बीच हमारी निगाहो के अलावा कोई और नही था।

—तुम क्यो नही कह देत ?—मैंने कहा।

—मैं उससे कुछ भी नही कह सकता वह मेरी बात कभी नही मानेगा।

—लेकिन क्या वह यहा क्यो नही रह सकता ?

—यह जगह उसके लिए ठीक नही है—एक अवश सी कातरता उसके स्वर मे उभर आई—मैं उसे पहले भी कई बार मना कर चुका हूँ।

मेरे मन मे फिर इच्छा हुई—वही सीढियो पर लेट जाने की।

—देखिये—मैं कुछ भी नही कर सकता। हमारी मुलाकात कुछ घटे पहले हुई थी। आप विश्वास नही करते ?—एक क्षण के लिए मुझे उसके दयनीय चेहरे से घृणा हुई जैसे मैंने किसी गिलगिली सी चीज़ को छू लिया हो—मैं उसे ठीक से भी नही जानता यह भी नही जानता कि उसका पूरा नाम क्या है—मैंने कुछ इस तरह कहा, जैसे जिन्दगी मे पूरा नाम जानना बहुत महत्वपूर्ण हो जैसे उसके बिना कुछ भी नही हो सकता।

एकाएक उसने मेरे दोनो हाथ पकड लिए। वह बिलकुल मेरे पास सरक आया—तुम तुम यही रहोगे ?

—हाँ—मैंने सिर हिलाया—जब तक तुम बाहर न फेंक दो।

उसकी पकड ढीली हो गई। किन्तु उसकी आँखें अब भी मुझे टटोल

रही थी। मैं सीढ़ियाँ चढने लगा। मुझे बराबर यह लगता रहा कि अब भी उसने मुझे पीछे से पकड़ रखा है हे ईश्वर, मैं एक सिगरेट पी सकता! लगता है, मैंने एक मुद्दत से सिगरेट नही पी।

जब मैं धक्के खाता और अपनी सामर्थ्य के अनुसार दूसरों को धक्के देता हुआ अपनी मेज के पास पहुचा, तो जाज सबके प्रति तटस्थ होकर सो रहा था। उसका सिर मेज के किनारे पर टिका था उसकी देह कुर्सी पर सिकुड़ गई थी, अधमुदी आँखों के बीच सफेद पुतलियां मली रुई के फाहा सी उभर आई थी। पहले मुझे भ्रम हुआ कि वह मुझे देख रहा है, जो सच नही था। उसके होठो के कोरो पर थूक बह आया था—चाक की महीन रेखा सा, सूखा और सफेद, जो मैंने रूमाल से, सबकी आख बचाकर, पोछ दिया।

उस रात पहली बार मुझे लगा कि वह उम्र में बहुत छोटा है—हास्यास्पद रूप से छोटा और अनजान।

मेरा गिलास खाली था। मैंने थोड़ी सी लागर उसके गिलास से अपने गिलास में उडेल ली। एक क्षण के लिए लगा जैसे वह अधमुदी आँखों से मुझे देखता हुआ मुस्करा रहा है और उसमे हलका-सा व्यंग्य छिपा है। शायद बन रहा है मैंने सोचा सो नही रहा और मुझे देख रहा है लेकिन शायद यह भी मेरा भ्रम हो, मैंने सोचा और पीने लगा। फिर मुझे कुछ अकेला सा लगा। सोचा, अपने मित्र को टेलीफोन कर दू हो सकता है, उसकी गल फ्रेंड अब तक चली गई हो और मैं उसके कमरे मे सो सकता हूँ लेकिन यदि वह हुई तो उसे बुरा लगेगा। इसे उठा दू, यह कब तक ऐसे सोता रहेगा, मैंने सोचा, इतनी उम्र मे घर से भाग आया है और अब—अब सो रहा है। मुझे एक बहुत पुरानी बात याद हो आई। यूरोप आने से पहले वह घर मे आखिरी रात थी। मा बार बार उठती थी और पानी पीने के बहाने मुझे देखती थी। अपने घर की छत पर मेरी आखिरी रात थी—वह जुलाई की रात थी और मुझे दूसरे दिन चले जाना था और बाबू मेरे बिस्तर के पास खडे

रहे थे, सोचा था मैं सो रहा हूँ मैं सब-कुछ देख सकता था वैसे भी हमारे शहर मे जुलाई की रातें बहुत उजली होती थी—आँखें मूद भा लो तो भी सब-कुछ दीखता था। फिर सहसा इच्छा हुई कि मैं बाहर चला जाऊँ यह बहुत आसान था। पहले मैं अपनी कुरसी से उठ खड़ा हूँगा, फिर दरवाजा खोलूगा और बाहर चला आऊँगा जस्त टू कम आउट यह बड़ी बात है, मैंने सोचा उनके मुँह पर थूक फिर बह आया था, होठो से बहता हुआ ठुड्डी तक, जहाँ नीले काँटो से बाल उग आए थे मैं रूमाल से फिर उसका मुँह पोछ देता हूँ।

आवाज़ें एक बदहवास-सी चीख !

बेसमेण्ट की दीवार पर छायाएँ डोलती जाती हैं—एक भयङ्कर दु स्वप्न-सी । कुरसियो को खीचने की आवाज, अटपटी सी हँसी लेकिन है कुछ नही । मैं उठता नही गिलास मे अब भी लागर बची है और मैं उठ नही सकता और तब अचानक उस क्षण मुझे अपने मे एक अजीब सी शान्ति महसूस होती है घनी चिलचिलाती, गरम रेत के अन्तहीन फलाव सी और मैं उस पकड़े रहता हूँ।

जस्ट टु कम आउट, जस्ट टु

मैं पूरी शक्ति से जाज को झिझोड़ने लगता हूँ।

वह एकदम हडबडाकर उठ बैठा और विमूढ़ भाव से मुझे देखने लगा—कुछ-कुछ उस ट्रेंड जानवर की तरह, जो ऐन मौके पर अपना 'पाठ' भूलकर आस पास खड़े तमाशबीना को देखने लगता है। फिर सहसा उसकी आखें अजीब सी आतङ्क-ग्रस्त हो आइ।

—बात क्या है ?"

—चलो यहाँ से चलना होगा।

—लेकिन क्या अभी ?

वह कुछ भी नही जानता। मैं जल्दी म निश्चय नहीं कर पा रहा था कि क्या उसे कुछ भी बताना उचित होगा।

—क्या मैं सो गया था ?—उसने पूछा। न जाने मेरे चेहरे पर क्या

था कि वह एकाएक शकित सा हो उठा ।

—यह शोर कैसा है ?

उसका चेहरा बिलकुल वैसा हो गया जब हम सोडा फैक्टरी के बाहर अँधेरे मे खडे थे । अब वह घडी कितनी दूर लगती है और कितनी अप्रासगिक !

—हमे चलना होगा बाहर ।

बाहर लन्दन की रात है हमारी प्रतीक्षा करती हुई—हमे निगल जाने के लिए आतुर ।

—विली कहा है ? हम उसके बिना नही जा सकते ।

—वह वह आ नही सकता ।

पब का दरवाज़ा खुलता है कुछ लोग हडबडाकर भीतर घुसते हैं ।

दे आर देयर द डैम्ड एक बहुत ही भद्दी गाली और आवाजें, मक्खियो की भिनभिनाहट की मानिन्द अर्थहीन ।

मैं उसका हाथ पकडकर घसीटना हूँ ।

—मैं जाऊँगा नही

—तुम पागल तो नही हो ?

—वे कहा है

—वे—मैं गुस्से म उसे उठा देना हूँ । वह बिलकुल मरे सामने खडा है—बताओ वे कौन ?—मैं उनके कन्धे हिलाता हू और वह

—बोलो वे कौन ?

—यू आर ड्रक ! उसने कहा और एक झटके स अपने को छुडा लिया ।

शायद यह सच है, मैंने सोचा शायद मैंने बहुत पी ली है । इस खयाल स मुझे बहुत सात्वना मिली है ।

—तुम यही रहोगे ?

—मैं कही भी रहू—उसने कहा ।

—सुनो—मैं बीच की कुरसी हटाने की चेष्टा करता हूँ ।

—यू धार ड्रंक ! वह पीछे हट गया।

मैं जान गया। वह भी, लेकिन मुझसे अलग। लगा, जैसे यह कोई खेल है, जिसमें दो व्यक्ति आँखों पर पट्टी बाँधकर चलते हैं और वे समझते हैं कि वे एक दूसरे से दूर जा रहे हैं लेकिन दरअसल वे एक-दूसरे के निकट सरकते आते हैं।

दरवाजे की तरफ पहले मर्जें आती हैं, अधजली सिगरेटों के टोटे, खाली गिलास और बोतलें कुरसियों पर रखे शाम के अखबार, फर्श के एक कोने में गिरी हुई लिपस्टिक की डिब्बी, जिसे हड़बड़ाहट में कोई स्त्री उठाना भूल गई थी और मुझे लगा जैसे कोई घटना अचानक हुई होगी बिलकुल अप्रत्याशित रूप से, और सब लोग बिना किसी तैयारी के भागती भीड़ के भँवर में फँस गए होंगे।

कितनी वहाँ है ?

और वह इटालियन

आगे सोचना नहीं हुआ। दरवाजा झपाटे से खुला था और मुझे लगा, जैसे एक झटके में जाज मुझसे अलग हो गया है—आखिरी लमहे में (या सबसे शुरू के लमहे में)। मैंने कोशिश की कि उसे अपने से जकड़ रखूँ जैसे यह अपने में एक महत्त्वपूर्ण चीज है किन्तु मेरा सिर सनसनाता हुआ नीचे की तरफ घूम गया। जो हाथ मैंने जाज को पकड़ने के लिए फैलाया था वह मुड़ता गया। छत, न यह छत नहीं है सिर्फ *रोशनी है—एक अजीब ढंग से झूलता हुआ बल्ब और मेरी बाँह मुड़ती गई,* (डोण्ट लेट देम एस्केप—एक फुफकारती सी आवाज़ फिर वह भी नहीं) और वह एक तख्ते की तरह काँप रही थी और उसे मैं देख सकता था काँपते हुए जैसे वह मेरी बाँह न हो। कोई कसता जा रहा है आखिरी बिन्दु तक और वहाँ पहुँचने से पहले ही टूट जाती है समूची देह में न, यह पीड़ा नहीं है पीड़ा की एक सीमा होती है और उसके परे उसकी पहचान खत्म हो जाती है

आई से लीव हिम एलोन यह क्या इटालियन की आवाज़ है ?

मुझे हलका-सा आश्चर्य होता है। मेरे ऊपर झुके हुए चेहरे एक-एक करके उठ रहे हैं लेकिन मैं उन्हें देख नहीं सकता सिवाय उनकी गरम साँसों के, जो गर्दन को बार-बार छू जाती है—फिर वह भी नहीं।

—तुम उठ सकते हो ?

मैं अपनी बाँह को देखता हूँ वह अब फर्श पर पड़ी है—आश्चर्य है, वह अब तक मुझसे जुड़ी है।

मैं बैठ गया हूँ। फिर अनायास मेरे हाथ गालों पर चले जाते हैं। वे गीले हैं वे आँसू हो सकते हैं इस पर मैं विश्वास नहीं कर सका—वे बेहूदा ढंग से खुद-ब-खुद निकल आये थे और मुझे पता नहीं चला था कुछ उस व्यक्ति की तरह जो सुबह अपने बिस्तर को गीला पाता है और विश्वास नहीं कर पाता कि उसने ही

—कुछ पिओ !—इटालियन मेरे इर्द गिर्द मँडरा रहा है।

—विली कहाँ है ?—मैंने पूछा।

—वे उसे मार डालेंगे मैंने तुमसे क्या कहा था ?—उसका गला अजीब ढंग से रुँध गया है।

—क्या कहा था ?—मुझे अब कुछ भी याद नहीं आता।

—तुम्हें मालूम है। तुम अगर उसे अपने संग ले जाते, तो कुछ भी नहीं होता।

—कुछ भी नहीं होता लेकिन जो हुआ है, इसे कोई रोक सकेगा, यह कोई भी नहीं जानता।

—अब मैं जाऊँगा—मैंने कहा।

—कहाँ ?—इटलियन दरवाजे के सामने खड़ा था।

—कहीं भी बाहर—चारों ओर देखा, जार्ज कहीं भी नहीं था। मुझे हल्की सी खुशी होती है।

—बाहर ?—इटालियन को शायद विश्वास नहीं हुआ, वह शायद निश्चय नहीं कर पा रहा था किस सीमा तक मैं पी चुका हूँ किस सीमा तक वह मुझे गम्भीरता से ले सकता है।

—इस समय नहीं व थाट्र गढे हैं।

—सुनो—मैंने बहुत सहज भाव से कहा—मैं कुछ भी नहीं करूँगा। मैं सीधा घर चला जाऊँगा।

—कैसी बात करते हो—इस बार वह एकदम भभक-सा उठा—वे जानते हैं, तुम विली के संग आये हो तुम उनसे बचकर नहीं जा सकते।

बहस करना व्यर्थ था, वह मानेगा नहीं।

बाहर एकाएक कोलाहल बढ गया है एक क्षण के लिए टेढ़ी सी उमठन मेरी पीठ पर सरकने लगती है—बर्फ के डले की तरह। इसे मैं पहचानता हूँ। डर है बहुत शुरू का डर, बचपन में बिलकुल नंगा—बिलकुल नीरव।

मुझे लगा, जैसे मैं मुस्करा रहा हूँ।

—देखो तुम मुझे एक छोटी ह्विस्की दे सकते हो?

वह कुछ देर तक मुझे घूरता रहा। आगे घिसट आया था। हम दोनों के चेहरे पास थे कि बाहर के शोर के बावजूद मैं उसकी साँसों को सुन सकता था।

—तुम जाओगे नहीं—सन्देह और अनिश्चय से उसका स्वर एक तनाव में खिंच आया था।

—मैं पागल नहीं हूँ।

वह कुछ देर तक चुपचाप मुझे घूरता रहा।

—तुम्हें यहाँ छोड़कर मैं नहीं जा सकता—उसने कहा।

एकबारगी जी में आया कि मैं उसके पसीने में लथपथ, गोल-मोल, गदराए चेहरे को अलग अलग हिस्सों में तोड़ दूँ किन्तु मैं वैसे ही मुस्कराता रहा।

मैं यहीं रहूँगा तुम्हारे लिए नहीं तो ह्विस्की के लिए। तुम मेरा इतना भी विश्वास नहीं करते?

इस बार उसके होंठ एक अप्रत्याशित हँसी में फैल गए। उस हँसी

में एक विवश निरीहता छिपी थी मानो वह हँसकर खुद अपने को विश्वास दिला रहा हो कि उसने मुझ पर विश्वास कर लिया है।

वह काउण्टर की ओर बढा, जहा विभिन्न शराबो और बियर की बोतलें रखी थी। वह बार-बार पीछे मुडकर मेरी ओर देख लेता था।

म खडा रहा।

स्काच की बोतल उसने काउण्टर पर रख दी। फिर मेरी ओर देखा जसे हम दोनो के बीच कोई रहस्यमय समझौता हो।

हमारा मौन जैसे इन आवाजो म बडा था, जो लहरो की मानिन्द उठती थी—एक दूसरे से उलझी हुई उठती थी, दरवाजे से टकराती थी और फिर अन्तहीन अन्धकार मे बिखर जाती थी।

वह गिलास धो रहा था। पम्प से बहता पानी और चमकीले गिलास पर फिसलती हुई उसकी एक एक बूद—मैं उन बूदो को देखता रहा और मुझे बराबर महसूस होता रहा कि मैं उलटी करूँगा। मैं नगे काच पर बहते पानी को नही देख सकता मेरे भीतर एक अजीब सी झुरझुरी फलने लगती है म आगे बढता हूँ, दरवाजे की तरफ। उसकी पीठ अब भी मेरी तरफ थी पम्प मे बहते पानी की आवाज मेरे दिल की धडकन को ढकती रही और तब उस लमहे अचानक मुझे लगा, जैसे अब म चाहू तो भी नही मुड सकता, जैसे खुद मेरा अपनी टागो पर, अपने पर, कोई नियत्रण नही रहा था जसे मैं खुद अपने से मुक्त हूँ।

औरदरवाजा खुल गया दूसरे क्षण म बाहर था।

बाहर अँधेरे मे।

जस्ट टू माउट मने अपने से कहा।

वह गर्मियो की एक खुली और नरम रात थी एक विराट वनल जन्तु की तरह खामोश जो दिन भर की थकान क बाद अपनी माँद मे समूची देह फलाकर सो गया हो।

पसीना सूख रहा था। मैंने भरपूर साँस ली एक बार दो बार

हल्का सा पछतावा होता है म व्हिस्की छोडकर चला आया था इस समय यदि वह मेरी देह के भीतर होती मैं फिर साँस खीचता हूँ काश म एक सिगरेट पी सकता ! म बडी सडक छोडकर एक सँकरी लेन म चला आया हूँ। अक्सर गलियो के नुक्कड पर सिगरेटो की आटामशीनें लगी रहती हैं

—हियर ही इज द सन आफ ए बिच !

म रुक जाता हूँ न, यह डर नही है। म बहुत शान्त हूँ सिफ एक ठण्डी सी चीज मेरी रीढ की हड्डी पर फिसल रही है—एक गिलगिली छिपकली की तरह तटस्थ।

व वहाँ थे दीवार से सटी छायाएँ आग सरकती है।

—होल्ड हिम !—एक फटी सी चीख और मैं अचानक पीछे मुड गया हूँ एक सरसराती सी हवा मेरी बगलो के बीच से निकल जाती है।

गॉडेम्ड निगर

वेट, जस्ट वेट

वह पीछे से आया था—मुझे पता भी नही चला कि मेरा सिर पीछे की ओर मुडता गया है एक क्षण और और म दो हिस्सो म बट जाऊँगा

काश, मै उसके चेहरे को देख पाता ?

हाथ है जो नम है म अपनी कनपटियो मे सरसराता खून सुन सकता था। म थोडा सा हिलता हूँ और कुछ आग की तरफ घिसट आता हूँ। वह भी मेरे सग घिसट आता है—यह कोई अन्य व्यक्ति है, इसन सिफ मेरे हाथ जकड रखे थे।

एक क्षण के लिए मुझे गहरा आश्चय होता है—यह क्या मेरी देह है, जो इस तरह थरथरा रही है ?

—यू शिटिंग स्वाइन !

म एक झटके से अपने को खीचता हूँ लेकिन मेरे बाल मेरे बाल उसके हाथो मे फँस गए हैं—उसकी नगी बाँह मेरे मुह के सामने हिलती

है और अनायास मैं अपने दांत उसमे गडा देता हूं ओह लीव इट, वगर ! एक टूटती सी सास वह मुझे हिलाता है एक बार, दो बार—और हर बार म शराबी सा उसकी बाह पर झूल जाता हूँ ।

—लीव हिम एलोन, यू सन आव ए ह्वाइट ह्वोर !

क्या यह विली की आवाज है ? मैं पूरी शक्ति से चीखने की चेष्टा करता हूँ, किन्तु सिवाय एक भयावह घुर घुर के मेरे मुह मे कोई भी स्वर नही निकल पाता ।

और तब सहसा मुझे लगा, उसकी पकड ढीली पड गइ है मैं अपने को उठा सकता हू । मेरी आख खुलती है । अँधेरे का एक नीला दरिया मेरे सामने से गुजर जाता है और उसके परे लाल हरे, गुलाबी धब्बे तिरते जाते हैं—मने इन्हे कभी देखा है, मुद्दत पहले कभी देखा है जैसे यह कोई पहचाना सा दु स्वप्न है जिसे मैं दुहरा रहा हूँ शुरू से अत तक ।

मुझसे दो गज के फासले पर वह खडा था—गली की दीवार से सटा हुआ । एक क्षण के लिए विश्वास नही हो सका कि वह विली है, वही व्यक्ति जिसके सग कुछ देर पहले म लागर पी रहा था

किन्तु क्या वह मुझे पहचान सकता है ?

और वह ब्लोड लडकी और जाज क्या वे स्मृति के घेरे से बाहर कही रात म डूब गए हैं हमे यहा छोडकर जो इस क्षण खुद अपने को नही पहचान पाते ?

सिफ दो गज और बीच का अँधेरा ।

भीड, आधा चेहरा और एक लम्बा युवक, जो विली पर झुका है विली की कमीज का कालर हाथ म पकडकर वह उसे दीवार के पास घसीट लाता है—खटाक खटाक

वह स्काफ फूल जाता है स्काफ जो उस लम्बे व्यक्ति ने गले मे बाँध रखा है रगीन—उस पर गुलाब के फूल छपे हैं

गुलाब के फूल और खून, जो विली के हाठो से फिसलता हुआ

उसकी 'गोटी' तक वह आया है

एक क्षण के झलमले मे सब कुछ उभर आया है आवाजें, पसीना लेन की खट्टी सी गन्ध और हँसी

और तब वह आया था एक ठिगना सा व्यक्ति, जो अभी तक भीड के अंधेरे म छिपा था। उसकी घनी भौंहो के बीच छोटी अस्थिर आँखें चमक रही थी भौंहो के बाल इतने लम्बे और घने होकर उसकी आखो पर झुक आए थे कि लगता था, जसे उसने अपने चेहरे पर किसी कुत्ते का मॉस्क पहन रखा हो

वह बहुत ही धीमे कदमा से विली की ओर बढ रहा था

—कहा गई तुम्हारी डार्लिंग ?—उसने झटके से विली की ठुड्डी का ऊपर उठा दिया।

—बोलो कहा गई ?

हर बार 'कहा गई' कहते समय वह विली के सिर को दीवार पर धकेल देता था हर बार विली की देह एक शराबी की तरह झूम जाती थी।

और वे हँस रहे थ

—वैश हिम देयर !—दूसरे ने अपने की ओर इशारा किया। खट-खट सिर के दीवार से टकराने की आवाज। खट खट मेरे दिल की पगली ज्वर ग्रस्त धडकन। पसीने और खून से लिथडी विली की कमीज़ और एक अनवरत, कभी न खत्म होनेवाली खट खट और एक भुतैली-सी हसी

—बोलो कहाँ गई ? स्पीक ! स्पीक ! स्पीक ! यू फिल्दी हा हा हा खट खट-खट

स्कॉफ मे झूलते हुए रगीन गुलाब के फूल

मुझे अब कुछ भी याद नही सच पूछो, तो मुझे यही नही मालूम कि मैं स्वय चिल्लाया था या कोई बाहर की चीख मुझे सहसा झिझोड गई थी। (नही आज भी मैं विश्वास नही कर पाता कि वह भयावह

चीख मेरे गले से निकली होगी।) मुझे सिर्फ इतना भर लगा था कि मरी सास एक अन्धे चिमगादड की तरह मेरी छाती की दीवार से टकराती हुई बेतहाशा फडफडाने लगी थी। और मने एक धक्के से उन दोनो हाथो को अपनी गदन स छुडा लिया, जिन्होन अब तक मुझे रोक रखा था

सिर्फ दो गज़ और बीच का अँधेरा।

मैं विली की तरफ बढा था। म उससे कुछ कहना चाहता हूँ। उसे छूना चाहता हूँ। मुझे लगता है यह बहुत महत्त्वपूण है।

बीच का अँधेरा—और वे ठण्डे हाथ और तब वह चीख

मेरा सिर उस अदृश्य व्यक्ति की ठुड्डी से टकराया था, जिसने मुझे बाच म पकड लिया था। दूसरे हाथ से उसने मेरा चेहरा भीच लिया मेरा मुह उसकी कमीज़ पर घिसटता गया। आई विल टीच यू—हाउ टु रन बास्टड न जाने क्यो, मैं अपनी टागा को बेतहाशा, मिरगी के मरीज़ की तरह, हवा म घुमाने लगा—कुछ नही होगा मैंने सोचा वह मुझे छोडेगा नही और तब मुझे लगा, जैसे अब मैं सास नही ले सकूगा। किन्तु यह गलत था हर दूसरी सास पहली सास की गिरफ्त से अपने को छुडाकर ऊपर आती थी और फिर मुझसे चिपक जाती थी और मैं सोचता था, यह आखिरी है लेकिन तीसरी सास फिर छटपटाते हुए अपने को दूसरी सास के पिंजरे से छुडा लेती थी और मुझे आश्चय हुआ कि कोई भी सास पीछे रहकर आखिरी नही बनना चाहती और तब एक भयकर सी खुशी ने मुझे अपने मे लपेट लिया, जिस म अब तक सिर्फ इस लमहे के लिए जी रहा था और अब वह आ गया है और आने वाली घडियो म कोई भी ऐसी चीज़ नही होगी, जिसके मानी वही होंगे, जो पहले थे, कोई भी डर पहले जैसा डर नही होगा मैं भूल गया था कि मैं अकेला हू मैं सिर्फ यह जानता था कि वे मुझे अकेला नही छोडेंगे और मैं बच नही सकता और उस रात मुझे पहली बार लगा कि अकेला होना ही काफी नही है काफी नही है क्योकि वे हर जगह है और यह मैं

जानता था, सिर्फ यह नहीं जानता था कि एक दिन वे मुझे पकड़ लेंगे अब वह पहले जैसा आकारहीन नहीं था—वह डर। अब वह ठोस था और सीमित था—उतना ही बड़ा जितना मैं हूँ हम दोनों अँधेरे में जानवरों की तरह सांस ले रहे थे और मुझे लगा, जैसे मैं आखिर तक अपनी टाँगों को इसी हवा में घुमाता रहूँगा आह डियर, हाऊ फनी इट इज हाऊ फनी! कोई हँस रहा है—(क्या यह मैं हूँ?) हँसी, जिसकी कोई आवाज नहीं। घूसे गालियाँ और फिर वही हँसी!

वे मुझे घसीटते ले गए हैं—गली के कोने तक।

मैं उठने की कोशिश करता हूँ और बैठ जाता हूँ। फिर इच्छा होती लेट जाने की। वहीं सड़क पर। लेकिन आँख बन्द करते ही लगता है जैसे और चीज़ एक ज्वार की तरह ऊपर उठती है—मेरी टाँगों में, छाती में, बाँहों के जोड़ों में—उठती है और बह जाती है क्या यह पीड़ा है? और मुझे हलका सा आश्चर्य होता है कि मैंने जिन्दगी के इतने बरस बिता डाले और कभी इसे नहीं जाना। लगता है, मेरी चेतना ने इस पीड़ा का एक छोर पकड़ लिया है और घिसटती जा रही है कभी सिर्फ चेतना रह जाती है—पीड़ा से अलग। तब लगता है जैसे मैंने कुछ खो दिया है। बारिश की शाम है और मैं दुबारा अपने शहर की सड़क पर एक सिरे से दूसरे सिरे तक भाग रहा हूँ एक छोटा सा खोखल मेरे सामने खुल गया है और एक उत्कट भयंकर सी आकांक्षा मन में जगती है उसमें छिप जाने की जैसे उसमें छिप जाने से ही सब कुछ सुलझ जाएगा सब-कुछ बहुत सहज हो जाएगा लेकिन यह खोखल नहीं है। यह पीड़ा है, जो बराबर बराबर से बँट गई है मेरी देह के विभिन्न अंगों में—बिलकुल नये किस्म का दर्द, जो अपने में सम्पूर्ण है और जिसे आज तक मैंने नहीं पहचाना (हाऊ फनी इट इज हाऊ वण्डरफुल फनी!) बीच बीच में चेतना का परदा खुल जाता है और मुझे आश्चर्य होता है कि यह मैं हूँ और मुझे सहसा विश्वास नहीं होता कि मैं बाहर आ गया हूँ अपने से बाहर जहाँ मुझे

कोई नही बचा सकता।

अँधेरे से बाहर—जहा वे है।

वह शुरु अगस्त की एक रात थी। वे मुझे गली के एक गँदले, खामोश कोने मे छोड गए थे। कितनी देर तक मै वहा पडा रहा, मुझे कुछ भी याद नही। बीच बीच मे मेरी आख खुल जाती थी एक पतली और पारदर्शी धुन्ध के पीछे लन्दन का आकाश घिर आता था। फिर आखें मुंद जाती थी और मुझे लगता था, जैसे मैं एक धुन्ध को छोडकर दूसरी धुन्ध म सिमट आया हू।

कितनी देर ऐसे ही रहा। फिर मैं सतर्क हो गया। पैरो की आहट मेरे पास चली आई थी। बहुत मन्द गति से। मैं ऊँघने लगा था। शायद यह सपना हो। देर तक मालूम नही हो सका कि कोई बराबर मेरे कन्धो को हिला रहा था

—क्या ज्यादा चोट आई है ?

—नही ज्यादा नही—आखें खुल गईं। मेरे ऊपर जाज का चेहरा झुका था। लागर की हल्की सी गन्ध मुझे छू गई। न जाने क्या, उस गन्ध के सग एक दूसरी स्मृति उभर आई मोत्साट के सेरेनाड की एक बहुत पुरानी ट्यून—ट्यून भी नही, महज एक टूटी टहनी-सी थिरकन, जिसे कुछ घडियो पहले पब' मे अचानक पहचाना था

—तुम यहाँ हो ?

—मुझे मालूम था, वे तुम्हें यहाँ लाए हैं। मैं देख रहा था उसने कहा।

—विली कहाँ है ?

—लेट हिम गो टु हेल अगर वह नही होता तो कुछ भी नहीं होता।

—क्या कुछ नही होता ?

अचानक बडी सडक से एक कार गुजर गई। हमारी आँखें चुंधिया

गईं। मेरा ध्यान पहली बार अपनी ओर खिंच आया—कमीज़ का कॉलर ऊपर से फट गया था पैंट पर गर्द, धूल और बियर के धब्बे थे और मुझे लग रहा था कि बदन के पसीने से चिपकी मेरी बनियान से एक बोझिल, गीली-गीली-सी भाप निकल रही हो।

—तुम वापस क्यों आये ?

—मैं भीतर आना चाहता था—तुम लोगों के पास, लेकिन तुम जानते हो

—इट इज ऑल राइट, जाज—मैंने उसे बीच में ही रोक दिया। मेरे मुँह का स्वाद एकदम कसैला सा हो आया, जैसे मैं एक लम्बे बुखार के बाद उठा होऊँ। पास ही लैंप पोस्ट का पीला दायरा था। मैंने उसके बाचों बीच थूक दिया—बिलकुल लाल, जैसे पान की पीक हो। यह खून है मुझे बहुत अजीब-सा लगा। मैंने एक बार फिर थूका, इस बार अपने खून को दुबारा देखने का लोभ सवरण न कर सका।

—तुम्हें ज्यादा चोट तो नहीं आई ? जाज ने कहा। उसके स्वर में एक बँधी-बँधी सी कुण्ठा थी। मुझे वह कुछ अजीब सी लगी।

मैं चुप रहा और फिर खड़ा हो गया। एक क्षण तक गली की दीवार से मेरा सिर टिका रहा

खट खट खट

अब भी वह आवाज मेरी नसों के बीच फड़फड़ा रही थी।

हम चुपचाप ट्यूब स्टेशन की ओर चलने लगे। मेरी जेब में अब भी दो शिलिंग पड़े थे। अनायास मेरी काँपती अँगुलियाँ उन्हें सहला देती थीं।

बाहर सड़क पर अगस्त के पत्ते थे लन्दन का धुआँ रात के परे गिरता जा रहा था।

—तुम मेरा विश्वास नहीं करते तुम समझते हो जाज ने ज़बरदस्ती मेरा कन्धा पकड़ लिया।

इट इज ऑल राइट—मैंने उसका हाथ कन्धे से अलग कर दिया।

काश, वह इस समय मेरे सग न होता !

हम ट्यूब स्टेशन की सीढियाँ उतारने लगे ।

प्लेटफाम उजाड पडा था । बेंचो पर इक्के-दुक्के आदमी बठे ऊँघ रहे थे । हमारे बिलकुल पास खम्भे की आड मे एक जोडा दीवार से सटा था लडकी अपने बालो पर बार-बार हाथ फेरती थी । उसके सामने खडा युवक कुछ दबे स्वर मे फुसफुसा रहा था । लडकी बार बार हँसने लगती थी और फिर चौककर दोनो ओर देख लेती थी ।

टिकट खरीदकर हम पास की खाली बेंच पर बैठ गए ।

—तुम लन्दन मे ही रहोगे ?

वह चुप रहा । उसकी आखें बत्तियो के पर अण्डर ग्राउण्ड की सुरग पर थिर थी—अँधेरी, सीली । लगता था, सुरग का अँधेरा ऊपर शहर के अँधेरे से कट गया हो जैसे गँदले पानी का ठहरा चहबच्चा हो ।

—न जाने विली कहा चला गया ?

—विली मैंने उसे देखा नही—उसने कहा ।

—लेकिन तुम बाहर खडे थे, तुमने अभी कहा था ?

—मैंने कुछ भी नही देखा ।

हम फिर चुप हो गए । कि तु उस चुप्पी मे एक बोझिल सा तनाव था, जैसे कोई चीज बार-बार हमारे बीच आ जाती हो, और हम बार-बार उसे अलग ठेल देते हो ।

—तुम समझने हो मैं झूठ बोल रहा हू ?—उसने कहा।

मैं दूसरा ओर देखने लगा ।

—तुम कुछ भी समझो, मुझे इसकी कतई परवाह नही—उसने कहा ।

—डोण्ट बि सिली—मैंने कहा ।

—तुम मेरा विश्वास नही करते—इस बार उसने मेरी ओर देखा —तुम सोचते हो म भाग गया था उसके होंठ काप रहे थे ।

—डम इट, आई से डैम इट !

—उन्होने मुझे पकड़ रखा था और मैं तुम्हारे पास

—इट इज़ ग्रॉल राइट, जाज !

—ओ नो इट इज़ नाट ग्रॉल राइट—वह जैसे चीख रहा हो। पास की बेंच पर ऊँघता हुआ ग्रादमी उठ बैठा ग्रौर हमारी ग्रोर देखने लगा।

—जार्ज, सुनो—मैंने उसके कन्धे पर हाथ रख दिया। बेंच के हत्थे पर उसका चेहरा दोनो हाथो के बीच दबा था ग्रौर बार बार हिल उठता था।

—आई वाज़ ग्रफ़ेड, टेरिब्ली ग्रफ़ेड।

हम दोनो कांप रहे थे।

—ग्रफ़ेड

मैं सामने देखता रहा ग्रण्डर ग्राउंड का ग्रँधेरा जैसे धीरे धीरे हिल रहा हो—एक परदे के मानिन्द जो ग्रभी उठ जाएगा। मैं उस क्षण जाज से डरने लगा खुद ग्रपने से डरने लगा। मुझे लगा जसे मैं ग्रब कभी उसकी ग्रोर नही देख सकूगा। उस क्षण मै कोई भयकर चीज़ कर सकता था—मै उससे बहुत कुछ कहना चाहता था, कुछ भी किन्तु ग्रब हम दोनो एक सग होते हुए भी ग्रचानक ग्रकेले पड गए थे ग्रौर वह रो रहा था और म कुछ भी नही कर सकता था शायद इससे भयकर ग्रौर कोई चीज नही, जब दो व्यक्ति एक सग होते हुए भी यह ग्रनुभव कर लें कि उनमे से कोई भी एक-दूसरे को नही बचा सकता जब यह ग्रनुभव कर लें कि बीती घडियो की एक भी स्मृति, एक भी क्षण उनके मौजूदा इस गुज़रते हुए क्षण के निकट ग्रकेलेपन म हाथ नही बँटा सकता, साझी नही हो सकता

तब हम चौंक गए। दूसरे प्लेटफाम पर वॉरेन स्ट्रीट जानेवाली टयूब ग्रा रही थी। जाज को इसी म जाना था। हमारे ग्रास पास की बेंचो पर ऊँघते हुए लोग सहसा उठ खडे हुए। टयूब की तेज हेडलाइट मे यूस्टन की ग्रगली सुरग का ग्रँधेरा ज़रा पीछे खिसक गया। सीढियो से

कुछ लोग भागते हुए नीचे प्लेटफार्म पर उतर रहे थे, ताकि वॉरेन स्ट्रीट जाने वाली आखिरी ट्यूब को पकड़ सकें।

जाज खड़ा हो गया। उसने एक बार भी मुझे नहीं देखा और दूसरे क्षण भीड़ के संग वह भी ट्यूब की तरफ भागने लगा। ट्यूब के आटोमेटिक दरवाज़े क्षण भर के लिए खुले और भीड़ को अपने भीतर निगलकर दूसरे क्षण ही बन्द हो गए।

पहियों की भड़भड़ाती आवाज धीरे धीरे मन्द पड़ती गई और फिर सब पूर्ववत शान्त हो गया। सुरंग के जिस अँधेरे को ट्यूब की हेडलाइट ने पीछे खिसका दिया था, वह फिर वापस लौट आया।

सिर्फ प्लेटफार्म की खुली छत के परे न्यू एक्टन की रोशनियाँ अँधेरे में चुपचाप झिलमिलाती रहीं।

खम्भे की आड़ में युवक ने कहा—अगली गाड़ी से—और उसे चूम लिया। लड़की की आँखें मुँद गईं।

उसने देखा भी नहीं

और मुझे लगा, जैसे मुद्दत से मैंने सिगरेट नहीं पी।

-

अन्तर

बस से उतरकर वह बाजार के चौराहे पर खड़ा हो गया। सामने टाउन हॉल की इमारत थी—लम्बी और भयावह। पहली मंजिल पर लम्बी, मैली खिड़कियाँ थी, जिनके शीशा पर शाम की धूप और भी मली दीख रही थी। उससे हटकर कुछ दूकानें थी—एक पब, एक नाई की दुकान और दा जनरल स्टोर। आगे छोटा-सा स्क्वयर था।

—आखिरी बस कितने बजे जायेगी ?—उसने उसी बस के कंडक्टर से पूछा जिसमे वह आया था।

—दस बजे कण्डक्टर ने उडती हुई निगाहो से उसे देखा और ओवरकोट की जेब से बियर की बोतल निकाल ली।

वह दूकानो की तरफ चला आया। वह यहाँ पहली बार आया था, किंतु उसे विशेष अंतर नही जान पडा। वह जब कभी प्राग से दूर छोटे शहरो मे जाता था, वे उसे एक समान ही दिखाई देते थे। टाउन हॉल चर्च और बीच मे स्क्वयर और एक खाली सा उनींदापन।

हवा ठण्डी थी, हालाँकि मई का महीना आगे बढ चुका था। उसने अपने डफल बैग से मफलर निकाल लिया। दस्ताने उसके कोट की जेब

मे थे। वह अभी उन्हे नही पहनना चाहता था। उसकी पीठ पर स्लीपिंग-किट था। अगर कही रात की बस वह नही पकड सका, तो बाहर सो जाएगा। उस होटल की अपेक्षा बाहर सोना हमेशा अच्छा लगता था— अगर ठण्ड ज्यादा न हो।

जब पिछली गर्मियो मे वह उसके साथ मोराविया गई थी, तो भी वे बाहर सोते थे। एक ही स्लीपिंग किट मे। वे इसी तरह सारा मोराविया घूम लिये थे। उसके साथ पहले पहल उसे बाहर सोने की आदत पड गई थी। होटल की जो बचत होती थी, उसे वे हमेशा बियर पर खर्च कर देते थे।

वह कुछ देर तक पिछली गर्मियो के बारे मे सोचता रहा। फिर उसने मफलर को अच्छी तरह गले और कानो मे लपेट लिया। ठण्ड काफी है—उसने सोचा—लेकिन वह असहनीय नही है।

असहनीय शायद कुछ भी नही है। उसके लिए भी नही। शुरू में वह बहुत डर गई थी। अब वह ठीक होगी। अब कोई डर नहा है उसने सोचा। अब बिलकुल कोई डर नही है—उसने दुबारा अपने से कहा।

वह कुछ दर तक खाद्य पदार्थों के स्टोर के सामने खडा रहा, शो विण्डो मे गौर से देखता रहा, फिर कुछ सोचकर भीतर चला आया।

दूकान मे 'सेल्फ सर्विस थी। उसने 'काउण्टर' के नीचे से एक टोकरी निकाल ली। दोनो ओर लम्बी कतार मे छोटे बडे टिन और डिब्बे रखे थे। इन दिनो ताजे फल देखने को भी नही मिलते थ। उसने आडूओ और अनानास के दो टिन टोकरी म रख लिये। आधा किलो 'सलामी' और फ्रेंच पनीर की कुछ टिकिया भी लिफाफे म बँधवा ली। उसे 'फ्रेंच चीज हमेशा ही बहुत पसन्द थी। रात को जब कभी वह उसके कमरे मे सोती थी, तो एक चूहे की तरह उस बराबर कुतरती रहती थी।

स्टोर से बाहर निकलते हुए उसे कुछ याद आया और उसन दुबारा मुडकर 'लीपा' का एक पकेट खरीद लिया। अस्पताल म शायद उसके

पास सिगरेट नहीं होगी—उसने सोचा।

सारा सामान उसने अपने डफल बैग में रख लिया। स्टोर से बाहर निकलकर उसे प्यास सी महसूस हुई। समय काफी है—उसने सोचा। ज्यादा नहीं है लेकिन वह छोटी बियर के लिए काफी है। स्क्वयर पार करके वह 'पब' में चला आया।

वह बैठा नहीं। बार के काउण्टर के सामने खड़ा रहा।

—एक छोटी बियर—उसने कहा। बारमैन ने बिना उसकी ओर देखे एक मग बियर नल के नीचे रख दिया। जब मग में झाग ऊपर चढ़कर बाहर फिसलने लगा, तब उसने नल की टोंटी बन्द कर दी। एक मैले तौलिये से मग को साफ किया और उसके सामने रख दिया।

उसने मग होंठों से लगा लिया। बियर कसैली और गुनगुनी-सी थी, फिर भी उसे बुरी नहीं लगी। बारमैन इस बीच जेब से एक सासेज निकालकर खाने लगा था। वह एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति था। उसकी नीली आँखें आँसुओं में तर रही थीं।

—आप बता सकेंगे, अस्पताल किस तरफ है ?—उसने पूछा।

बारमैन ने गौर से उसकी ओर देखा, फिर उसकी आँखें उसके स्लीपिंग किट पर ठिठक गईं—क्या प्राग से आये हो ?

उसने सिर हिलाया।

वह तनिक सन्देह भरी दृष्टि से उसकी ओर देखता रहा।

—टाउन हॉल की दाईं तरफ सिमिट्री से जरा आगे।—उसने कहा।

—क्या ज्यादा दूर है ?—उसने पूछा।

उसने आधी कतरी हुई सासेज को अश्लील ढंग से ऊपर कर दिया—एक किलोमीटर उसने हँसते हुए कहा।

उसने उसे धन्यवाद दिया, तीन क्राउन का नीला नोट काउण्टर पर रखा और बिना चेंज की प्रतीक्षा किये बाहर चला आया।

बाहर बसन्त का चमकीलापन था वैसा बोझिल नहीं, जो गर्मियों

मे होना है एक हलका धुला सा आलोक जो लम्बी सदियो के बाद आता है।

दस मिनट का रास्ता था और वह तेजी से चल रहा था। उसे अब ज्यादा घबराहट नही थी। उसे अब उतनी घबराहट नही थी, जितनी बस मे हो रही थी। बियर के बाद उसे हलका सा लग रहा था। स्क्वयर छोडने के बाद वह एक खुले रास्ते पर आ गया था। हवा ठहर गई थी और कभी कभी दूर के खेतो मे ट्रैक्टर का घुर घुर स्वर मक्खी की भिनभिनाहट सा सुनाई दे जाता था।

सिमिटी के पास आकर उसने सिगरेट जलाई फिर डफल बैग को एक कन्धे से उतारकर दूसरे कन्धे पर लटका लिया। सिमिटी के इद-गिर्द वर्वा के पेड थे और उनकी नई पत्तियाँ डूबती हुई धूप मे झिलमिला रही थी। कच्ची सडक पर बर्फ के पिघलने से कही कही दल दल जमा हो गया था और उन पर मोटर लारियो और ट्रकों के निशान उभर आए थे। उसने अपने पैंट के पाँव ऊपर चढा लिये—उसे खुशी हुई कि यहा उसे देखनेवाला कोई नही है। लेकिन वह उसे देखकर जरूर हैरान हो जाएगी। वह शायद खुश भी होगी, लेकिन उसके बारे म वह निश्चित नही था। उसने प्राग से आते समय उसे मना कर दिया था। वह नही चाहती थी कि किसी को कोई सन्देह हो सके। उन्होने यह तय किया था कि वह दो दिन यहा अस्पताल मे रहेगी, बाद मे जब वह वापस प्राग आयेगी तो किसी को भी कुछ पता नही चलेगा।

अस्पताल के गेट के सामने वह रुक गया। छोटी सी पहाडी के ऊपर उसकी इमारत किसी कॉलेज होस्टल की तरह दिखाई दे रही थी—उतनी ही आत्मीय और निर्दोष। अस्पताल की इमारतो मे अकसर जो ठिठुरता हुआ नगापन होता है वह उसमे बिलकुल नही था।

उसने अपने पैंट के पाँयचे नीचे की ओर मोड दिए और दरवाजा खोलकर भीतर चला आया। सामने एक लम्बा कारीडोर था। बीच बीच म फूलो के गमले रखे थे। साफ सुथरे फर्श पर कारीडोर के खम्भो

की टेढ़ी छायाएँ धूप में खिंच आई थीं।

जीने के पास उसे एक बड़ा-सा डेस्क दिखाई दिया। ऊपर रिसेप्शन का साइन बोर्ड लगा था। उसके पीछे एक स्त्री नर्स की पोशाक में बैठी थी। वह अखबार पढ़ रही थी और उसका चेहरा नहीं देखा जा सकता था।

वह कुछ झिझकता हुआ डेस्क की ओर बढ़ा।

नर्स ने अखबार से सिर उठाकर उसकी ओर देखा।

—किससे मिलना चाहते हैं ?

उसने नाम बताया। उसे लगा वह नर्स ही नहीं है, नर्स की पोशाक में वह एक स्त्री भी है। इस खयाल से उसे कुछ सान्त्वना-सी मिली।

उसने डेस्क की दराज़ से एक लिस्ट निकाली।

—मैटर्निटी वार्ड में ?—उसने पूछा।

वह एक क्षण तक असमंजस में खड़ा रहा, फिर उसने माथे का पसीना पोंछा।

—मुझे यह नहीं मालूम। मैं पहली बार यहाँ आया हूँ। क्या आप लिस्ट में देख सकती हैं ?—उसने कहा। हालाँकि यह कहने की कोई ज़रूरत नहीं थी। वह पहले से ही लिस्ट देख रही थी।

—मैटर्निटी वार्ड में आपकी पत्नी का नाम नहीं है।—नर्स ने प्रश्न भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा।

—वह मेरी पत्नी नहीं है—उसने कहा—मेरा मतलब है, अभी तक हम विवाहित नहीं हैं। उसने डेसपेरेट होकर मुस्कराने की कोशिश की। फिर उसे लगा कि यह स्पष्टीकरण न केवल निरर्थक है, बल्कि मूर्खतापूर्ण भी।

नर्स ने कुछ अजीब रूखे ढंग से उसकी ओर देखा और फिर धीरे से अपने बाल पीछे समेट लिये।

—आपको मुझे यह पहले बता देना चाहिये था—उसने कहा। उसके स्वर में खीझ नहीं थी, सिर्फ एक ठण्डी सी विरक्ति थी। उसने

डेस्क के भीतर से दूमरी लिस्ट निकाल ली। एक बार फिर नाम पूछा।

वह चुपचाप प्रतीक्षा करने लगा।

—पहली मजिल, दाईं तरफ सर्जिकल वाड—उसने सरसरी निगाहा से उसकी ओर देखा और फिर अखबार पढने लगी।

वह गलियारे के अंतिम छोर पर पहुचकर सीढिया चढने लगा। दोना तरफ दरवाज़े खुले थे। औरते अपनी जुपानो (लम्बी स्कट) मे बिस्तरो पर वठी थी। दरवाजो के बाहर रस्मी पर नायलन की जुरावें ब्रेसियर और अण्डरवियर सूख रहे थे। हवा म एक खट्टी गिलगिली-सी ग ध ठहर गई थी जो अक्सर औरतो की घरेलू देहो या कपडा से आती है। लोहे की रेलिंग पर रेत से भरी हुई लाल, नीली बाल्टिया लटक रही थी—शायद आग बुझाने के लिए—उसने सोचा।

जब वह सर्जिकल वाड की ओर मुडा, उसे लगा जैसे किसी ने पीछे से उसका हाथ पकड लिया हो। वह तनिक चौककर पीछे मुडा। एक लम्बे कद का हृष्ट पुष्ट व्यक्ति उसके सामने खडा था। उसने लम्बा सफेद कोट और पाजामा पहन रखा था, जो यहा डाक्टरा की पाशाक होती है।

—किससे मिलना है ?—उसने पूछा।

उसने फिर नाम बताया।

—अच्छा लेकिन इसे यही छोड दना होगा—उसने अँगूठे से उसक स्लीपिंग किट की ओर इशारा किया।

उसने स्लीपिंग किट पीठ से उतारकर एक काने मे रख दिया।

—इसमे क्या है ?—उमने उसके डफल बग की ओर देखा।

उसने चुपचाप कधे से बैग उतारकर उसके सामन रख दिया।

डॉक्टर ने सरसरी निगाह से बैग मे रखे डब्बा को दखा और फिर धीरे से हँस दिया।

—मो यू आर दि मैन—उसने अपनी भापा छोडकर अंग्रेजी मे कहा।

—क्या मतलब ?

—कुछ नहीं वह फिर अपनी भाषा पर उतर आया था।

—बैड न० १७ सिर्फ आध घण्ट। वह अभी बहुत कमजोर है— उसने रूखे व्यावसायिक स्वर म कहा—तुम भीतर जा सकते हो।

लेकिन उसके बाद वह तुरत भीतर नही जा सका। कुछ देर तक वह डफल बग को बच्चो की तरह दोनो हाथो म लेकर खडा रहा।

दरवाजे के पास एक खाली ह्वील चेयर थी। सामने एक बडा हॉल था। दोनो तरफ छोटे छोटे क्यूबिकल थे और उनके बीच लम्बे, गुलाबी रग के परदे लटक रहे थे। हर क्यूबिकल के पीछे एक मद्धिम-सी रोशनी टिमटिमा रही थी। हॉल के एक कोने म स्ट्रेचर पडा था। उस पर कुछ रुई की गन्दी पट्टियाँ थी—शायद कोई नर्स जल्दी म उन्हें उठाना भूल गई थी।

वह भीतर चला आया। स्लीपिंग किट उतारने के बाद उसे अपनी पीठ बहुत हलकी-सी लग रही थी। सत्रह नम्बर के आगे आकर खडा हो गया। भीतर निपट शान्ति थी। वह शायद सो रही थी—उसने सोचा।

पहले क्षण म उसे वह दिखाई नही दी।

सामने एक बडा सा बिस्तर था बिलकुल समतल और सफद। ऊपर दो लम्बी चादरें थी और वे भी बिलकुल सफेद थी। यह पता चलाना भी मुश्किल था कि सिरहाना किस तरफ है। बिस्तर पर कही भी कोई उतार चढाव नही था। एक क्षण के लिए उसे लगा, वह खाली है।

वह खाली नही था। चादर से उसका सिर बाहर आया फिर आँखें। वह उसे देख रही थी फिर एक छोटी सी मुसकराहट उसके होठों पर सिमट आई। वह पहचान गई थी।

उसने आँखा से स्टूल की ओर इशारा किया। उस पर दूध से भरा एक कप रखा था।

—तुमने पिया नहीं ?—उसन झुककर कहा।

—बाद मे इस नीचे रख दो।

उसने स्टूल बिस्तर के पास खिसका लिया ।

—कब आये ?

—अभी कुछ देर पहले ।

उसके होठ जामुनी रग के हो आए थे । जगह जगह से लिपस्टिक की लाइन टूट गई थी ।

—कब हुआ ?—उसने पूछा ।

—सुबह । अपना कोट उतार दो—उसने अपना कोट और डफल बैग उतारकर स्टूल के पीछे रख दिया । खिडकी बन्द थी । नीचे उसका सूटकेस पडा था, जो वह प्राग से अपने साथ लाई थी ।

—ज्यादा देर तो नही लगी ?—उसने पूछा ।

—नही उन्होने क्लोरोफाम द दिया था । मुझे कुछ भी पता नही चला—उसने कहा ।

—मैंने तुमसे कहा था कि तुम्हे कुछ भी पता नहीं चलेगा तुम मानती नही थी—उसने मुसकराने की कोशिश की ।

वह चुपचाप उसकी ओर देखती रही ।

—मैंने तुमको आने के लिए मना किया था—उसने कहा ।

—मुझे मालूम है लेकिन अब मैं यहा हू ।

वह बिस्तर पर झुक आया । उसने उसके भूरे बालो को चूमा फिर होठो को । कमरे की गर्मी के बावजूद उसका चेहरा बिलकुल ठण्डा था । वह चूमता रहा । वह तकिये पर सिर सीधा किये लेटी रही ।

—तुम अब सुखी हो ?—उसका स्वर बहुत धीमा था ।

—हम दोनो पहले भी सुखी थे—उसने कहा ।

—हा लेकिन अब तुम सुखी हो ?

—तुम जानती हो यह हम दोनो के लिए ठीक था मैंने तुमसे पहले भी कहा था ।

चादर उसके वक्ष से नीचे खिसक आई । उसने हरे रग की नाइट-शट पहन रखी थी । उस पर काले रग के फूल थे । अपने कमरे मे उन

फूनों को देखकर उसकी देह म मीठा सा तनाव उत्पन्न हो जाता था। अब वे उसकी आखो को चुभ रहे थ।

—यह क्या है ?—उसने डफल बैग की ओर देखा।

—कुछ नही। मैंने कुछ चीजें यहाँ खरीद ली थीं—वह बारी-बारी से हर चीज को बग से निकालकर बिस्तर पर रखने लगा—आड और अनानास के टिन, सलामी, फ्रेंच पनीर, लीपा का पैकेट।

—तुम एक पनीर अभी लोगी ?

—नही बाद मे—वह बिस्तर पर बिखरी चीजों को देखती रही।

—इन दिना तुम्ह खाने पीने की लापरवाही नही करनी चाहिए—उसने कहा।

—वहा किसी ने मेरे बारे मे पूछा तो नही था ?

—नही किसी को नही मालूम कि तुम यहाँ हो—उसन कहा। वह कुछ देर तक आखें मूदकर लेटी रही। उसके बाल पहले भी छोटे थे तकिये पर सटे रहने के कारण अब वे और भी सिमट आए थे। पिछली गर्मियो मे उसने उन्ह काले शेड मे रँगा लिया था—सिफ उस खुश करने के लिए। उसे ज्यादा अच्छे नही लगे थे। तब वे फिर धीरे धीरे भूरे हो चले थे, हालाकि अब भी कही बीच बीच मे काला शेड दिखाई दे जाता था।

—तुम्ह थकान लग रही है ?—उसने उसका हाथ अपने हाथ म ले लिया।—नही। उसने उसकी ओर देखा। फिर उसने उसका हाथ चादर के नीचे घसीट लिया। धीरे धीर वह उसे अपने पट पर ले गई।

—कुछ फक लगता है ?—उसने पूछा। उसका हाथ उसके नगे गरम पेट पर पडा रहा।

—तुम्ह कोई तकलीफ तो नही है ?

—नही—वह धीरे से हँस पडी—अब मुझे बडा हलका सा लग रहा है। अब यहा कुछ भी नही है—उसने उसकी ओर देखा उसके होठो की रूखी लिपस्टिक रोशनी मे चमक रही थी। उसने धीरे से

अपना हाथ बाहर खींच लिया ।

—तुम्हें ज्यादा नहीं बोलना चाहिए—उसने कहा ।

—मुझे बड़ा हलका सा लग रहा है—उसने कहा ।

—डॉक्टर ने तुमसे कुछ कहा था ?

—नहीं लेकिन एक महीना पहले आ जाती, तो इतनी कमजोरी नहीं होती ।

—तुम्हें काफी कमजोरी महसूस हो रही है ?—उसने पूछा ।

—नहीं, मुझे बड़ा हलका सा लग रहा है ।

—मैंने तुमसे पहले भी जल्दी आने के लिए कहा था लेकिन तुम टालती रही ।

—तुम हर बात पहले से ही ठीक कहते हो—उसने कहा ।

वह चुप रहा और दूसरी ओर देखने लगा ।

—तुमने बुरा मान लिया ?—वह कुहनी के सहारे बैठकर उसकी ओर देखने लगी ।

—नहीं लेकिन तुम्हें ज्यादा नहीं बोलना चाहिए—उसने उसके बालों को सहलाते हुए कहा ।

—देखो अब कोई फिक्र नहीं है—उसने कहा—अब मैं ठीक हूँ ।

—लेकिन तुम अब भी उसके बारे मे सोचती हो—उसने कहा ।

—मैं किसी के बारे मे नहीं सोचती—उसने कहा । फिर उसने उसके कोट के बटन खोल दिए ।

—तुमने स्वेटर नहीं पहना ?—उसने पूछा ।

—आज ज्यादा सर्दी नहीं थी—उसने कहा । वे कुछ देर तक चुप रहे । बीच मे नर्स आई थी । वह ब्लौंड थी और देखने मे काफी खुश-मिजाज सी जान पड़ती थी । उसने उन दोनों को देखा, फिर वह बिस्तर के पास चली आई ।

—तुम्हें अभी इस तरह नहीं बैठना चाहिए—नर्स ने उसका सिर तकिये पर टिका दिया । फिर उसने एक नजर उसकी ओर देखा ।

—इन पर ज्यादा स्ट्रेन डालना ठीक नही होगा।

—मैं कुछ देर मे चला जाऊँगा—उसने कहा।

नर्स ने बिस्तर पर बिखरी चीजो को देखा। वह उसकी ओर मुडी और मुस्करा दी—आपको भविष्य मे सावधान रहना चाहिए—उसने कहा। उसके स्वर म हलका सा मजाक था। वह चुप रहा और दूसरी ओर देखने लगा। जाते हुए वह ठहर गई।

—तुम्हारे पास रुई काफी है ?—उसने पूछा।

—हाँ धन्यवाद सिस्टर—उसने कहा। नर्स बाहर चली गई।

—तुम जरा दूसरी तरफ मुड जाओ—उसने धीरे से कहा। वह तकिये के नीचे म कुछ निकाल रही थी।

—मैं बाहर चला जाता हूँ—उसने कहा।

—नही, इसकी कोई जरूरत नही। सिर्फ अपना सिर मोड लो।

वह पीछे दीवार की ओर देखने लगा। उसे बहुत पहले की रातें याद हो आई, जब वह उसके कमरे मे बिस्तर से उठकर कपडे पहनती थी और वह दीवार की ओर मुँह मोडकर उसके स्कर्ट की सरसराहट सुनता रहता था।—बस ठीक है—उसने कहा।

उसने स्टूल मोडकर उसके सिरहाने के पास खिसका दिया। हवा मे हल्की सी गन्ध थी जो क्लोरोफार्म की गन्ध से अलग जान पडती थी। उसकी आखें अनायास पलग के नीचे चिलमची पर पड गई उसमे खून मे रगी बहुत सी पट्टियाँ पडी थी। यह खून उसका हो सकता है उसे विश्वास नही हो सका।

—क्या तुम्हें अब भी वह बीच मे रुक गया।

—नही अब बहुत कम आ रहा है।

उसने झुककर चिलमची को पलग के पीछे खिसका दिया।

—तुम्हारे पास सिगरेट है ?—उसने पूछा। वह फिर लेट गई।

उसने लीना की डिब्बी से दो सिगरटें निकालकर मुँह मे रख ली। दोनो को दियासलाई से जलाया और उनमे से एक उसे दे दी।

—तुम यहाँ सिगरेट पी सकती हो ?

—नही लेकिन कोई देखता नही—उसने एक लम्बा, गहरा कश लिया। धुआ बाहर निकलते समय उसके नथुने धीरे से काप रहे थे। फिर उसने उसे चिलमची मे फेंक दिया।

—म पी नही सकती—एक पतली कमजोर सी मुसकराहट उसके होठो पर सिमट आई। उसने चिलमची से सिगरेट निकालकर बुझा दी। सिगरेट के एक सिरे पर उसकी लिपस्टिक का निशान जमा रह गया था।

—तुम अब एक पनीर लोगी ?

—नही तुम्ह अब जाना चाहिये।

—म चला जाऊँगा, अभी समय है।

उसन अपनी आखें मूँद ली थी। लम्बी, भूरी पलकें उसक पीले चेहरे पर मोम की गुडिया की पलको सी दिखाई दे रही थी।

—तुम्हें क्या नीद आ रही है ?—उसने धीमे स्वर म पूछा।

—नही उसन आखें खोल दी। उसका हाथ अपने हाथ मे लेकर वह उसे धीरे धीरे मसलन लगी।

—मैंन सोचा था, तुम आओगे—उसने कहा।

वह चुपचाप उसे देखता रहा।

—सुनो अब हम पहले की तरह रह सकेंगे—उसके स्वर मे हलका-सा विस्मय था।

—तुम्हें याद है उसने उसका हाथ दबाकर कहा—पिछली गमिया मे हम इटली जाना चाहते थे अब हम वहा जा सकते हैं।

—अब हम कही भी जा सक्ते हैं—उसने उसको प्रार देखा—अब कोई झंझट नही है।

उसे फिर उसका स्वर कुछ अजीब सा लगा, लेकिन वह मुसकरा रही थी और तब उसका मन फिर आश्वस्त हो गया।

कारीडोर मे ह्वील-चेयर के पहियो की चरमराहट सुनाई दी थी पास के क्यूबिकल मे कोई ऊँचे स्वर मे चीख रहा था। किसी स्त्री ने

खड़ी रही। मैटर्निटी वार्ड से किसी बच्चे के रिरियाने की आवाज़ सुनाई दी थी फिर सब खामोश हो गया।

वह चुपचाप बिस्तर के पास चली आई। अपने सूटकेस से एक पुराना तौलिया निकाला। फिर उसमें करीने से उन सब चीज़ों को लपेटा, जो वह उसके लिए छोड़ गया था। खिड़की के पास आकर उसने उन्हें बाहर अँधेरे में फेंक दिया।

जब वह वापस अपने बिस्तर के पास आई, तो उसका सिर चकराने लगा। स्टूल पर लीपा का पकेट अब भी पड़ा था। उसने एक सिगरेट सुलगाई, लेकिन उसे उसका स्वाद फिर अजीब सा लगा। उसे फर्श पर बुझाकर वह पलंग पर लेट गई। एक छोटा सा गरम आँसू उसकी आँखों की कोरों से बहता हुआ उसके बालों में खो गया, किन्तु पता नहीं चला। वह आराम से सो रही थी।

